Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

ओ३म्

पाक्षिक

परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५४ अंक - १४ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र जुलाई (द्वितीय) २०१३

आर्यवीरांगना दल शिविर ०६ जून से १३ जून २०१३
ऋषि उद्यान, अजमेर

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

आर्यवीरांगना दल शिविर, ०६ जून से १३ जून २०१३ (ऋषि उद्यान, अजमेर)

परोपकारी आषाढ़ शुक्ल २०७०। जुलाई (द्वितीय) २०१३ २

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

ओ३म्

विद्याविलाससमनसो धृतशीलशिक्षाः,
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

जुलाई द्वितीय २०१३

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५४ **अंक** : १४
दयानन्दाब्द: १८९
विक्रम संवत्: आषाढ़ शुक्ल, २०७०
कलि संवत्: ५११४
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११४

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

अनुक्रम

१. उत्तराखण्ड आपदा और हमारी........	सम्पादकीय	०४
२. स्वतन्त्रता को पहचानें	स्वामी विष्वङ्	०७
३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	०८
४. योग-साधना शिविर.......................	ब्र. रविशंकर	१२
५. शिविरार्थियों के अनुभव		१३
६. हैदराबाद आर्य सत्याग्रह : कुछ	डॉ. कपिलदेव	१४
७. क्रान्तिकार, स्वाधीनता सैनिक..........	डॉ. कुशलदेव	२१
८. प्रेम-एक अनुभूति	सुकामा आर्या	२६
९. पं. आत्माराम विश्वनाथ: मॉरिशस.....	प्रहलाद	२९
१०. संस्कृतम्	ब्र. कश्यप	३४
११. पुस्तक-परिचय	देवमुनि	३८
१२. संस्था-समाचार		३९
१३. आर्यजगत् के समाचार		४१

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com
- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

उत्तराखण्ड आपदा और हमारी भूमिका

उत्तराखण्ड के विनाश ने देश की संवेदन शून्यता को भी प्रकाशित कर दिया। आश्चर्य की बात है इतनी बड़ी विनाश लीला देश को अनुभूति में नहीं पिरो सकी। दुर्घटना जितनी भयावह थी उसके प्रति भले ही हमें विदेशी सहायता की आवश्यकता न हो परन्तु अनुकूल सहानुभूति और सहयोग की कमी अनुभव की जा सकती है। इस आपदा के समय यदि सेना की भूमिका को निकाल दिया जाए तो सारा प्रबन्धन घोर निराशा को उत्पन्न करने वाला है। प्रथम दुर्घटना घटते ही जो परिस्थिति उत्तराखण्ड सरकार की रही वह किंकर्त्तव्य–विमूढ़ता की थी। स्थिति समय के साथ बदली भी तो भी पीड़ितों की सहायता की न होकर, राजनीतिक हानि–लाभ की रही। सहयोग जो बाढ़–पीड़ितों के लिए प्राप्त हो रहा था, उसे इस दृष्टि से देखा जाने लगा कि इसके लेने में विपक्षी पार्टी को कोई लाभ तो नहीं हो जायेगा। विपक्ष से जुड़े संगठनों का सहायता कार्य करने में घोर असहयोग दिखाई दिया। इससे बड़ी अनैतिक बात क्या हो सकती है कि गुजरात के मुख्यमन्त्री नरेन्द्र मोदी का हैलिकॉप्टर को केदारनाथ में यह कहकर उतरने नहीं दिया कि विशिष्ट पुरुषों के आने से सहायता कार्य में बाधा होती है। इसके विपरीत राहुल गाँधी, सोनिया गाँधी के सुपुत्र हैं इसलिए सहायता कार्य रोककर भी राजनीतिक लाभ के लिए पीड़ितों से मिले। सरकारी स्थानों में निवास करने, आपदा प्रबन्धन के कार्य में लगे कर्मचारियों को राहुल गाँधी की सेवा में लगा दिया। पत्रकारों द्वारा पक्षपात का कारण पूछे जाने पर गृहमन्त्री से उत्तर नहीं बन पड़ा। पार्टी की ओर से सफाई दी गई कि राहुल गाँधी तो सामान्य व्यक्ति की तरह वहाँ गये थे। यह हास्यास्पद उत्तर है।

इस देश में बिहार के मुख्यमन्त्री नीतिश कुमार की मूर्खता ने देश की जनता और साधनों को साम्प्रदायिक, असाम्प्रदायिक कहकर बांटने का कार्य किया है। आज साम्प्रदायिक का अर्थ है हिन्दु की बात करने वाला तथा असाम्प्रदायिक वह है जो मुसलमानों के हित की बात करने वाला है। मुसलमानों के साथ छोटी सी दुर्घटना पर सरकारी कार्यवाही होती है तथा धर्म–निरपेक्ष शक्तियाँ बिना कारण सहानुभूति जताने के लिए इकट्ठी हो जाती हैं परन्तु उनका वह उत्साह इस आपदा में दिखाई नहीं दिया। किसी ने भी ये तो नहीं कहा कि यह विपत्ति साम्प्रदायिक लोगों पर पड़ी है, परन्तु जितनी शीघ्रता से चर्च, मस्जिद के पुनर्निर्माण की घोषणाएँ की जाती हैं उस प्रकार की घोषणा तो नहीं की गई। परन्तु संचार माध्यमों की चर्चा में जब यह बात आयी कि नरेन्द्र मोदी ने सात हजार करोड़ की लागत से केदारनाथ धाम का पुनर्निर्माण करने का प्रस्ताव किया तो उसको अस्वीकार तो कर दिया गया तथा स्वयं की ओर से निर्माण की कोई घोषणा या प्रस्ताव नहीं दिया गया। यह राष्ट्र विरोधी और जनविरोधी भावना है। सरकार ने विपत्ति को कम दिखाकर अपनी अकर्मण्यता उचित ठहराने का प्रयास किया। विभीषिका को उससे अधिक दिखाना समाज में भय बढ़ा सकता है, परन्तु कम दिखाकर अपने उत्तरदायित्व से विमुख होना उचित नहीं कहा जा सकता।

हमारा संकट के प्रति पुराना घिसा–पिटा दृष्टिकोण है, बाढग्रस्त, भूकम्पग्रस्त, अकालग्रस्त क्षेत्र का हमारे नेता हवाई दौरा करते हैं। हवाई जहाज में बैठकर आकाश से नीचे दृष्टि क्या डाली मानो उनकी कृपा की वर्षा उनकी दृष्टि से ही हो गई, फिर कुछ करना शेष नहीं रहता। इतनी बड़ी दुर्घटना अवश्य पहली बार हुई होगी, परन्तु दुर्घटनाएँ हिमालय क्षेत्र में प्रतिवर्ष होती हैं। कभी बादल फटने से एक–दो गाँव बह जाते हैं तो कभी पहाड़ों के खिसकने से दो–चार सौ लोग मर जाते हैं और समाचार–पत्रों में घटना प्रकाशित हो जाती है। जिन की जन–धन की हानि हुई वे अपना भाग्य मानकर आगे चलने के लिए विवश होते हैं। ऐसा क्यों नहीं होता कि पर्वतों में भूस्खलन के कारणों पर विचार करके उनको रोकने के लिए प्रयास किये जायें। इसका एक सामान्य होते रहने वाली बात मानकर क्यों उपेक्षा की जाती है। इस पर विचार करने की आवश्यकता इसलिए नहीं पड़ती क्योंकि जिस प्रकार की व्यवस्था को हमने स्वीकार किया है उसमें इस बात पर विचार करने का अवसर नहीं आता। हम इस कारण पर विचार करें तो अनुभव करते हैं कि हमारे सामने व्यक्तिगत हित मुख्य है और सामाजिक और राष्ट्रीय सन्दर्भ गौण हो गये हैं। इसलिए इस पर विचार का अवसर नहीं आता।

यह एक सर्वमान्य बात हो गई है कोई भी कार्य करने में व्यक्तिगत लाभ मुख्य माना जाता है। हिमालय के पहाड़ी क्षेत्र में निर्माण के कार्य का प्रारम्भ १९६२ के युद्ध के पश्चात् प्रारम्भ हुआ है। जब चीन ने भारत पर आक्रमण कर दिया तब सेना और सैनिक साधनों को युद्ध क्षेत्र तक पहुँचाने के लिए मार्ग ही नहीं था। जिसके कारण हमें अपना बहुत बड़ा भूभाग गंवाना पड़ा और चीन के हाथों अपमानित भी होना पड़ा। चीन के युद्ध के पश्चात् पर्वतीय क्षेत्रों में आवागमन तीव्रता से बढने लगा। इसके बाद देश में विकास की विचारधारा ने जोर पकड़ा तो खनन, विद्युत परियोजना, वन सम्पत्ति का व्यापार प्रारम्भ हुआ जिसके कारण पर्वतीय क्षेत्रों का दोहन बड़ी मात्रा में होने लगा। खनन में विभिन्न स्थानों से चूने का पत्थर, भवन निर्माण के लिए पत्थर, मिट्टी आदि का खनन, वृक्षों की कटाई, औषधीय

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

और व्यापारिक वनस्पतियों के लिए वनों की कटाई जिस तीव्रता से होने लगी उसके कारण जो पर्वत इन वस्तुओं के लिए सम्पत्तिशाली समझे जाते थे उन्हीं वस्तुओं के लिए वे दरिद्र हो गये हैं। जो जड़ी-बुटियाँ हरिद्वार के आसपास मिल जाती थी उन्हें जड़ से उखाड़े जाने के कारण हिमालय के गहन वन क्षेत्र में खोजना पड़ता है। मनुष्य के आवागमन से वन्य प्राणियों की अनेक प्रजातियाँ समाप्ति की ओर हैं। खनन के कारण जहाँ वनों की समाप्ति हो रही है वहीं जलस्रोत भी मिटते जा रहे हैं। देहरादून, मसूरी क्षेत्र में पहाड़ों की खुदाई से जलस्रोत मिट गये हैं, पहाड़ों में विस्फोटक लगाने से पर्वतों में उठे कम्पन्न से जलमार्ग लुप्त हो जाते हैं यह मार्ग को परिवर्तित कर देते हैं। खनन की मिट्टी इधर-उधर फैलने से नदी मार्गों में अवरोध उत्पन्न कर देती है, इससे उनकी जल प्रवहण घट जाती है, उथलापन आकर वहाँ पर गिरा जल तेजी से बह जाता है। इस तरह पानी के साथ प्रवाहित होने वाली मिट्टी आगे जाकर जलाशयों में एकत्रित होकर उनकी संग्रहण क्षमता को कम कर देती है। इन पर्वतीय क्षेत्रों की विद्युत परियोजनाओं ने हिमालय को आपदाओं का आलय बना दिया है। विकास चाहिए तो ऊर्जा के स्रोत बढ़ाइये। अन्य क्षेत्रों में तो नदियों का अभाव है, अत: जलविद्युत् परियोजनाओं के स्थान पर ताप विद्युत् का उत्पादन किया जाता है, परन्तु हिमालय में जल स्रोतों की प्रचुरता है तथा नदियों की यात्रा पर्वत शिखर से प्रारम्भ होती है तो पानी भारी दबाव से भी नीचे गिरता है। अत: विद्युत् उत्पादन अधिक मात्रा में संभव होता है। इसलिए पर्वतीय क्षेत्रों में दस-बीस किलोमीटर पर विद्युत् संयंत्रों को आप स्थापित देख सकते हैं। विद्युत् उत्पादन के लिए नदियों के पानी को बांध बनाकर तो प्रवाह को रोकते ही हैं, परन्तु उस पानी को विद्युत् उत्पादन संयंत्र में ले जाने के लिए सुरंग के माध्यम से नहर का निर्माण किया जाता है, जिससे पानी उनमें प्रवाहित होता है। इन सुरंगों की लम्बाई दो-चार किलोमीटर से लेकर तीस किलोमीटर तक होती है। सोचने की बात है कि तीस किलोमीटर लम्बी सुरंग खोदने से पर्वत की भौगोलिक संरचना में भारी परिवर्तन हो जाना स्वाभाविक है। इससे पर्वत के उपरि क्षेत्र की परिस्थिति में भारी परिवर्तन हो जाता है। उनकी मिट्टी ढ़ीली हो जाती है, ऊपर के जल भण्डार समाप्त हो जाते हैं। इस भारी विकास कार्य से अधिकांश पर्वतों की शिथिल मिट्टी कभी भी नीचे की ओर खिसकने लगती है।

इस विद्युत् निर्माण योजनाओं का एक और पक्ष भी है। जिसे समय-समय पर विशेषज्ञों में उजागर भी किया है। विद्युत् जहाँ राज्य के अपने विकास के लिए आवश्यक है वहीं दूसरे राज्यों को विद्युत् बेचने से राज्यों को आर्थिक लाभ भी होता है। इस लाभ में व्यक्तिगत लाभ की भूमिका बहुत बड़ी है। विशेषज्ञों का मानना है कि जल विद्युत् परियोजनाओं को स्वीकृति देने में पचास प्रतिशत तक लाभ का भाग घूस देने में जाता है, तथा उत्पादन संयंत्र के निर्माण को स्वीकृति देने में एक करोड़ रुपये प्रति मेगावाट मन्त्री लोगों को घूस देनी पड़ती है। एक आंकलन के अनुसार उत्तराखण्ड में चालीस हजार मेगावाट की विद्युत् उत्पादन क्षमता है तो कल्पना की जा सकती है कि इसके लिए घूस की राशि कितनी बड़ी होगी। ऐसी राशि के बदले कितने नियमों की पालना की जा सकती है, यह कोई बता सकता है।

हिमालय को हम देश का प्रहरी कहते हैं। उसके प्रहरीपन को चीन ने छीन लिया परन्तु देश के जीवन का बहुत बड़ा आघात तो यह पर्वत आज भी है। बड़ी मात्रा में प्राकृतिक सम्पदाओं का स्रोत हिमालय है। उत्तर भारत की प्रमुख नदियाँ हिमालय से ही निकलती हैं। हिमालय पर चीन इसीलिए अधिकार करना चाहता है, क्योंकि इस पर अधिकार करने से अकूत जलराशि पर उसका अधिकार हो जाता है। आज कैलाश मानसरोवर उसके अधिकार में है। जोकि भारत-बंग्लादेश की प्रमुख नदी ब्रह्मपुत्र का स्रोत है, इस प्रकार बहुत बड़े जल भण्डार का चीन स्वामी बन गया है। पाकिस्तान जाने वाली नदियों का भी उद्गम स्थान हिमालय में ही है। हिमालय ऊँचाई के कारण हमें बर्फ और पानी के रूप में नदियों में जल प्रवाह को अबाधित रूप से प्रवाहित होने देता है। वहाँ पर्वतों के बीच-बीच में वर्षा के कारण बड़े जलाशय बने हैं, जिनकी संख्या हजारों में है इनका पवित्र-जल वहाँ के जीव जगत् के लिए जीवन का आधार है, वहीं पर सारे पर्वतीय क्षेत्र में वनस्पतियों को जीवन प्रदान करता है। ये जलाशय मनुष्यों के बड़ी संख्या में आवागमन से दूषित होते हैं। विस्फोटों के कारण मिट्टी के भरने से क्षीण हो जाते हैं और समाप्त भी हो जाते हैं। विस्फोटों के कारण भूमि के फटने से पानी रिसकर सूख जाते हैं। इनके सुरक्षित रहने से बादल फटने से होने वाली हानि की संभावना कम हो जाती है। यदि ये जलाशय बादल फटने से आने वाले जल को संभालने की क्षमता नहीं रखते तो बाढ़ और भूस्खलन का प्रकोप अवश्यम्भावी है। इस प्रकार वनों का नाश, खनन का प्रकोप, बांध और बिजली संयंत्रों का संकट ये सब तो हिमालय को आपदालय बनाने का कारण हैं ही इस सब के अतिरिक्त मुख्य और तात्कालिक कारण हिमालय का पर्यटन उद्योग का केन्द्र बन जाना है। आजकल मनुष्यों के पास यातायात के साधन और खर्च करने के लिए पर्याप्त धन है तो लोग अपनी यात्रा को सरल और सुविधा सम्पन्न बनाना चाहते हैं। उसके लिए बसें, कारें, हवाईजहाज सभी साधन मनुष्य उपयोग में लाकर अपनी यात्रा को बिना परिश्रम व बिना कष्ट की बनाना चाहता है। यात्रा के गन्तव्य पर पहुँचकर भी वह अपनी खाने, पीने, सोने, स्नान आदि की सारी व्यवस्था को अपने स्वभाव व सुविधा के अनुसार ही प्राप्त करना चाहता है। इसके लिए उसे धन खर्च करने की चिन्ता नहीं है। फिर साधनों को जुटाने में क्या आपत्ति है। इस व्यवस्था से वाहनों की भीड़, मनुष्यों की भीड़

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

से बड़ी हो जाती है। वाहनों से उत्पन्न होने वाला प्रदूषण वातावरण को निरन्तर विषैला बनाता रहता है। जिससे पर्वतीय स्वस्थ, शान्त वातावरण की कल्पना समाप्त हो जाती है। जहाँ तेल के जलने से वायु प्रदूषित होता है, वही वाहनों के शोर से ध्वनि प्रदूषण भी होता है। जिसका कुप्रभाव मनुष्यों से अधिक वहाँ के वन्य जीवन पर पड़ता है। इसके अतिरिक्त मनुष्यों के द्वारा फैलाई जाने वाली गन्दगी और कचरे के ढेर, पहाड़ों और महानगरों के जीवन के अन्तर को समाप्त कर देते हैं। ये कचरे के ढेर, दूसरे पर्वत का आकार लेते हैं। ये जहाँ जल व भूमि का प्रदूषित करते हैं, वहीं नदियों में रुकावट उत्पन्न कर, बाढ़ लाने के कारण भी बनते हैं। पहले तीर्थ यात्रा धार्मिक कारणों से होती थी। तपस्या आत्मचिन्तन आदि के लिए संसार से विरक्त होकर शान्ति पाने के लिए व्यक्ति इन स्थानों पर जाता था। आज मनोरञ्जन और दर्शनों से मुक्ति पाने, पाप क्षमा करने जैसे अन्धविश्वासों और पाखण्डों के चलते मनुष्य तीर्थ यात्रा करता है। गत वर्षों में किसी ने फैला दिया कि गोमुख में स्नान कर नये कपड़े पहनने से सभी दु:ख दूर हो जाते हैं। बस फिर क्या था हजारों की संख्या में लोग गोमुख जाकर स्नान कर नये कपड़े पहनते और पुराने कपड़े उतारकर वहीं फैंक देते। देखते ही देखते कपड़ों का ही पहाड़ बनने लगा जिसे एक महात्मा जी ने उसे हटाने का संकल्प किया और उन्हें इस कार्य में बहुत परिश्रम करना पड़ा। परन्तु सभी स्थानों पर कचरे के निस्तारण की व्यवस्था नहीं होती। उसके दुष्परिणाम से रोग और दु:ख तो होगा ही। इस यात्रा में मुख्य सहयोगी दुकान और होटल हैं जिनके बनाने, चलाने का मुख्य आधार व्यक्तिगत लाभ होता है। लोग अपने बड़े-बड़े भवन और होटल नदी के बीच में बनाना चाहते हैं, जिससे यात्रियों से अधिक से अधिक पैसे लूट सकें। बीच में नहीं तो किनारे सही। नदी का पाट संकरा होता जाता है। होटलों और दुकानों का कचरा व गन्दगी नदी में गिरता है। इससे जल तो प्रदूषित होता ही है। नदी के प्रवाह में भी बाधा पड़ती है। परन्तु इसकी न प्रशासन को परवाह है न भवन निर्माता को, फिर ग्राहक को तो इसकी चिन्ता क्यों होने लगी। इसका परिणाम तो मनुष्य को भोगना ही पड़ेगा। ये सभी कारण ऐसे तो हैं नहीं जिनको हम जानते न हों। इनका समावेश न तो विशेषज्ञों की दृष्टि में न ही प्रशासन की व्यवस्था में, इन सब समस्याओं का मूल कारण है हमारी विचारधारा का प्रदूषित हो जाना। हम विचारों से बेईमान हो गये हैं। अत: हम व्यवहार से भी उतने ही गिर गये हैं। उत्तराखण्ड की आपदा व उसके कारण भी बेईमानी पर आधारित हैं। उसके बाद का आचरण भी बेईमानी भरा है। जो भी काम है, रिश्वत से करा सकते हैं, करने वाला भी उसे उचित मानता है और उसे कराने वाला भी उचित मानता है। फिर तो ऐसी दुर्घटनाओं को कोई रोक नहीं सकता। प्रकृति ने हमें दण्डित किया, हमारे अपराध के लिए हमें चेतने की आवश्यकता है।

जिन लोगों के परिजन बिछुड़ गये उनके स्थायी दु:खों का निराकरण तो हम नहीं कर सकते परन्तु उन्हें चिकित्सा सुविधा, आर्थिक सहयोग, मार्गदर्शन देकर उनकी सहायता कर सकते हैं। यह दिखावा करने या फोटो खिचाने का कार्यक्रम करने से समाप्त नहीं होगा। हिमालय में जो धार्मिक और महत्वपूर्ण स्थान नष्ट हो गये उनका पुनरुद्धार भव्य रूप में होना चाहिए तथा भविष्य में ऐसी दुर्घटना फिर न हो इसके लिए मनुष्य द्वारा जो उपाय संभव है, उन्हें शीघ्रता से अवश्य किया जाना चाहिए, बिना पक्षपात व बिना दुर्भावना के। जिससे फिर हिमालय में प्रकृति के सम्मुख खड़े होकर कालिदास के शब्दों में कह सकें हमारा हिमालय, हमारे लिए देवतात्मा है-

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा।
हिमालयो नाम नगाधिराज:।।

हमारे उत्तर में पर्वतराज हिमालय देवता स्वरूप है।

-धर्मवीर

उत्तराखण्ड बाढ़ पीड़ित सहायतार्थ दानदाता

१. मदनलाल भीचर, सराना-५००/-, २. किशनसिंह मेहर, अजमेर-५००/-, ३. डॉ. वृद्धिशङ्कर उपाध्याय, प्रतापगढ़-५०००/-, ४. आचार्य सोमदेव, अजमेर-१००००/-, ५. मुनिकृष्ण देव, रोजड़, गुजरात-५००/-, ६. बालेश्वर मुनि व शान्ता बत्रा, अजमेर-२०००/-, ७. स्वामी देवेन्द्रानन्द, अजमेर-२१००, ८. माता मेहता, अजमेर-५००/-, ९. विजयसिंह गेहलोत, अजमेर-४०००/-, १०. मूर्तिदेवी, नई दिल्ली-१००००/-, ११. आर्यसमाज विजय नगर, अजमेर-१५०००/-, १२. एन.एल. साहु, सिहोर, म.प्र.-११००/-, १३. अनुपम आर्य, अजमेर-२०००/-, १४. विश्वास पारीक, अजमेर-२१००/-, १५. सरोज शर्मा, अजमेर-२५०/-, १६. मोक्ष व ममता मेतानी, गुड़गाँव-३१००/-, १७. आर्यसमाज सुशान्त लोक, गुड़गाँव-२१००/-, १८. आयुषी आर्या, अजमेर-२००/-, १९. सुभाषचंद नवाल, किशनगढ़-२१०००/-, २०. डॉ. अर्जुनदेव तनेजा, नई दिल्ली-३१००/-, २१. आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, म.प्र.-२१०००/-, २२. डॉ. सत्यदेव सिंह, मथुरा-५०००/-, २३. बृजलाल आर्य, नई दिल्ली-१००००/-, २४. सन्जू राजीव कुमार, नई दिल्ली-१००००/-, २५. प्रणव आर्य, गुड़गाँव-१००००/-।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

स्वतन्त्रता को पहचानें

-स्वामी विष्वङ्

आध्यात्मिक मार्ग को अपनाकर चलने वाले साधकों ने आध्यात्मिक मार्ग को यूँ ही नहीं अपनाया होता है। आध्यात्मिक मार्ग को अपनाने के लिए उन्होंने भौतिकता को-भौतिक सुख-साधनों को त्याग किया होता है, घर छोड़ा होता है। व्यापार, नौकरी आदि को छोड़ा होता है, सांसारिक सम्बन्धों को त्यागा होता है। पर्वतों, जंगलों, आश्रमों, गुरुकुलों में निवास करते हुए तपस्या की होती है। उन-उन कार्यों को किया होता है, जो-जो ईश्वर के निकट ले जाने वाले होते हैं।

वर्तमान में भी उनके वैसे ही तप, स्वाध्याय, ध्यान, उपासना, यज्ञ आदि सभी पवित्र कार्य चल रहे हैं और वे भविष्य में भी किये जायेंगे। साधक को स्वयं को भी प्रतीत होता है कि हाँ मैं ठीक दिशा की ओर अग्रसर हो रहा हूँ। परन्तु फिर भी किसी विषय-वस्तु के उपस्थित होने पर राग, द्वेष, ईर्ष्या, असूया, अभिमान, चुगली, निन्दा आदि शत्रु मन में आ जाते हैं, जिनके कारण वर्षों से, महीनों से, दिनों-दिनों से किया हुआ पुरुषार्थ व्यर्थ सा हो जाता है, और फिर उठ खड़ा होने के लिए जहाँ से प्रारम्भ किया, वहाँ से चलना पड़ता है। इस प्रकार उठना और गिरना चलता रहता है, जिससे साधक जिस गति से आगे बढ़ना चाहता है, उस गति से बढ़ नहीं पाता है। ऐसे में निरन्तर आगे बढ़ने के लिए साधक क्या करे?

साधक जहाँ अन्य विषयों को जानने के लिए पुरुषार्थ करता है, वहाँ स्वयं (आत्मा) को जानने के लिए भी पुरुषार्थ करे। आत्मा को जानने के लिए आत्मा की विशेषताओं को जानना पड़ता है। आत्मा में अनेकों विशेषताएँ हैं। उन विशेषताओं में से यहाँ एक विशेषता को लेकर विचार किया जा रहा है, और वह विशेषता है आत्मा की स्वतन्त्रता।

आत्मा स्वतन्त्र है अर्थात् कर्म करने या न करने में स्वतन्त्र है। किसी के अनुकूल चलने या न चलने में स्वतन्त्र है। स्वीकार करने या न करने में स्वतन्त्र है आदि-आदि। कोई भी साधक यह जानने में समर्थ होता है कि प्रत्येक आत्मा स्वतन्त्र है और दूसरे की स्वतन्त्रता को मैं छीन नहीं सकता आदि-आदि। ऐसी परिस्थिति में जब साधक साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ता हुआ जिस किसी से भी व्यवहार करता है, तो यह मानकर-जानकर करता है कि सामने वाला व्यक्ति स्वतन्त्र है और वह अपनी स्वतन्त्रता से उचित भी कर सकता है और अनुचित भी कर सकता है। तब उसे कष्ट, पीड़ा, दु:ख, क्षोभ, ईर्ष्या, द्वेष आदि नहीं होते हैं। ऐसी परिस्थिति में साधक संभल कर चलता है, अपने पुरुषार्थ को व्यर्थ होने नहीं देता है। साधना के क्षेत्र में निर्बाध आगे बढ़ता चला जाता है। उसकी आगे बढ़ने की गति रुकती नहीं है और रफ्तार बढ़ती ही जाती है। यहाँ पर रफ्तार बढ़ती ही जाती है का अभिप्राय यह नहीं समझना चाहिए कि वह कभी रुकेगा भी नहीं। रुक सकता है। क्यों? क्योंकि रुकने के बहुत सारे संस्कार मन में हैं, वे संस्कार साधक को आगे बढ़ने से रोकते रहते हैं।

साधक ने अन्यों की स्वतन्त्रता को समझा और आगे बढ़ने के लिए उपायों को भी अपनाया और आगे भी बढ़ रहा है। परन्तु मन में अगणित संस्कार हैं और वे संस्कार साधक को आगे बढ़ने से रोकते हैं। जब-जब संस्कार आगे बढ़ने से रोक लगाते है, तब-तब साधक को अन्यों की स्वतन्त्रता को अपने समक्ष लाना चाहिए, पूर्व में अर्जित संस्कारों से प्रेरित हो कर ईर्ष्या, द्वेष, अभिमान आदि होने लगें तो अन्यों की स्वतन्त्रता को अपने समक्ष रख कर विचार करना चाहिए कि मैं जिन पर द्वेषादि कर रहा हूँ क्यों कर रहा हूँ? क्योंकि वे गलत कर रहे हैं, उनको ऐसा नहीं करना चाहिए आदि-आदि। कारण हैं इसलिए मैं उन पर क्रोधादि कर रहा हूँ, मैं कोई गलत काम तो नहीं कर रहा हूँ। यदि ऐसा है, तो मैं उनकी स्वतन्त्रता को रोकना चाहता हूँ, जिससे वे गलत काम न कर सकें, तभी तो मुझे क्रोधादि आ रहा है, अर्थात् मैं दूसरों की स्वतन्त्रता को पूर्णत: रोकना चाहता हूँ, तो क्या ऐसा मैं पूर्णत: कर सकता हूँ? नहीं, क्यों? भला मैं कैसे दूसरों की स्वतन्त्रता को पूर्णत: रोक सकता हूँ, फिर क्यों पूर्णत: रोक रहा हूँ? यह तो मेरी मूर्खता-अविद्या है, मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए आदि-आदि

जब-जब साधक के मन में अन्यों पर ईर्ष्या, द्वेषादि उत्पन्न होने लगें तब-तब साधक अन्यों की स्वतन्त्रता को सामने लाये, जिससे ईर्ष्या, द्वेषादि उत्पन्न ही न हों। इसके लिए साधक को निरन्तर अभ्यास करना चाहिए। क्योंकि केवल सोचन-समझने मात्र से ईर्ष्या, द्वेषादि नहीं रुकते हैं। ऐसा तब तक साधक को करना चाहिए जब तक विवेक, वैराग्य न हो जाये। इसलिए साधक साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहता है, तो जिस प्रकार अन्य उपायों को निरन्तर अपनाता है, उसी प्रकार स्वतन्त्रता रूपी उपाय को भी निरन्तर अपनाना चाहिये। जिससे साधक व्यवहार-काल में जागरुक होकर व्यवहार करने में समर्थ होगा और ईर्ष्या, द्वेषादि उत्पन्न ही नहीं होंगे। जिससे वर्षों, महीनों, दिनों-दिनों की साधना व्यर्थ नहीं होगी। यही साधक की साधना की सफलता है।

-ऋषि उद्यान, अजमेर।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

कुछ तड़प-कुछ झड़प

-राजेन्द्र जिज्ञासु

ईश्वरीय ज्ञान का ईश्वरीय नियम-वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है तथा ईश्वरीय ज्ञान की आवश्यकता विषय पर महर्षि दयानन्द तथा उनकी शिष्य परम्परा के विद्वानों ने समय-समय पर बहुत कुछ लिखा है। पुराने आर्य विद्वानों का यह एक प्रिय व मुख्य विषय रहा है। महर्षि दयानन्द जी महाराज के पश्चात् जिन विद्वानों ने इस विषय पर अत्यन्त मौलिक चिन्तन करके लिखा उनमें से तीन प्रमुख विचारक थे-श्री पं. लेखराम जी, श्री स्वामी दर्शनानन्द जी तथा श्री पं. चमूपति जी। दुर्भाग्य से अब आर्यसमाज के आधुनिक वक्ता, प्रवक्ता व लेखक इन तीनों विचारकों के साहित्य में डुबकी नहीं लगाते। और भी कई विद्वानों ने इस विषय पर पठनीय लेख व पुस्तकें लिखीं। मेहता जैमिनि जी, आचार्य रामदेव जी, डॉ. बालकृष्ण जी, महात्मा नारायण स्वामी जी, स्वामी वेदानन्द जी आदि ऐसे सब विद्वान् हमारे लिए अविस्मरणीय हैं। श्री डॉ. वेदपाल जी का चिन्तन भी इस विषय में प्रशंसा योग्य है।

श्री स्वामी दर्शनानन्द जी की निर्वाण शताब्दी पर उनकी एक मौलिक युक्ति यहाँ देते हैं। मनुष्य सृष्टि का नियम है आवश्यकता आविष्कार की जननी है। पश्चिम में गोरे विचारक भी यही कहते हैं Necessity is the mother of invention. मनुष्य को काँटा चुभता है तो जूता बनता है। कोई नया रोग आता है तो नई औषधी खोजता है परन्तु परमात्मा आवश्यकता से पूर्व आविष्कार कर देता है। सर्वज्ञ प्रभु जीवों की सब मूल आवश्यकताओं को जानता है अत: वह आविष्कार पहले करता है, आवश्यकता बाद में होती है यथा आँख से पहले सूर्य बना दिया। प्यासों की प्यास से पहले जल, आवास, निवास से पहले लोक-लोकान्तर, भूख से पहले अन्न वनस्पतियाँ उगा दीं। वायु पहले बनी, श्वास लेने वाले बाद में जन्मे। इसी प्रकार बुद्धि और जिज्ञासा वाले मनुष्यों की आवश्यकता का ध्यान करके सर्वज्ञ प्रभु ने सृष्टि के आदि में अपना अनादि ज्ञान वेद दिया। अब आधुनिक वक्ता व लेखक स्वयं विचारें कि इस बेजोड़ तर्क का कितना लाभ उठाया व पहुँचाया गया है? स्वामी दर्शनानन्द जी इसके साथ एक पूरक तर्क और भी देते हैं। परमात्मा समय बीतने के साथ नये-नये सूर्य नहीं बनाता। योनियों के नये-नये आकार प्रकार (Design) नहीं गढ़े जाते। बन्दर, गाय, घोड़ा, तोता, मयूर सब जैसे पहले पैदा होते थे, वैसे ही आज जन्म पाते हैं। सृष्टि के सभी नियम वहीं हैं और वैसे के वैसे हैं आदि सृष्टि में थे।

इसी प्रकार प्रभु प्रदत्त वेद ज्ञान के पश्चात् भी किसी नये ज्ञान के आविर्भाव का प्रश्न ही नहीं उठता। आओ! स्वामी दर्शनानन्द जन्म शताब्दी पर उनकी इस देन का जन-जन तक पहुँचाने का व्रत लें।

विकासवाद और ईश्वरीय ज्ञान-ईसाई, मुसलमान समय की गति के साथ विकासवाद की तोता रटन लगाते हुए ईश्वरीय ज्ञान के विकास की बातें बनाने लगे। आज कम्प्यूटर के युग में बैलगाड़ी नहीं चलती तो वेदज्ञान का क्या लाभ? ऐसे थोथे तर्क देकर नये-नये इलहामों की वकालत करते रहें। इसका प्रभाव हिन्दुओं पर ही पड़ा। ऋषि दयानन्द के नाम पर शिक्षा व्यापार चलाने वाले डी.ए.वी. के किसी भी बड़े प्रिंसिपल ने **'वेद ईश्वरीय वाणी है'** इस विषय पर कोई पुस्तिका व पुस्तक नहीं लिखी। किसी एक आध ने लेख लिखा तो वह अपवाद है अन्यथा आज तक मांसाहार के खण्डन व वेद ईश्वरीय वाणी के मण्डन पर डी.ए.वी. के तथा कथित शिक्षा शास्त्रियों, प्रधानों ने कभी कुछ नहीं लिखा।

इसके विपरीत आचार्य चमूपति जी तथा पं. लेखराम जी के साहित्य की गहरी छाप देखिये कि डॉ. गुलाम जेलानी जैसे लोकप्रिय इस्लामी लेखक ने खुलकर (पं. चमूपति जी के शब्दों में) यह लिखा है कि विकासवाद व ईश्वरीय ज्ञान यह परस्पर विरोधी मान्यताएँ हैं। ईश्वरीय ज्ञान तो अनादि और नित्य ही हो सकता है। जब विकासवाद को सत्य मान लिया तो फिर ईश्वरीय ज्ञान की क्या आवश्यकता? यह तर्क अपनी अनूठी शैली में आचार्य चमूपति जी ने ही दिया है। पं. चमूपति जी की देन का हमने मूल्याङ्कन ही नहीं किया।

दान घोटाला-धर्मघात-कुछ वर्ष पूर्व पंजाब सभा ने एक बड़े सम्मेलन में मेरा सम्मान किया। मैं जालन्धर से बठिण्डा स्कूल समाज की बस पर बठिण्डा लौट रहा था। मार्ग में आर्यसमाज की बातें होने लगीं तो बठिण्डा समाज के उस समय के प्रधान बाबू प्रेम भाटिया ने अपने जिला के समाज के विशाल मन्दिर में एक अंग्रेजी वाला स्कूल खुलवाने की योजना बड़े जोश से रखी। वह प्रधान कहाँ से और कैसे समाज में घुस गया, यह तो बठिण्डा वाले जानें। हम तो इतना जानते हैं कि पं. ज्ञानेन्द्र नागपुर जैसा सज्जन, सरल युवक पुरोहित उसके घर उसकी पत्नी का करवा चौथ का व्रत खुलवाने बुलवाया गया। ऐसे-ऐसे घुसपैठियों के कारण आर्यसमाज ज्ञानेन्द्र जैसे युवा चरित्रवान् विद्वान् को खो बैठा। वह प्रधान अब दिल्ली में है। न जाने किसी पन्थ की सेवा का यश उसे प्राप्त हो रहा है या नहीं?

आर्यसमाज के बड़ों ने वेदप्रचार परोपकार के लिये विशाल मन्दिरों का निर्माण किया। राधा स्वामी, निरंकारी आदि मत सड़कों के किनारे विशाल डेरे बना रहे। गुरुद्वारे गाँव दुर्ग बनते

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

जा रहे हैं। चर्च मस्जिदें देशभर में खड़ी हो रहीं। मुर्दा घर (मजारें) फिरोजपुर से लेकर मद्रास तक बसाये जा रहे हैं।

आर्यसमाज में घुसपैठिये आर्यमन्दिरों में स्कूल खुलवा कर कमाई करने के उपायों में लगे हैं। दान दे-दे कर बड़ों ने आर्यमन्दिर बनाये। क्या यह दान घोटाला व धर्मघात नहीं? दिल्ली में एक आर्यमन्दिर में स्कूल खोलने की योजना बनायी जा रही है। ऐसा विश्वस्त सूत्रों से पता चला है। अब आर्यमन्दिर तो व्यावहारिक रूप से पहले भ्रष्ट होगा फिर विध्वंस होगा। पंजाब में और देशभर में अनेक स्थानों पर पहले यही कुछ हो चुका है। दिल्ली में मन्दिर मार्ग में यज्ञ-हवन के समय यजमान नहीं मिलते। वहीं स्कूल में सैंकड़ों निकटाईधारी छात्र-छात्राएँ व टीचर आप देख सकते हैं। जहाँ-जहाँ स्कूल-कॉलेज खुले वहीं-वहीं समाजों का मरण हो गया। 'जहाँ-जहाँ सन्तन के पाँव वहीं-वहीं बण्टाधार' यह इतिहास का निचोड़ है, कटु सत्य है। मेरा यह दृढ़ मत है कि दिल्ली में आर्यसमाज का कोई कर्णधार इस पाप के विरोध में नहीं बोलेगा। रामपाल के विषैले प्रचार के विरुद्ध किसी स्कूल कॉलेज का प्रिंसिपल अब तक मुँह नहीं खोल सका। देशभर में आर्य धर्म तथा महर्षि दयानन्द के विरुद्ध बहुत कुछ लिखा व कहा जाता है। आज पर्यन्त एक भी प्रिंसिपल, प्राध्यापक, मैडम व डायरैक्टर, मैनेजर ने किसी का उत्तर देने का साहस न दिखाया। कारण यही है कि यह पेट सर्विस के लिए इन संस्थाओं में हैं। इन लोगों का वैदिक धर्म से कुछ भी लेना-देना नहीं। दु:खी मन से मैंने ये कठोर सत्य आज फिर धर्म-प्रेमियों के सामने रख दिया है। दुर्भाग्य ही कहिये कि गुरुकुलों के आचार्य, संन्यासी, महात्मा भी अब स्वामी आत्मानन्द जी, स्वामी वेदानन्द जी, महात्मा नारायण स्वामी जी, महाराज नित्यानन्द का मार्ग छोड़कर अपने स्मारक खड़े करने में लगे हैं। अपवाद तो अवश्य हैं परन्तु बहुतों का परम धर्म रसीद बुक है। यह चिन्ता का विषय है।

देश का दुखड़ा और महर्षि दयानन्द-महर्षि दयानन्द जी महाराज पर परोपकारी में 'कुछ तड़प-कुछ झड़प' की टिप्पणियों तथा पूज्य लक्ष्मण जी के ग्रन्थ को प्रकाशन पूर्व पढ़कर स्वाध्यायशील श्री जितेन्द्र कुमार जी वकील बठिण्डा ने अनेक बार हमें कहा है कि अब आर्यसमाज के लोग ऋषि जीवन की अति विशेष घटनाओं तथा अटल वैदिक सिद्धान्तों पर मौलिक खोज को High Light करने की तड़प नहीं रखते। श्री जितेन्द्र कुमार जी गुप्त का यह कथन एकदम खरा सत्य है। पं. भगवद्दत्त जी ने हमें एक मार्मिक सत्य सुझाया है ऋषि के प्रत्येक दूसरे-तीसरे पत्र में देशोन्नति, देशोत्थान व जनकल्याण की चर्चा मिलती है। हमने इस सूत्र को पकड़कर कोई विशेष मौलिक खोज करके दी। बड़ों ने बड़े-बड़े व अनेक कार्य करते हुए ऐसे बहुत से काम करके दिखाये।

हमने कभी परोपकारी में लिखा था और अब पूज्य लक्ष्मण जी के ग्रन्थ में यह जोड़ा है कि सन् १८८१ में महर्षि जी ने श्री गोपाल हरि देशमुख तथा महादेव गोविन्द रानाडे जी को एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पत्र लिखा था। महर्षि का यह पत्र प्यारे ऋषि को तत्कालीन सब सुधारकों व देशभक्तों का अग्रणी व महान् क्रान्तिकारी सिद्ध करता है। ऋषि को देश के कण-कण से प्यार था। १८८०-१८८१ ईस्वी में भुज-कच्छ के भोले-भाले गुजराती बन्धुओं पर एक विपत्ति आई। गोरे विदेशी उनकी विपक्ष का लाभ उठाकर देश-बन्धुओं का अनिष्ट कर सकते थे। देश व गुजरात के किसी तत्कालीन नेता का इस ओर ध्यान न गया। दयावान् दयालु दयानन्द उस अनिष्ट की कल्पना करके काँप उठा। कच्छ के राजा प्रागमल का निधन हो गया। इनका उत्तराधिकारी राजा खेंगार तब मात्र १३-१४ वर्ष का था। महर्षि ने गोपालराव जी तथा रानाडे को पत्र लिखकर अव्यस्क राजा खेंगार जी के अव्यस्क होने के कारण यह लिखा-''विशेष कृपादृष्टि भुज-कच्छ देश पर भी कीजिये''। इस वाक्य में महर्षि की देशभक्ति, करुणा, अन्त:वेदना, गुजरात की सरल निर्धन प्रजा से आत्मीयता बोल रही है। उपरोक्त दोनों नेताओं की सरकार की दृष्टि में प्रतिष्ठा थी। इस कारण दीन, दु:खी, दलित व मूक प्रजा का सेवक दयानन्द भुज-कच्छ के लिए गुहार लगाता है कि ''भुज-कच्छ देश पर भी विशेष कृपा कीजिये।''

महर्षि का यह पत्र गुजरात के घर-घर में हम न पहुँचा पाये। टंकारा आदि कई नगरों में हमारी कई संस्थाएँ हैं। किसी ने कभी इस पत्र को High Light करके प्रचारित ही नहीं किया।

भुज में आर्यसमाज है। साधन सम्पन्न भी है। कंगाल नहीं। आर्य लोग वहाँ सुरक्षित हैं। टंकारा वाले कुछ करेंगे नहीं, भुज में एक स्मारक बनना चाहिये। एक बड़ी शिला पर यह पत्र खुदवाया जावे। महर्षि तथा राजा खेंगार के चित्र साथ हों। गुजरात सरकार सहर्ष साथ देगी। आज ही भुज समाज को लिखा है कि यह कार्य होना ही चाहिये। हम सब इसमें आहुति डालेंगे। ऋषि के पत्रों में इस पत्र का आर्यों ने मूल्याङ्कन नहीं किया। हमारे पास तो भारत माता के लाल, देशभक्तों के सिरताज ऋषि दयानन्द जी के इस पत्र का ऐतिहासिक महत्त्व वर्णन करने के लिये शब्द ही नहीं। इस लेख द्वारा परोपकारिणी सभा से भी हम विनती करते हैं कि यदि भुज समाज अपना कर्त्तव्य न निभाए तो सभा यह काम हाथ में ले। गुजरात की जनता साथ देगी। देशभर के आर्य सोत्साह लें। इस निमित्त जी खोलकर धन देंगे।

श्री सभा कार्यकारी प्रधान जी का सुझाव-श्री धर्मवीर जी ने 'परोपकारी' को हाथ में लिया तो 'परोपकारी' एक पत्र नहीं, एक संस्था बन गई। आपने इसमें 'इतिहास के हस्ताक्षर' एक नया स्तम्भ चलाकर आर्य पत्रकारिता तथा इतिहास शास्त्र को एक नई ट्रेन दी। पाठकों को यह बताना लाभप्रद रहेगा कि 'इतिहास के हस्ताक्षर' की सामग्री कई सिद्धहस्त गवेषकों, लेखकों ने महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों में साभार उद्धृत की। श्री विरजानन्द

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

जी तथा इन पंक्तियों का लेखक भी अब तक 'इतिहास के हस्ताक्षर' में सहयोगी बने हुए हैं।

आर्यसमाज के जो इतिहास पुरुष हुए हैं उनके चित्र खोज-खोज कर धर्मवीर जी ने देने आरम्भ किये। हमारे जैसे व्यक्ति भी साथ जुड़ गये। यह स्तम्भ इतना लोकप्रिय बना कि कई पत्रों ने इसकी प्रशंसा करते हुए उनके पत्र में यही स्तम्भ चलाने के लिए हमें प्रेरणा दी। पं. विष्णुदत्त जी, पं. महेशप्रसाद के चित्रों की खोज में हम कहाँ-कहाँ गये। परोपकारी की लोकप्रियता के कारण आर्य जनता ने ऐसे-ऐसे दुर्लभ अनुपलब्ध चित्र हमें दिये। स्वामी अनुभवानन्द जी की कोटि के देशभक्त विद्वान् साधु के चित्र का न मिलना हमारे लिए एक कलङ्क था। किसी प्रेमी ने 'तड़प-झड़प' में पढ़कर स्वामी जी का चित्र श्री धर्मवीर जी को प्रकाशनार्थ भेंट करके हमें आनन्दित कर दिया।

अब सभा मन्त्री श्री ओम मुनि जी ने एक ठोस सुझाव दिया है कि दिवंगत आर्य महापुरुषों के जो चित्र परोपकारी में छप चुके हैं इन सबको एक पुस्तक में संग्रहित करके उनके परिचय सहित प्रकाशित किया जावे। यह सुझाव बड़ा उपयोगी और महत्त्वपूर्ण है। चित्र केवल दिवंगत विद्वानों, महात्माओं व हुतात्माओं के ही हों। मिशन को मुख्य रखकर यह पुस्तक तैयार की जावे।

चित्रावली तो समय-समय पर कई प्रकाशकों ने तथा सभाओं ने प्रकाशित करवाई परन्तु कला को गौण कर दिया। लाहौर से जो हुतात्मा राजपाल तथा श्री ला. गोविन्दराम जी ने चित्रावली का जो स्तर हमारे सामने रखा था-उससे हम नीचे गिर गये। हमारा स्तर इतना गिर गया कि गुलबर्गा के धर्मवीरों की तो याद नहीं रही, कृष्णराव ईटेकर और हुपला के शहीद जो जीवित जलाए गये उनको भूल गये, हमारे स्मरणीय सर सैय्यद अहमद खाँ, रमाबाई और उसका प्रेमी तथा पादरी नीलकण्ठ बन गये। ओम मुनि जी का सुझाव मूर्तरूप लेगा तो नई पीढ़ी को एक दिशा मिलेगी।

ऋषि-जीवन के लिखने में भूलें कैसे होती गईं?-तीन वर्ष से दिन-रात ऋषि-जीवन पर चिन्तन और कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त है। लेखक ने एम.ए. की परीक्षा देते हुए भी दो वर्ष तक रात को बिजली के प्रकाश में कभी पढ़ाई नहीं की थी। अपवाद तो रहा होगा। इसका कारण यह था कि गुरुद्वारा सिग्रट केस मे दी गई यातनाओं के कारण पचास वर्ष की आयु तक अन्धा हो जाने की आशङ्का अथवा भय मन में बैठ चुका था परन्तु इन तीन वर्षों रात-दिन लिखने-पढ़ने में व्यस्त रहा।

ऋषि के जीवन चरित्र जो लिखे गये उनमें पं. लेखराम जी के जीवन चरित्र को पं. युधिष्ठिर जी मीमांसक ने इतिहास की दृष्टि से बेजोड़ माना है। यही मत श्री पं. इन्द्र जी आदि मूर्धन्य आर्य इतिहासज्ञों का है। इसमें कई भूलें हुईं। हमने जाँच-पड़ताल में यह पाया कि पण्डित जी के ग्रन्थ में कई भूलों का कारण कातिबों का हिन्दी, संस्कृत के शब्दों का अज्ञान रहा। मुसलमान कातिब सन् व सम्वत् का भेद न जान सके। सम्वत् को कहीं-कहीं सन् समझ लिया। कहीं सम्वत् ठीक है तो सन् की गड़बड़ कर दी गई। श्रद्धेय लक्ष्मण जी के अद्वितीय ग्रन्थ में भी कातिब की भूलें एक से एक बढ़कर मिलती हैं। उस युग के शिरोमणि विद्वान् शास्त्रार्थों व संघर्षों में ऐसे व्यस्त रहे कि ऐसी अशुद्धियों की एक सूची किसी ने तैयार न की। मेहता जैमिनि जी, पं. विष्णुदत्त जी, स्वामी वेदानन्द, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी से लेकर ठाकुर अमरसिंह तक तब हमारे पास कई रत्न और अधिकारी विद्वान् थे।

पं. लेखराम जी ने जीवनी की विधा को जो सबसे बड़ी देन दी है वह है जीवन चरित्र के लेखन में ऋषि के पत्रों का उपयोग-प्रयोग। वास्तव में महर्षि के पत्रों तथा विज्ञापनों को संग्रहित करने के आन्दोलन के जन्मदाता वीर शिरोमणि पं. लेखराम जी ही थे। पं. भगवद्दत्त जी तथा श्रद्धेय मीमांसक जी ने इस तथ्य का बारम्बार उल्लेख किया है परन्तु 'अहंकार पूजा' के रोगियों ने शूर शिरोमणि पं. लेखराम की इस देन को कभी स्वीकार ही नहीं किया। पं. लेखराम जी के पश्चात् श्रद्धेय लक्ष्मण जी ने ऋषि-जीवन को लिखते हुए ऋषि के पत्रों का सर्वाधिक उपयोग किया।

इन पंक्तियों के लेखक का यह सुनिश्चित मत है कि महर्षि के जीवन के अध्ययन व अनुसन्धान में पूज्य मीमांसक जी ने पत्रों की सहायकता से अनेक गुत्थियाँ सुलझाने में सफलता प्राप्त की। लक्ष्मण जी के एतिहासिक ग्रन्थ पर कार्य करते हुए आज तक के सब जीवनी लेखकों से कहीं अधिक पत्रों व विज्ञापनों का लाभ हमने आर्य जाति को पहुँचाया है। यह स्वाभाविक भी था। इसका श्रेय सब पूर्वजों को प्राप्त है जिनसे हम प्रेरणायें प्राप्त करते रहे या जिन्होंने इस सेवक का निर्माण किया। पं. भगवद्दत्त जी के आशीर्वाद तथा श्रद्धेय मीमांसक जी से प्राप्त दृष्टि से कुछ ऐसी सेवा की है जिसका गुणी विद्वान् व भावी पीढ़ियाँ मूल्यांकन अवश्य करेंगी।

ऋषि जीवन में भूलों का एक मुख्य कारण सन् १९४७ के पश्चात् के लेखकों का तालमेल से बचना। आश्चर्य इस बात पर होता है कि स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, वेदानन्द जी, पं. भगवद्दत्त जी तथा मीमांसक जी सरीखे ज्ञान समुद्र तो अपने से बहुत छोटों से भी तालमेल व विचार विमर्श करते थे परन्तु अपनी आधुनिकता की रट लगाने वाले तो अपनी दुनिया के जाल में ही फंसे रहे। पं. लेखराम जी के ग्रन्थ के अनुवादक योग्य सज्जन थे। हमने उनके अनुवाद के नये-नये संस्करण अब देखे। आपने दिल्ली रहते हुए अमर स्वामी, श्री सन्तराम अजमानी तथा नया बांस समाज के ही श्री ओमप्रकाश कपड़े वाले से विचार-विमर्श कर लाभ न उठाया। उन्हें फारसी भाषा का अच्छा ज्ञान नहीं था। हुलूल शब्द अवतार लेने के लिये प्रयुक्त होता है। श्री रघुनन्दन

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

जी ने ऐसे कई शब्दों व वाक्यों के अर्थ ही उलट-पुलट कर दिये। आपने अनुवाद करते समय दायें-बायें न देखा न किसी का सहयोग लिया। पत्र व्यवहार वाला ग्रन्थ उठाकर देखा ही नहीं। हमारे जिन लोगों ने प्रकाश, सद्धर्म प्रचारक, आर्य मुसाफिर, आर्य समाचार का कोई अंक उलट-पुलट कर देखा नहीं वे ऋषि जीवन से ठीक-ठीक न्याय नहीं कर सकते थे।

दिन-वार की भूलों की तो कहानी ही विचित्र है। कहीं दिन-वार ठीक है तो तिथि अशुद्ध छप गई। आषाढ़ तथा आश्विन दोनों को संक्षिप्त करके 'आ' लिखा गया तो पं. लेखराम जैसा ऊहावान् गवेषक क्या करे? वह आरम्भिक काल था। एक और समस्या उस युग में रही। रविवार से हमारे दिन आरम्भ होते हैं। फारसी भाषा में शनिवार से आरम्भ समझिये। रविवार को फारसी में शंबः कहा जाता है। रविवार को यक शंबः और सोमवार को दो शंबः इसी प्रकार तीन, चार, पञ्च शंबः चलते हैं। इस युग में उर्दू में भी शंबः का प्रचुर प्रयोग होता था। फारसी के जाने माने विद्वान् भी कई बार शंबः का अर्थ रविवार कर जाते और दिन वाले की ऐसी एक गड़बड़ हो जाती रही। कई लेखकों से हुई दिन वार की ऐसी एक गड़बड़ का कारण अटपटे वाक्य से भ्रमित होना भी रहा। यह गड़बड़ शाहपुरा से अजमेर और अजमेर से जोधपुर जाने की तिथियों तथा वार से सम्बंधित है।

हमने इसका मूल कारण समझने के लिये बड़ा श्रम किया। ऋषि के दो पत्रों से यह प्रमाणित होता है कि आप २६ मई सन् १८८३ दिन शनिवार को शाहपुरा से चलकर अगले दिन २७ मई को रविवार के दिन अजमेर पधारे। श्री देवेन्द्र बाबू जी तथा श्रीमान् भारतीय जी ने ऋषि के पत्रों का लाभ उठाकर अजमेर पहुँचने की तिथि ठीक-ठीक दी है परन्तु पं. लेखराम जी शाहपुरा से चलने की ठीक-ठीक तिथि देकर भी अजमेर पहुँचने की तिथि २७ की बजाय २८ मई लिखते हैं। इस भूल के कारण को जानने के लिए विचार करते-करते पता चला कि पं. लेखराम जी की कोटि का गवेषक अजमेर के ला. शिवप्रसाद की डायरी से भ्रमित हो गया। श्री हरबिलास जी शारदा जैसा इतिहास का विद्वान् भी उसी डायरी के कारण चूक करके अजमेर पहुँचने की तिथि २८ मई लिख देता है।

दोष इतना शिवप्रसाद जी का भी नहीं। वह ऋषि के प्रेमी भक्त थे। डायरी लिखा करते थे। डायरी इतिहास का एक मूल्यवान् स्रोत होता है। उस डायरी में लिखा है, "२८ मई को पता चला कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी आये हैं। कार्यालय से आकर सेठ फतहमल जी की कोठी में गया।"

ला. शिवप्रसाद जी को २८ मई को अजमेर पहुँचने की जानकारी मिली। उन्होंने यह तो नहीं लिखा कि आज २८ मई को आये हैं। बस भूल का कारण यह वाक्य बना। हरबिलास जी ने इस डायरी को उल्लेख भले ही नहीं किया परन्तु चूक उनसे भी इसी कारण से हो गई। वैसे वह इतने सावधान थे कि शारदा जी अजमेर से प्रस्थान २८ मई की बजाए २१ मई को लिखते हैं। कारण गाड़ी अजमेर से अपने समय पर चली ही नहीं। गाड़ी रात्रि १२ बजे के पश्चात् अजमेर से चली तब तिथि बदल गई। शारदा जी ने २९ ठीक ही तो लिखी है।

लक्ष्मण जी ने शाहपुरा से प्रस्थान की तथा अजमेर पहुँचने की तिथियाँ ठीक-ठीक देते हैं परन्तु २७ मई को दिन रविवार की बजाए दो शंबः (सोमवार) लिखते हैं। इस चूक का कारण क्या था? ऋषि के पत्रों का लाभ न उठाकर जोधपुर ३१ मई की बजाए २९ मई लिखने की भूल कर बैठे।

मेहता राधाकिशन जी ने अपने ग्रन्थ में शाहपुरा से तो २६ मई को प्रस्थान करने की ठीक तिथि दी है। अजमेर पहुँचने की तिथि तो नहीं दी परन्तु अजमेर में "एक दिन रुकना लिखकर २७ मई को स्वामी जी पाली के स्टेशन पर पहुँचे। उस दिन वहीं रुके। दूसरे दिन रोहट पहुँचे। आगे लिखा है कि रोहट से रात्रि दस बजे चलकर दस ज्येष्ठ सम्वत् १९४० दिन वीरवार को २९ मई प्रातःकाल जोधपुर पहुँचे। श्री राधाकिशन जी ने घटनायें तो पं. लेखराम जी तथा लक्ष्मण जी के आधार पर ही दीं परन्तु तिथियों की इतनी गड़बड़ का कारण समझ में नहीं आया। लगता है कातिब से वाक्यों में भी अदल-बदल आगे-पीछे बहुत कुछ हो गया।

यहाँ विचित्र बात तो यह हुई कि राधाकिशन जी जोधपुर पहुँचने का दिन गुरुवार तो ठीक देते हैं परन्तु तिथि २९ मई लिखते हैं जबकि उस दिन ३१ मई थी। हमारा भाव यह है कि श्री मेहता राधाकिशन जोधपुर पहुँचने की अशुद्ध तिथि देकर भी दिन वार शुद्ध ही लिखते हैं।

आज तो दिन वार तिथि की जाँच चलभाष तथा इन्टरनेट पर भी हो जाती है। हमने भी इसका लाभ लिया। मीमांसक जी ने पत्र व्यवहार के राजमार्ग को और पक्का बना दिया है। उस युग में जब पं. लेखराम जी, लक्ष्मण जी को देशभर में घूम-घूमकर खोज करनी पड़ी, हाथ से सब प्रतिलिपियाँ करनी पड़ीं उनके श्रम व तप की कल्पना तो करें। आज तो उनके बनाये प्रकाशयुक्त पक्के मार्गों पर चलते हुए इस साधारण सेवक ने भी सहस्रों पृष्ठों के जिरॉक्स करवाकर काम बना लिया। आओ। सावधानी से आगे बढ़ें। भूलों से बचें। **-वेद सदन, अबोहर।**

मनुष्यों को उचित है कि द्वेषादि त्याग, विद्यादि धन की प्राप्ति और धर्ममार्ग के प्रकाश के लिये ईश्वर की प्रार्थना, धर्म और धार्मिक विद्वानों की सेवा निरन्तर करें।-**महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद भावार्थ-४.२९।**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

योग-साधना शिविर (प्राथमिक-स्तर) सम्पन्न

-ब्र. रविशंकर

परोपकारिणी सभा द्वारा महर्षि के मिशन को आगे बढ़ाते हुए समाज में उच्च जीवन मूल्यों वाले श्रेष्ठ नागरिकों के निर्माण हेतु भिन्न-भिन्न आयोजन होते रहते हैं। इसी कड़ी में ऋषि उद्यान में १६-२३ जून तक योग शिविर का आयोजन किया गया था।

शिविर में स्वामी विष्वङ् जी और डॉ. धर्मवीर जी द्वारा सन्ध्या-उपासना में मन्त्रपाठ करने के साथ-साथ कैसे मन्त्रों के अर्थों का विचार पूर्वक ध्यान किया जा सके, इसको क्रियात्मक रूप में सरल शब्दों में रखा गया।

प्रात:कालीन यज्ञोपरान्त माननीय डॉ. धर्मवीर जी ने वेद, उपनिषद् और मनुस्मृति के माध्यम से साधकों को आह्लादित कर देने वाले व्याख्यान दिए, जिसमें वेदाहमेतं....मंत्र के माध्यम से बताया कि जो जाएगा, जब जाएगा इसी रास्ते से जाएगा। केवल एक ही रास्ता है, दु:खों से छूटने का अर्थात् परमेश्वर को जानने के अलावा कोई विकल्प नहीं है।

आपने बताया कि ईश्वर में ''इदम् अर्थात् यह'' और ''इत्थम् अर्थात् ऐसा'' ये शब्द नहीं घटते अर्थात् हम किसी वस्तु को दिखाकर यह नहीं कह सकते हैं कि यह ईश्वर है अथवा ईश्वर इसके जैसा है। लेकिन ईश्वर के लिए ''नेति अर्थात् यह नहीं है'' शब्द का प्रयोग किया जा सकता है जैसे ईश्वर सूर्य, चाँद, पहाड़, मनुष्य, जानवर इत्यादि नहीं है। आपने बताया कि तुम्हारा संसार से लेना-देना क्या है, पहले यह जान लो तो सुखी रहोगे। उपनिषद् के माध्यम से बताया कि यह आत्मतत्व देखने योग्य, सुनने लायक, जानने योग्य और सोचने वा मनन करने में आनन्द देने वाला है।

''ईश्वर, जीव और प्रकृति'' सत्र में स्वामी विष्वङ् जी ने प्रकृति के स्वरूप की व्याख्या में बताया कि ज्ञान और घमण्ड का नाम बुद्धि और अहङ्कार नहीं है, ये पदार्थ हैं, यन्त्र हैं जिनसे जीवात्मा क्रमश: निर्णय और अपने अस्तित्व का बोध करता है। प्रकृति से बने पञ्चमहाभूतों को आँखों से नहीं देखा जा सकता, जिन पृथिवी, जलादि को हम देखते हैं, वे इन पञ्च महाभूतों के कम ज्यादा प्रतिशत से मिलकर बने होते हैं। भोग और अपवर्ग को इस प्रकृति अर्थात् दृश्य का प्रयोजन सिद्ध करते हुए बताया कि हमें केवल भोग ही नहीं करना है, अपवर्ग के बारे में भी सोचना है। जीवात्मा के विषय में आपने बताया कि जो ''मैं'' का अनुभव करता है वही जीव है।

और प्रयत्न आत्मा का स्वभाव है, एक क्षण के लिए भी आत्मा निठल्ला नहीं रह सकता, चाहे व्यक्ति सोया हुआ ही क्यों न हो। और जब साधक को अपने स्वरूप का बोध होता है कि ''मैं'' कौन हूँ? तब उसे दु:ख नहीं होता। ईश्वर विषय में स्वामी जी ने बताया कि हमें चिन्तन करना होगा कि ईश्वर के मेरे जीवन में होने से क्या लाभ हैं? और न होने से क्या हानियाँ हैं? ऐसा विचारने से ईश्वर के प्रति उबाउपन हटकर प्रीति उत्पन्न होगी जिससे उपासना में मन लगेगा।

शिविर के प्राथमिक स्तर को ध्यान में रखते हुए योग और सांख्य दर्शन का पाठ्यक्रम बनाया गया जिसमें कुछ प्रारम्भिक महत्त्वपूर्ण सूत्रों को रखा गया।

आचार्य श्री सोमदेव जी ने योगदर्शन के सूत्रों को समझाते हुए बताया कि साधक को हर सम्भव उपायों द्वारा अपने मन को सदैव प्रसन्न रखने का प्रयास करना चाहिये, जैसे यदि उपासना में मन न लगे तो उपासना के समय भूतकाल में हुई अच्छी उपासना को स्मरण करके मन को प्रसन्न किया जा सकता है। उन्होंने सारे दु:खों का मूल कारण अविद्या को हटाने का उपाय अष्टाङ्ग योग को बताया। यम-नियमों को समझाते हुए आचार्य जी ने झूठ बोलने के कारणों में अपमान का भय, स्वार्थसिद्धि और अपनी कमजोरी को छुपाना बताया।

सांख्य सूत्रों की व्याख्या में शुद्ध ज्ञान को सुख और विपरीत ज्ञान को दु:ख का कारण बताते हुए आचार्य श्री सत्येन्द्र जी ने उदाहरण देते हुए बताया कि जब व्यक्ति अत्यधिक अनावश्यक कामनाओं से ग्रस्त रहता है तब दुख को प्राप्त होता है और जब हानिकारक कामनाओं को त्यागता है, तभी सुखी होता है। आगे आचार्य जी ने बताया कि ऐसा व्यक्ति जिसका मन विकारों से भरा हुआ रहता है, उसको कोई कितना ही अच्छा उपदेश करे, वह उपदेश उसके मलिन मन में स्थान नहीं बना सकेगा। इसलिए साधक को पुण्यकर्मों के साथ-साथ संस्कारों को शुद्ध करने का प्रयत्न करते रहना चाहिये।

जिज्ञासु साधकों की ध्यान-उपासना, अध्यात्म, सिद्धान्त सम्बन्धी शङ्काओं का समाधान स्वामी विष्वङ् जी ने स्पष्टता से किया, जिसका साधकों ने लाभ उठाया। रात्रिकालीन आत्मनिरीक्षण सत्र में स्वामी वेदपति जी ने ''मौन द्वारा आत्मनिरीक्षण'' को विस्तार से समझाते हुए बताया कि मौन द्वारा साधक अपनी इन्द्रियों को बाह्य विषयों से अन्तर्मुखी करके अपनी अल्पज्ञता के कारण शरीर, वाणी और मन से होने वाली त्रुटियों को जानकर, समझकर व रोककर भविष्य में होने वाले दु:खों को दूर करे। व्यायामाचार्य श्री यतीन्द्र जी द्वारा शिविरार्थियों को विभिन्न आसन के व्यायामों का प्रशिक्षण दिया गया, जिससे साधकों को स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करने में मदद मिली।

यह शिविर साधकों के दिए गए अनुभव के आधार पर उनके व्यवहारिक जीवन में पूर्व की अपेक्षा अधिक सुख-शान्ति देने वाला व वैदिक वाङ्मय और योगाभ्यास के प्रति रुचि और गति को बढ़ाने वाला रहा। -**ऋषि उद्यान, अजमेर।**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

शिविरार्थियों के अनुभव

१. योग शिविर के अन्तर्गत सभी कक्षाओं को नियमित रूप से दिनांक १६.०६.२०१३ को ही शुरु कर दिया जिसके अन्तर्गत मुख्य रूप से योगदर्शन, सांख्य-दर्शन एवं ईश्वर जीव एवं प्रकृति के विषय में जानकारी प्राप्त की जो कि मेरे लिए पूर्णत: नया था, स्वाध्याय में कठिन तो था परन्तु आचार्य गणों की सहायता से उनके समझाने के तरीके से सभी विषयों के बारे में थोड़ा ज्ञान प्राप्त करने का मौका मिला।

और यहाँ सात दिनों तक अनुशासन में रहकर अपने दिनचर्या में परिवर्तन और इस व्यस्त सात दिनों में अन्य किसी बुराईयों अथवा किसी विषय में सोचने का समय ही नहीं मिला जो कि बहुत अच्छा था और आगे भी इसका अनुसरण करूँगी। स्वयं को व्यस्त रखने का प्रयास करूँगी। यहाँ आने के पश्चात् समस्त वस्तुएँ मुझे बहुत अच्छी लगी, सभी अनुशासन ठीक लगे, कष्टदायक था केवल वह था-मौन रहना, जिसका पालन करना अत्यन्त कठिन हो रहा था क्योंकि समूह में रहने के पश्चात् कुछ विषय ऐसे आ ही जाते थे जिससे बात करने की आवश्यकता पड़ जाती थी परन्तु कुछ समय ही मौन रहने के लाभ के बारे में पता चल गया है अत: भविष्य में मैं अपने बातचीत का दायरा कम करने की कोशिश करूँगी मुझे इस बात की खुशी है कि मुझे यहाँ आकर शिविर में उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ मैं आगे भी इस प्रकार के शिविर में भाग लेना चाहूँगी।

अंतत: मैं इस शिविर के आयोजक एवं समस्त ऋषि आश्रम के लोगों एवं श्री रणवीर आर्य का धन्यवाद देना चाहूँगी जिनके कारण यहाँ आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

-त्रिवेणी पटेल, रायगढ़, छत्तीसगढ़।

२. पूर्ण मौन का यह शिविर मेरा पहला शिविर है, एक प्रकार का नया अनुभव है, मैं केवल भ्रमण में श्लोक बोलने के अलावा कहीं भी नहीं बोला, एक-दो शब्द के अलावा-अच्छा तो है। परन्तु पढ़ते समय कोई बात समझ में न आवे या रह जावे तो कुछ पूछ नहीं सकते वह बात रह ही जाती है। मेरा मानना हर पढ़ते समय पूछने की छूट होनी चाहिये, यहाँ सभी प्रकार की सुन्दर व्यवस्था थी, कोई कमी नहीं थी, गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का व्यवहार अति उत्तम था, कार्यालय की व्यवस्था भी बहुत अच्छी थी। इस प्रकार के शिविर लगते रहने चाहिये, शिविर में जो विषय जो विद्वान पढ़ा या सिखा रहा हो पूरे समय वही सिखाये तो ठीक है, दूसरा विद्वान् बीच में बदलने से अपना-अपना ढंग होता है, वह एक रसता बदल जाती है।

उपासना में दो बार स्वामी विष्वङ् जी के स्थान पर प्रो. धर्मवीर जी की उपासना कराने में भी बातचीत जैसा या भाषण जैसा ही लग रहा था उपासना जैसा नहीं लगा वैसे मैं यज्ञोपरान्त प्रो. धर्मवीर जी के व्याख्यानों से अति प्रभावित हुआ हूँ। उनकी विद्वत्ता अद्वितीय है। रहने आदि की व्यवस्था भी बहुत उत्तम थी कुल मिलाकर शिविर अत्यन्त सफल था, और मुझे पता नहीं मुझे बहुत लाभ हुआ मैं परोपकारिणी सभा का बहुत आभारी हूँ।

-राजसिंह आर्य, प्रधान-दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड़, नई दिल्ली।

३. मैं ऐसे योग के शिविर में पहली बार ही आया हूँ। मैं एक अध्ययनशील व्यक्ति हूँ। योग के बारे में सुना अवश्य था, मगर व्यवहार में यहीं पर आया। यहाँ आकर मुझे सर्वप्रथम अनुशासन का ज्ञान हुआ कि यहाँ का अनुशासन अपने ढंग का निराला है। विशेषकर मौन धारण करने का। मैं भी शिक्षा जगत् से जुड़ा हूँ तो अनुशासन का प्रबल पक्षधर हूँ। मौन पालन करने से दो लाभ अवश्य हुए, मगर एक हानि भी हुई कि वहाँ पर कुछ योग्य व्यक्ति भी आये हैं, मगर मौन के कारण उनसे धर्मचर्चा नहीं हो सकी।

भोजन पूर्ण सात्विक रहा। यदि इसी प्रकार का भोजन घर जाकर करें तो साधना में उपयोगी होगा। मैं चाय पीने का आदि था मगर यहाँ रहकर चाय की इच्छा ही न रही। घर जाकर प्रयत्न करूँगा कि चाय का प्रयोग न करूँ। यहाँ के जितने भी आचार्य हैं, उन्होंने अपने-अपने विषय को बड़े सही ढंग से समझाने का प्रयत्न किया जिसका मुझे लाभ भी मिला है, उनके द्वारा बताये गये रास्ते पर चलने का धीरे-धीरे प्रयत्न करूँगा।

मैं किसान का बेटा हूँ, बचपन में गाय का दुग्ध पान किया होगा। मगर यहाँ रहकर सुन्दर-सलौनी गाय माताओं का दुग्धपान करने का जो आनन्द मिला वह अविस्मरणीय है। ब्रह्मचारियों का आचरण शुद्ध तथा पवित्र रहा है। कुछ ब्रह्मचारी शरीर से बहुत दुर्बल प्रतीत होते हैं, मगर सभी ब्रह्मचारियों की सेवायें सराहनीय रहीं।

-श्री शरन सारस्वत।

४. हमें इस शिविर में आकर बहुत लाभ प्राप्त हुआ है, बहुत अच्छी शिक्षा मिली तथा शिविर में आकर क्या-क्या अनुशासन, नियम का पालन करना पड़ता है, यह नयी सीख प्राप्त हुई है। इस शिविर के माध्यम से आर्यसमाज में आने का पहला अवसर प्राप्त हुआ। इतने लोगों के बीच में मौन का पालन तथा लक्ष्य की प्राप्ति किस प्रकार करना चाहिए। यह जानकारी प्राप्त हुई क्योंकि इतने लोगों के बीच में पहली बार हूँ, तथा नई-नई चीजों की जानकारी प्राप्त हुई और क्रोध को कैसे नियन्त्रण करें यह ज्ञान हुआ। आत्मनिरीक्षण किस प्रकार करना चाहिए, साधना, परमात्मा की प्राप्ति किस प्रकार होती है, यह ज्ञान प्राप्त हुए हैं।

शेष पृष्ठ-३६ पर...............

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह : कुछ संस्मरण

-डॉ. कपिलदेव द्विवेदी

आज से ५० वर्ष पूर्व की घटनाओं का स्मरण करते हुए हृदय रोमांचित और हर्ष विह्वल हो उठता है। आज ७० वर्ष से अधिक आयु हो जाने पर वे घटनाएँ बाल्यकाल की स्फूर्ति, चेतना और जागरुकता की अमिट छाप छोड़ जाती हैं, जिसने आर्य जाति के इस इतिहास में आत्म बलिदान के लिए प्रेरित किया था। सन् १९३९ के प्रारम्भ में हैदराबाद के निजाम के विरुद्ध आर्यसमाज ने युद्ध का बिगुल बजाया।

हैदराबाद में निजाम के विरुद्ध आर्य सत्याग्रह की आवश्यकता क्यों पड़ी। इसके विषय में संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि हैदराबाद स्टेट में ९० प्रतिशत जनता हिन्दू थी और १० प्रतिशत मुसलमान। शासक मुसलमान था, अत: उन्होंने यह प्रक्रिया अपनायी कि विभिन्न प्रतिबन्ध लगाकर हिन्दुओं को मुसलमान बनाया जाए। उन्होंने जो मुख्य प्रतिबन्ध लगाए थे उसमें नये मन्दिरों का निर्माण से रोक, पुराने मन्दिरों का जीर्णोद्धार का निषेध तथा हिन्दुओं के गैरुए या ओ३म् के झंडे पर रोक प्रमुख थे। लूट-पाट, अत्याचार, हत्या द्वारा हिन्दुओं को आतंकित किया जाता था। सरकारी नौकरों की टोपी के स्थान पर तुर्की टोपी लगाने के लिए बाध्य करना तथा वेशभूषा मुसलमानी अपनाने को कहा। हिन्दुओं के कथा, कीर्तन, धार्मिक जुलूस पर नाना प्रकार के प्रतिबन्ध थे। इससे हिन्दू जनता अत्यन्त आतंकित व पीड़ित थी। कांग्रेस आदि अन्य सभी संस्थाएँ इस विषय में मूकदर्शक थीं। अत: आर्यसमाज को विवश होकर यह सत्याग्रह करना पड़ा।

इस आन्दोलन के कुशल नेतृत्व हेतु पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी तथा तत्कालीन प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को चुना गया। उन्होंने ४ फरवरी १९३९ को शोलापुर से सत्याग्रह हेतु गुलबर्गा प्रस्थान किया और ७ फरवरी १९३९ को सभी सत्याग्रहियों को एक वर्ष का कठोर कारावास दिया गया।

इस सत्याग्रह का बिगुल बजते ही गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) में भी अपूर्व उत्साह था। सत्याग्रह हेतु विद्यार्थियों ने अपने नाम लिखवाने प्रारम्भ कर दिए थे। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में सत्याग्रह हेतु प्रोत्साहित करने और छात्रों में मन्त्र फूंकने का कार्य तत्कालीन कुलपति आचार्य नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ (राव जी) ने किया। श्री राव जी का जन्म स्थान हैदराबाद था, अत: वे अपनी मातृभूमि को निजाम के निरंकुश अत्याचारों से मुक्त करने के लिए उद्वेलित थे। मैं उस समय १२वीं श्रेणी का विद्यार्थी था। प्राय: सभी प्रतियोगिताओं, खेलकूद, भाषण, लेखन, शास्त्रार्थ आदि में भाग लेता था। अत: मेरी अन्तरात्मा ने प्रेरणा दी कि मैं भी इस सत्याग्रह में अपनी एक आहुति अवश्य दूँ। इसी आधार पर मैंने पिता जी आदि को सूचना दिए बिना अपना नाम भी राव जी को प्रस्तुत किया।

श्री राव जी ने यह निश्चय किया कि गुरुकुल से पहला जत्था शीघ्रातिशीघ्र भेजा जाए। अत: मार्ग व्यय हेतु धन संग्रह के लिए मैं स्वामी विवेकानन्द जी सहारनपुर बिजनौर और मुजफ्फरनगर जिलों में गए। श्री राव जी ने इस जत्थे की तैयारी की सूचना महात्मा खुशहालचन्द खुर्सन्द (आनन्द स्वामी) को भेज दी थी। जब हम लोग धन संग्रह करके लौटे, तो ज्ञात हुआ कि श्री खुशहालचन्द खुर्सन्द जी ने भी मार्गव्यय हेतु रुपया भेजा है। फरवरी १९३९ के अन्तिम सप्ताह में महाविद्यालय ज्वालापुर से पहला जत्था स्वामी विवेकानन्द जी के नेतृत्व में गया। इसमें मेरे अतिरिक्त श्री हितपाल शास्त्री, डॉ. हरिशचन्द्र आत्रेय, डॉ. धर्मदेव आत्रेय आदि थे।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि इस धर्म-सत्याग्रह में गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर ने चार जत्थे भेजे। जिनमें १०० से भी अधिक ब्रह्मचारी, अध्यापक तथा अन्य कार्यकर्ता थे। इस सत्याग्रह में गुरुकुल के स्नातक जो अन्य स्थानों पर आचार्य या शिक्षण आदि का कार्य कर रहे थे, उन्होंने भी अपनी आहुति दी। इस प्रकार महाविद्यालय ज्वालापुर द्वारा दी गई आहुतियों की संख्या २०० से भी अधिक थी। भारतवर्ष में किसी भी अन्य संस्था ने इतने सत्याग्रही इस धर्म आन्दोलन में नहीं भेजे थे। इसके द्वारा गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर की ख्याति आर्यसमाज के इतिहास में अमर हो गयी। हम लोग दिल्ली, झांसी, बम्बई होते हुए शोलापुर पहुँचे। वहाँ दूसरा जत्था राजस्थान के प्रमुख एडवोकेट एवं आर्य नेता श्री कुवंर चांदकरण शारदा के नेतृत्व में सत्याग्रह के लिए जा रहा था। श्री शारदा जी ने इच्छा प्रकट की कि गुरुकुल महाविद्यालय का जत्था भी उनके साथ भेजा जाए। उनकी इच्छा के अनुसार गुरुकुल का पहला जत्था श्री शारदा जी के साथ गिरफ्तारी के लिए गुलबर्गा गया।

मुझे भी शारदा जी के साथ गिरफ्तार होना था, किन्तु महात्मा खुशहाल चन्द जी ने मुझे रोक लिया। श्री खुशहाल चन्द जी ने विद्यार्थियों से पूछा कि किसका लेख सर्वोत्तम है, तो छात्रों ने मेरे नाम का सुझाव दिया। शोलापुर से आर्य सत्याग्रह की सूचना के लिए दैनिक दिग्विजय नाम का समाचार पत्र निकाला जा रहा था। रविवार को प्रेस बन्द रहते थे, अत: श्री खुशहालचन्द जी की इच्छा थी कि रविवार को भी दैनिक पत्र स्टेनसिल काटकर निकाला जाए। उन्होंने मुझसे कहा कि तुम्हें इस कार्य के लिए रुकना है, तुम मेरे साथ गिरफ्तार होंगे। मैंने बहुत

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

अनिच्छापूर्वक उनकी आज्ञा स्वीकार की और उनसे कहा कि एक शर्त पर मैं रुक सकता हूँ। उन्होंने कहा कि क्या शर्त है? मैंने कहा कि आप गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर मार्ग व्यय का रुपया तार द्वारा भेजें और वहाँ से एक जत्था तुरन्त बुलवायें। उन्होंने यह शर्त सहर्ष स्वीकार कर ली। उन्होंने तुरन्त तार द्वारा रुपया श्री राव जी के नाम गुरुकुल भेजा। सूचना मिलते ही गुरुकुल से दूसरा जत्था श्री भूदेव शास्त्री के नेतृत्व में भेजा गया। इसमें श्री प्रकाशवीर शास्त्री, डॉ. सुदर्शन शास्त्री आदि थे।

जिस दिन यह जत्था शोलापुर पहुँचा है उससे अगले ही दिन २२ मार्च १९३९ को २०० सत्याग्रहियों ने शोलापुर से प्रस्थान किया और गुलबर्गा में गिरफ्तारी दी। मुझे दो वर्ष की सामान्य एवं ६ मास की कठोर अर्थात् कुल ढाई वर्ष की सजा दी गई। जब इस सजा के कुछ नाम लिखे जा रहे थे तब उस समय कुछ रोचक प्रसंग आए। किसी ने अपना नाम यवनकाल, किसी ने अष्टाध्यायी के सूत्र चुटू, तौलि आदि लिखवाए। मैंने अपना नाम कपिलदेव शास्त्री विद्याभास्कर लिखवाया। उनकी पद्धति के अनुसार नाम, पिता का नाम, ग्राम, जिला, प्रान्त होता था। मेरे नाम में उन्होंने कहा कि नाम कपिलदेव, पिता का नाम-शास्त्री, ग्राम-विद्याभास्कर हो गया, अब जिला बताओ। मैंने उन्हें बतलाया कि अभी पिता का नाम नहीं हुआ है, उसके बाद ग्राम व जिला बताऊँगा। इस प्रकार नामावली में अनेक रोचक प्रसंग हुए।

सजा सुनने के पश्चात् हम लोगों को जेल के कपड़े, तसला, चप्पू, अंगोछा, कम्बल, टाट आदि दिए गए और हमारे कपड़े आदि वहीं रोक लिए गए। विभिन्न वार्डों में हम लोगों को भेजा गया। सामान्यत: हमारी दिनचर्या यह रहती थी-प्रात:, संध्या, यज्ञ, भजन। उसके बाद नाश्ता और ठीक ८ बजे बाहर कठोर काम पर ८ घंटे के लिए जाना पड़ता था। सायं संध्या, हवन के पश्चात् भोजन दिया जाता था।

हम लोगों को कठोर कार्य के रूप में पत्थर तोड़ने का काम दिया गया। हम लोग लाईन में बैठ जाते थे और घंटे भर हथौड़े से पत्थर तोड़ते थे। उसमें सबने यह उपाय निकाला कि पत्थर पर हथौड़ी का लकड़ी वाला हिस्सा जोर से मार देने पर हथौड़ा टूट जाता था, हम लोग दूसरी हथौड़ी की व्यवस्था होने तक विश्राम करते थे।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि श्री शारदा जी से पहले जेल में यज्ञ की व्यवस्था नहीं थी। श्री शारदा जी ने पहुँचते ही जेलरों को कहा कि हम लोग आर्य हैं, जब तक हवन नहीं कर लें तब तक अन्न ग्रहण नहीं करेंगे। पहले जेलरों ने यज्ञ की अनुमति नहीं दी, सत्याग्रहियों ने अनशन प्रारम्भ कर दिया। विवश होकर उन्हें यज्ञ की अनुमति देनी पड़ी। इसमें मनोरंजन का अंश यह था कि जमीन पर कुण्ड में ही हवन किया जाए, जमीन खोदकर नहीं। उन्हें यह आशंका थी कि यदि ये जमीन खोदकर हवनकुण्ड बनाएंगे तो उसका अभिप्राय यह होगी कि ये हमें जमीन खोदकर दफनाना चाहते हैं। अत: भूमि खोदकर यज्ञ करने पर बड़ा प्रतिबन्ध था।

दूसरा मनोरंजक दृश्य यह था कि जेल के वार्डर को बता दिया गया था कि प्रात: सूर्योदय के बाद तथा सायंकाल सूर्यास्त से ठीक पहले यज्ञ होगा। जेल के वार्डर सूर्यास्त न हो जाए, अत: दौड़-दौड़ कर घी, सामग्री, समिधा आदि पहुँचाते थे।

हमारे अन्य साथियों को जमीन की खुदाई, चक्की चलाना आदि कार्य दिए गए थे और जो कमजोर, वृद्ध तथा नाजुक थे, उन्हें चरखों आदि का काम दिया गया था।

भोजन के विषय में कुछ रोचक कार्य होते थे जैसे सब्जी में पानी बहुत अधिक तथा ढूंढने पर कहीं आलू आदि का दाना मिलता था। दो रोटियाँ ढाई-ढाई छंटाक की दी जाती थीं। रोटियाँ बहुत बड़े तवे पर उलट-पलट कर सेंक दी जातीं थीं, अत: ऊपर से जल जाती थीं तथा अन्दर कच्ची रह जाती थीं। केवल दो समय भोजन मिलता था, इसके अतिरिक्त कुछ नहीं दिया जाता था। आटा कैसे गूंथा जाता था, यह भी रोचक प्रसंग है। एक बड़े हौज में आटे की बोरी उलट दी जाती थी, नल से पानी छोड़ा जाता था तथा एक पहलवान पैरों से आटा गूंथता था। इस प्रकार रोटी के लिए आटा गूंथा जाता था।

हमें गुलबर्गा जेल में काल कोठरी वाले बैरकों में रखा गया था जो चारों तरफ से तारकील से पुता हुआ था और उसमें कटघरे के तुल्य लोहे के दरवाजे थे। यद्यपि देखने में ये कोठरियाँ भयंकर थीं, परन्तु गर्मी के समय में ये कोठरियाँ ठंडी रहती थीं, अत: हम लोगों को सुख की अनुभूति हुई। जेल में रहते हुए हम सभी ने भी खुशहालचन्द जी को पंजाब केसरी की उपाधि दी थी, जो बाद में बहुत प्रचलित हुई।

गुलबर्गा जेल में मैं एक मास रहा और बाद में हैदराबाद जेल में स्थानान्तरित कर दिया गया। वहाँ मुझे सैग्रिकेशन वार्ड में रखा गया। वह छूत की बीमारी वालों के लिए अलग कमरा था, जिसमें अधिक से अधिक सात व्यक्ति रह सकते थे। जेल वालों ने उसमें हम लोगों के ४५ सत्याग्रही साथी रखे। स्थान की कमी के कारण हम सभी लोग दिन में दो बार शौचादि के लिए बाहर ले जाए जाते थे। हैदराबाद जेल के मुख्य द्वार के सामने कुछ पब्लिक शौचालय थे, इनमें हम लोगों ने देखा कि सुल्तान बाजार हैदराबाद के आर्यसमाज के कुछ कार्यकर्त्ता सड़क से हमें देखते हैं और कुछ संकेत करते हैं। इसके लिए यह योजना बनाई गयी कि सुल्तान बाजार हैदराबाद समाज के लोगों को सूचित किया कि हम लोग अमुक नम्बर के शौचालय के ऊपर कोने में कुछ समाचार आदि रख दिया करेंगे। हमें जो आवश्यकता होगी उसकी सूचना देंगे और जेल में सत्याग्रहियों की भी आवश्यक सूचना देंगे। इस प्रकार हम लोग प्रतिदिन विशेष नम्बर वाले शौचालय में ऊपर कागज रख देते थे और उसका

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

उत्तर प्रतिदिन आर्यसमाज से प्राप्त हो जाता था।

किसी प्रकार यह सूचना जेल वालों को भी मिली। वे सब की तलाशी लिया करते थे कि उनके पास कागज और पैन्सिल न हो। अतः कागज का छोटा पर्चा और पैन्सिल भी बहुत संभालकर एवं छिपाकर रखनी पड़ती थी। मैंने जेल में देखा कि बाल काटने और दाढ़ी बनाने की व्यवस्था बहुत भ्रष्ट है, अतः मैंने दाढ़ी रख ली थी और सत्याग्रह के पश्चात् ही उसे कटवाया। इस दाढ़ी के उलझे हुए बालों में मेरी छोटी पैन्सिल फंसी रहती थी और किसी को दिखाई नहीं पड़ती थी। अतः कई बार तलाशी में दाढ़ी ने हमारी रक्षा की।

हैदराबाद में अन्य उल्लेखनीय संस्मरणों में दो-तीन बातें और हैं, जिनका उल्लेख उपयुक्त होगा। भोजन के विषय में जेल वालों ने काफी क्रूरता का परिचय दिया था। जिस दिन जेल में नारे आदि लगते थे, उस दिन वे जानबूझ कर सब्जी में मांस डाल देते थे। रोटियों में पर्याप्त मात्रा में रेत होना साधारण बात थी। रोटियाँ कच्ची हों या पक्की हो उसकी कोई शिकायत नहीं कर सकता था। एक दिन सायंकाल के भोजन में हम सभी को सन्देह हुआ कि सब्जी में मांस है। हमारे साथी कुछ डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर आदि के पंजाबी छात्रों ने सब्जी में मांस का टुकड़ा दिखाया। फलस्वरूप दो दिन भूख हड़ताल रही। जेल वालों ने हड़ताल समाप्त कराने के लिए अनेक प्रयत्न किए परन्तु जब हड़ताल समाप्त नहीं हुई तो उन्हें विवश होकर भोजन के लिए राशन देने की व्यवस्था करनी पड़ी, उसके पश्चात् हम लोग स्वयं भोजन बनाते थे।

जेल के अन्य वार्डों में क्या हो रहा है, यह समाचार पाने के लिए हमारे पास कोई साधन नहीं था। इसके लिए विधि यह निकाली गयी थी कि जिस वार्ड में किसी प्रकार का कष्ट या अत्याचार हो तो वे लोग तुरन्त ''आर्यसमाज की जय'' ''वैदिक धर्म ही जय'' आदि नारे लगाना प्रारम्भ कर देते थे। इसका परिणाम यह होता था कि अगल-बगल के सभी वार्डों से नारे लगने शुरु हो जाते थे यह क्रम आधा या एक घंटे तक चलता था। जेल के अधिकारी दौड़कर आते थे और बन्दूक आदि दिखाकर शान्त करने का प्रयास करते थे। उसके उत्तर में उन्हें कहा जाता था कि अमुक वार्ड से नारे शुरु हुए हैं, आप वहाँ जाकर उनकी समस्या का समाधान कीजिए।

एक दिन की घटना है कि ''मुन्तजिम'' (जिला सुपरिन्टेन्डेंट) महोदय एक वार्ड में पहुँचे। किसी ने उन्हें ''मूर्खानन्द'' कह दिया, वहाँ वे नहीं बोले। दूसरे वार्डों में जाकर सत्याग्रहियों से पूछा कि ''मूर्खानन्द'' का क्या अर्थ होता है। सत्याग्रहियों ने जानबूझकर बताया कि मूर्खानन्द का अर्थ है- आलिम फाजिल (महाविद्वान्)। उन्हें इससे बहुत सन्तोष हुआ। अगले दिन उन्होंने उसे वार्ड में जाकर कहा कि मुझे मूर्खानन्द कहा कीजिए।

हैदराबाद जेल में सत्याग्रहियों से जेल के चारों और पांच फीट ऊंची, १० फीट चौड़ी सड़क बनवायी गयी। हम लोगों को ६ घंटा मजदूर की तरह मिट्टी खोदना उसे सिर पर ढोना तथा सड़क बनाने का कार्य करना पड़ा। निजाम ने पंजाब से खाक्सार (पंजाबी मुसलमान) बुला रखे थे और वे निर्दयतापूर्वक लोगों से यह कार्य करवाते थे।

जेल में चीनी या गुड़ के दर्शन नहीं हुए अतः कुछ सत्याग्रही केवल मिठास के लिए दवाई की बोतलों का पानी डॉक्टर से मांग करते थे। हम लोग रविवार के दिन सामान्य राशन की जगह गुड़ और मूंगफली लेते थे और पीसकर रोटी में भरकर मोटी रोटी (लिट्टी) बनाते थे। वहाँ वह अमृत तुल्य प्रतीत होती थी।

मेरे विरुद्ध जेल में सबसे बड़ी शिकायत यह थी कि मैं लोगों को माफी मांगने से रोकता था। उसके लिए मुझे कई बार चेतावनी दी गयी और ऐसा न करने के लिए कहा गया।

जेल में शारीरिक ह्रास अवश्य हुआ, परन्तु मुझे कई उपलब्धियाँ भी हुईं। मैं जेल में जाते समय सत्यार्थप्रकाश, २८ उपनिषदों का गुटका, महाभारत शान्तिपर्व ले गया था। मैं प्रतिदिन यज्ञ के बाद कुछ प्रवचन भी करता था, उस समय मेरा स्वाध्याय का क्रम चलता था। मैंने इस काल में पूरा सत्यार्थप्रकाश अक्षरशः पढ़ा और उसमें से विशेष बातें नोट कीं। २८ उपनिषदों का गुटका २ बार पूरा पढ़ा और सभी आवश्यक सन्दर्भ नोट किये। महाभारत शान्तिपर्व का भी अध्ययन किया। इसके अतिरिक्त मैंने मराठी भाषा अच्छी तरह पढ़ी और हिन्दी की तरह मराठी का अखबार पढ़ और समझ सकता था। मराठी में समर्थ गुरु रामदास का ''दासबोध'' और श्री तिलक का ''गीता रहस्य'' भी पढ़ा। तेलुगु पढ़ना शुरु किया था, परन्तु विशेष प्रगति न हो सकी।

हमारे साथी ब्रह्मचारी दयानन्द का जेल में यातनाओं से देहान्त हुआ। ये श्री सच्चिदानन्द शास्त्री महामन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के दिल्ली के ज्येष्ठ भाई थे। इस सत्याग्रह में लगभग दस हजार से भी अधिक व्यक्ति गिरफ्तार हुए। इनमें पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश और हैदराबाद के सत्याग्रहियों की संख्या सर्वाधिक थी। विभिन्न यातनाओं में दर्जन सत्याग्रही बलिदान हुए।

हम सभी सत्याग्रही १७ अगस्त १९३९ को निजाम से समझौता होने के कारण जेल से मुक्त हुए। लौटते समय महात्मा गांधी जी से मिले, उन्हें अपनी यातनाएँ सुनायीं। जेल से लौटने पर मैं ३ मास अत्यन्त रुग्ण रहा और बड़ी कठिनाई से स्वस्थ हो सका।

इस सत्याग्रह की उपलब्धि स्वरूप मैं दो आर्य महात्मओं के निकट सम्पर्क में आया, वे हैं-महात्मा नारायण स्वामी जी एवं महात्मा आनन्द स्वामी (खुशहालचन्द जी खुर्सन्द)। महात्मा

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

नारायण स्वामी जी ने मुझे रामगढ़ (नैनीताल) में अध्यापक के पद पर नियुक्ति दी और चार वर्ष मुझे पितृवत स्नेह दिया तथा मार्गदर्शन किया। उनके आशीर्वाद स्वरूप मुझे वेदों के कार्यों में विशेष रुचि उत्पन्न हुई। महात्मा आनन्द स्वामी ने लाहौर में एम.ए. संस्कृत की पढ़ाई में पूर्ण सहयोग दिया और बाबा गुरुमुख सिंह जी (अमृतसर) से दो वर्ष के लिए छात्रवृत्ति दिलवायी। मुझे दैनिक हिन्दी मिलाप में ६ मास के लिए सह-सम्पादक बनाया। मैं इन दो महात्माओं के प्रति उनके आशीर्वाद के लिए कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

-पूर्व कुलपति गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर, हरिद्वार तथा निदेशक विश्वभारती अनुसंधान परिषद्, ज्ञानपुर, वाराणसी।

ध्यान प्रशिक्षण योजना

ध्यान का महत्त्व सदा से रहा है। आज के तनाव व प्रतिस्पर्धा के वातावरण में यह अधिक आवश्यक हो गया है। नई पीढ़ी यज्ञादि कर्मकाण्ड की अपेक्षा-ध्यान में अधिक रुचि व आकर्षण रखने लगी है। प्रौढ़ों व वृद्धों की आध्यात्मिक उन्नति की चाह ध्यान के माध्यम से पूरी हो सकती है। समाज सुधार व उन्नति के इच्छुक व इसमें प्रयत्नशील आर्यों को ध्यान प्रशिक्षण का उपाय सार्थक लगेगा। ऐसी इच्छा वाले सज्जन अपने यहाँ किसी भी आर्यसमाज, आर्य संस्था, विद्यालय, महाविद्यालय, गुरुकुल, सार्वजनिक स्थान आदि में 'ध्यान-प्रशिक्षण' करवाना चाहते हों, तो कृपया अपने व कार्यक्रम-स्थान, समय आदि की पूरी सूचना के साथ सम्पर्क करें।

परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षित अनेक ध्यान-प्रशिक्षक इस कार्य में सेवा के लिए तैयार हैं। आयोजकों को कार्यक्रम हेतु स्थान, बैठक-व्यवस्था, आवश्यक हो तो माईक आदि की व्यवस्था, प्रशिक्षक के निवास, भोजन, आवागमन यात्रा आदि की व्यवस्था करनी होगी।

सम्पर्क-संयोजक, ध्यान प्रशिक्षण योजना, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर, ३०५००१, दूरभाष-०१४५-२४६०१६४, ईमेल-psabhaa@gmail.com

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छः माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रात: एवं सायं दैनिक यज्ञ– प्रवचन, वेद–पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***– आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नि:शुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***– अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क की जाती है। ***गोशाला***– गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का नि:शुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***– वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा नि:शुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***– इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ नि:शुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***– योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में नि:शुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी–छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

अतिथि यज्ञ के होता
(१६ से ३० जून २०१३ तक)

१. मन्त्री आर्यसमाज, प्रतापगढ़, २. दौलतराम, प्रतापगढ़, ३. स्वामी देवेन्द्रानन्द, अजमेर, ४. मेहता माता, अजमेर, ५. संजय शर्मा, बड़ौदा, गुजरात, ६. शिवराज व शान्ति मालु, किशनगढ़, अजमेर, ७. गिरीश मुनि, कानपुर, ८. मनोरमा साहु, इन्दौर, ९. प्रकाशवती राठी व महेन्द्र सिंह राठी, सोनीपत, हरियाणा, १०. डॉ. वृद्धि शंकर उपाध्याय, प्रतापगढ़, ११. रविन्द्र, हनुमानगढ़, १२. धनपति आर्य, सोनीपत, हरियाणा, १३. माता सरस्वती मनचंदा, दिल्ली, १४. राजसिंह दहिया, सोनीपत, १५. जगराम आर्य, महेन्द्रगढ़, हरियाणा, १६. प्रकाशवती आर्य व महेन्द्रसिंह राठी, सोनीपत, १७. मंजु, होशंगाबाद, उ.प्र., १८. राजेन्द्र दहिया, सोनीपत, १९. यशपाल यश, जयपुर, २०. आचार्य नरेन्द्र, नारनौल, हरियाणा, २१. डॉ. आर.सी. राय, लखनऊ, २२. मेघराज, गुड़गाँव, २३. दिनेश चन्द्र व राज कुमारी नवाल, अजमेर, २४. शिवानी, कुरुक्षेत्र, हरियाणा, २५. मोहिनी देवी बंसल, इन्दौर, २६. स्नेहाकार बंसल, इन्दौर, २७. संगीता बंसल व शंकर बंसल, इन्दौर, २८. परिमल बंसल, इन्दौर, २९. रुचिरा बंसल, इन्दौर, ३०. सर्वप्रिय बंसल, इन्दौर, ३१. अवनीश बंसल, सूरत, ३२. भंवरी देवी पारीक, जयपुर, ३३. अरुणा पारीक, अजमेर, ३४. सुभाष चन्द्र आर्य, भिवानी, हरियाणा, ३५. नाथूलाल साहू, सिहोर, म.प्र., ३६. शंकरलाल, पीलीभीत, ३७. संगीता बंसल, इन्दौर, ३८. रुचिरा बंसल, इन्दौर, ३९. पन्ना लाल खेतान, जयपुर, ४०. मन्जू देवी खेतान, जयपुर, ४१. मन्जू देवी व पन्ना लाल खेतान, जयपुर, ४२. प्रसून खेतान, जयपुर, ४३. मृदुला खेतान, जयपुर, ४४. मास्टर माधव खेतान, जयपुर, ४५. मास्टर प्रांचल खेतान, जयपुर, ४६. प्रसून खेतान व मृदुला खेतान, जयपुर, ४७. राजकुमारी, देवास, म.प्र., ४८. फूलसिंह, भिवानी, हरियाणा, ४९. धरमलाल व तुलसी बाई, जंजगीर, छत्तीसगढ़।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला जो परमार्थ हेतु संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगत अतिथियों को निःशुल्क वितरित किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौओं को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता
(१६ से ३० जून २०१३ तक)

१. पृथ्वी राज सिंह, चापानेरी, २. स्नेहा व विवेक मन्त्री, अजमेर, ३. नकुल आर्य, अजमेर, ४. माता प्रेमवती, अजमेर, ५. धीरू भाई गोहिल, मुम्बई, ६. अविरल माहेश्वरी, पूना, ७. रीना, कानपुर, ८. विभू ग्रोवर, उत्तराखण्ड, ९. राजेश शर्मा, पिलानी, झुंझुनू, १०. डॉ. रंजन राय, अजमेर, ११. मयंक, अजमेर, १२. उर्मिला पारीक, अजमेर, १३. राधेश्याम गुप्ता, अजमेर, १४. तुलसी बाई, अजमेर, १५. सीता देवी वर्मा, अजमेर, १६. दिव्य कपूर, नई दिल्ली, १७. हेमन्त शारदा, अजमेर, १८. विश्वनाथ सिंघानिया, जयपुर, १९. रामफल निर्मल मलिता, पानीपत, हरियाणा, २०. धनपति आर्य, सोनीपत, हरियाणा, २१. माता सत्यवती मनचंदा, दिल्ली, २२. आर्यन रेवाड़िया, सोनीपत, २३. भारती, होशंगाबाद, म.प्र., २४. रेखा मिश्रा, सतना, म.प्र., २५. शीला भोडेये, होशंगाबाद, म.प्र., २६. चन्द्रकला रेवाड़ी, हरियाणा, २७. शकुन्तला मदान, दिल्ली, २८. सरला गम्भीर, दिल्ली, २९. लक्ष्मीदेवी, अजमेर, ३०. आचार्य नरेन्द्र, नारनौल, हरियाणा, ३१. डॉ. आर.सी. राय, लखनऊ, ३२. शकुन्तला देवी, सोनीपत, ३३. कमलकिशोर होरी लाल आर्य, बेतुल, म.प्र., ३४. कृष्ण चन्द्र शर्मा, जयपुर, ३५. महेन्द्रसिंह भाटी झुंझुनू, ३६. इन्द्रा देवी आर्या, बेतुल, म.प्र., ३७. गणपत देवी सोमानी, अजमेर, ३८. अशोक कुमार, मेरठ, ३९. मुकुट यादव, मेरठ, ४०. नीलकमल उपाध्याय, होशंगाबाद, म.प्र., ४१. शकुन्तला आर्या, होशंगाबाद, म.प्र., ४२. हरिशरण सारसवत, अहमदाबाद, ४३. कप्तान जगराम आर्य, नारनौल, महेन्द्रगढ़, ४४. भंवरीदेवी पारीक, जयपुर, ४५. राज सुमित्रा पारीक, अजमेर, ४६. शंकरलाल पीलीभीत, ४७. रामस्वरूप, अम्बाला, हरियाणा, ४८. कैलाश चन्द्र, उदयपुर, ४९. नन्दलाल कोहली, दिल्ली, ५०. स्वर्ण कान्ता सारस्वत, दिल्ली, ५१. लता वर्मा, होशंगाबाद, ५२. अनुपम, आगरा, ५३. बी.एस. पाहवा व उषा पाहवा गुड़गाँव, हरियाणा, ५४. शिवसिंह आर्य, पलवल, हरियाणा

-परोपकारिणी सभा, अजमेर।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

वैचारिक क्रान्ति हेतु सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन चरित्र प्रचार-प्रसार की भव्य योजना

विचार किसी भी देश, समाज व जाति की अमूल्य निधि (सम्पत्ति) है। जिसके पास में ठोस श्रेष्ठ विचार नहीं या फिर विचार को फैलाने के साधन नहीं हैं या फिर जो व्यक्ति, समाज व राष्ट्र अपने विचारों की अवहेलना करते रहते हैं, उनका अस्तित्त्व भी एक दिन समाप्त प्राय: हो जाता है। आज हर सम्प्रदाय, समाज, समूह व देश अपने विचारों का प्रचार-प्रसार बड़ी प्रबलता से हर क्षेत्र में व हर साधन से कर रहे हैं, लेकिन काफी समय से आर्यसमाज में वैचारिक शिथिलता देखी जा रही है। इस शिथिलता को दूर करने का मात्र एक ही उपाय है कि हम सभी आर्य जन ऋषि दयानन्द सरस्वती कृत **अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन चरित्र का प्रचार नये शिक्षित लोगों में करें।** इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर सभा के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला २०१४ दिल्ली में प्रचार-प्रसार की योजना तैयार की गयी है।

सत्यार्थप्रकाश ही क्यों?-**१.** यदि कोई व्यक्ति, समाज, समूह, संस्था या राष्ट्र एक ग्रन्थ (पुस्तक) पढ़कर विस्तृत ज्ञान प्राप्त करना चाहे तो यह सत्यार्थप्रकाश से ही सम्भव है। **२.** आज के दूषित वातावरण में वैदिक वाङ्मय को ठीक-ठीक जानने हेतु, पढ़ने-पढ़ाने हेतु प्रथम सत्यार्थप्रकाश और महर्षि के अन्य ग्रन्थों का पढ़ना-जानना अत्यन्त आवश्यक है। **३.** दर्शनशास्त्र, इतिहास, भारतीय परम्परा, कर्त्तव्य, धर्म-अधर्म, उचित-अनुचित, न्याय-अन्याय, सत्य-असत्य तथा मानवता आदि क्या हैं? यह सारी जानकारी सत्यार्थप्रकाश से प्राप्त होती है व होगी। **४.** पाखण्ड, मक्कारी, कुरीतियों व बुराइयों का नाश भी सत्यार्थप्रकाश से सम्भव है। **५.** सत्यार्थप्रकाश व ऋषि के अन्य ग्रन्थों की उपस्थिति में कोई विधर्मी अपनी शेखी नहीं मार सकता तथा किसी भी हिन्दू को बहकाकर विधर्मी नहीं बना सकता। **६.** सत्यार्थप्रकाश के प्रभाव ने न जाने कितनों का जीवन ही बदल डाला। सत्यार्थप्रकाश के जोड़ की दूसरी पुस्तक दुर्लभ है, जिसमें ज्ञान का अमूल्य खजाना भरा पड़ा है। इसलिए इसका प्रचार-प्रसार अनिवार्य है, जरूरी है। **योजना का विवरण निम्न प्रकार का होगा**-**१.** सत्यार्थप्रकाश हिन्दी में आकार लगभग ६०० पृष्ठ व साईज डमई आकार में होगी। लागत मूल्य ५०/- रुपये प्रति पुस्तक। **२.** ऋषि जीवन चरित्र हिन्दी में लगभग २०० पृष्ठ व साईज डमई आकार में। लागत मूल्य ३०/- रुपये प्रति पुस्तक। **३.** सत्यार्थप्रकाश हिन्दी से इतर (अन्य) भाषियों के लिए सी.डी.या डी.वी.डी. के माध्यम से उपलब्ध करवाया जायेगा। इस डी.वी.डी. में लगभग १८ भाषाओं में सत्यार्थप्रकाश होगा। लागत मूल्य लगभग २५/- होगा। **४.** संक्षिप्त ऋषि जीवन चरित्र अंग्रेजी में। लागत मूल्य १०/- रुपये।

नोट-यह साहित्य वैचारिक क्रान्ति के लिए व वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार के लिए गैर आर्यसमाजी सज्जनों व संस्थानों आदि को नि:शुल्क या अल्प मूल्य में वितरित किया जायेगा। साहित्य का ठीक-ठीक उपयोग हो व योग्य शिक्षित विचारवान् व्यक्तियों तथा संस्थानों तक पहुँचे इसके लिए अच्छी वितरण व्यवस्था की जाएगी। योग्य प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं का चयन कर कार्य में नियुक्त किया जायेगा। प्रत्येक व्यक्ति, संस्था आदि से एक फार्म भरवाया जायेगा, जिसमें उनका पूर्ण पता सम्पर्क आदि हो। जिससे भविष्य में परिणाम का मूल्यांकन किया जा सके। ग्रन्थों की प्रामाणिकता, शुद्धता व साज-सज्जा सुन्दरता का विशेष ध्यान रखा जायेगा। इस प्रचार-प्रसार योजना का उद्देश्य सत्यार्थप्रकाश व महर्षि के जीवन-चरित्र के प्रचार-प्रसार के माध्यम से मानव मात्र का कल्याण करना है। यह प्रचार-प्रसार मुख्य रूप से शिक्षित गैर आर्यसमाजी लोगों के लिए होगा। यह कार्य पूर्णरूप से महर्षि के मन्तव्यों के अनुरूप हो इसका विशेष ध्यान रखा जायेगा। इस कार्य की सफलता के लिए सभी आर्यजनों से, समाजों से व संस्थानों से निवेदन है कि इस महान् कार्य में तन-मन-धन से अपना सहयोग करने व अपने इष्ट मित्रों को भी सहयोग करने की प्रेरणा करें।

नोट-अपना आर्थिक सहयोग आप परोपकारिणी सभा अजमेर के नाम प्रेषित करते समय **सत्यार्थप्रकाश प्रचार-प्रसार शीर्षक** अवश्य लिखें। धन प्रेषित करने हेतु आप चैक, ड्राफ्ट व सीधे राशि सभा के बैंक खाते में जमा करवाकर जमा पर्ची की प्रतिलिपि प्रेषित कर देवें या फिर ईमेल, दूरभाष द्वारा सूचित कर सकते हैं। धन्यवाद।

खाता धारक का नाम-**परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
बैंक खाता संख्या-**10158172715**
IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाऊस के सामने, जयपुर रोड़, अजमेर।
बैंक खाता संख्या-**091104000057530**
IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

भूल-सुधार

जुलाई प्रथम-२०१३ के पृष्ठ-२१ पर शीर्षक वैचारिक क्रान्ति हेतु .... में, **योजना का विवरण निम्न प्रकार का होगा** के बिन्दु १ में मूल्य तीस रुपये व १५ रुपये भूलवश गलत छप गया है। इसे इस प्रकार से पढ़ा जाए, तीस रुपये को ५० रुपये व १५/- रुपये को ३० रुपये प्रति पुस्तक। त्रुटि के लिए खेद है।

नोट : इस योजना हेतु दिया गया दान आयकर की धारा ८० जी के अन्तर्गत कर मुक्त होगा।

सम्पर्क : आचार्य दिनेश, चलदूरभाष-७७३७९०४९५०

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

हैदराबाद मुक्ति संग्राम में आजन्म कारावास की सजा प्राप्त-

क्रान्तिकारी, स्वाधीनता सैनिक-''गंगाराम गंडैया''

-डॉ. कुशलदेव शास्त्री

क्रान्तिकारी गंगाराम जी गंडैया उन त्रिमूर्तियों में से एक थे, जिन्होंने निजाम के निरंकुश शासन को समाप्त करने के लिए उन पर बम फैंकने की योजना बनाई थी। गाँव के आर्यसमाजी पटवारी श्री निवासराव जी से आपने अनौपचारिक शिक्षा प्राप्त की थी। हैदराबाद केसरी पं. नरेन्द्र जी के निर्देशन में जिन युवकों ने अपने प्राण हथेली पर लेकर कार्य किए, उनमें आपका अविस्मरणीय स्थान था। भारतीय स्वाधीनता संग्राम की स्वर्ण जयन्ती पर आपका हैदराबाद में हाथी पर जुलूस निकाला गया था। ११ मई २००८ को आपका ७४ वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। उनके जन्म गाँव पालमकुला में वैदिक पद्धति से उनका अन्तिम संस्कार किया गया। इस अवसर पर उनके अभिन्न मित्र व क्रान्तिकारी साथी सर्व श्री नारायण राव पंवार और जगदीश आर्य जी ने अन्तिम सलामी प्रदान की। यहाँ प्रस्तुत है ग्यारह वर्ष पूर्व ली गई उनकी एक भेंट वार्त्ता जो स्वर्गीय क्रान्तिकारी गंडैया जी के जीवन के साथ में 'निजाम-बम-प्रकरण' पर भी प्रकाश डालती है। **-सम्पादक**

हैदराबाद मुक्ति संग्राम की निजाम बम काण्ड से सम्बन्धित सर्व श्री नारायण पंवार, जगदीश आर्य और आप (गंडैया जी) की त्रिमूर्ति को देखकर भारतीय स्वाधीनता संग्राम के शहीद भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु जी की याद ताजा हो जाती है। कृपया आप अपने प्रारम्भिक जीवन का संक्षिप्त में परिचय दीजिए।

मेरा जन्म सन् १९२४ में रंगारेड्डी जिले के शादनगर तहसील में स्थित पालम कुला गाँव में हुआ। पहले गाँव अलवार जिले के अन्तर्गत था। मेरी माता जी का नाम येन्मम्मा और पिता जी का नाम श्री मंदुला बालैया रहा। बचपन में मेरी विधिवत् औपचारिक शिक्षा नहीं हो पायी। हाँ, तभी गाँव के पटवारी श्री निवासराव जी के घर जाकर लिखना-पढ़ना सीख लिया था। ये पटवारी गाँव में आर्यसमाजी विद्वानों का समय-समय पर प्रचार करवाते रहते थे और हम बच्चों को 'सत्यार्थप्रकाश' आदि पुस्तकें पढ़के सुनाते थे। पटवारी और आंध्र महासभा से भी सम्बन्धित थे। अपने तथा शाद नगर परिसर के गांवों में जातिगत भेद-भावों को तिलांजलि देकर वे 'सह-भोजों' का आयोजन करते थे। आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संगों में भी व्यंकटेश्वर राव जी, पं. गंगाराम जी, रुद्रदेव जी, पं. नरेन्द्र जी आदि के व्याख्यान हुआ करते थे। इन सत्संगों में संध्या-हवन के बाद भजन और गीत भी गाये जाते थे। इस प्रकार श्रीनिवास राव जी के निजी ग्रन्थालय से श्रीनिवासराव जी नयी-नयी किताबें लाते थे, जिससे हमारी स्वाध्याय करने की प्रवृत्ति बढ़ी। हमारी आर्थिक स्थिति बहुत ही सामान्य थी। अपने ही गाँव के श्री मोहनलाल जी बलदेवा के बगीचे में मैं रोज काम किया करता था। उन्हीं के परामर्श से आजीविका चलाने के लिए मैं हैदराबाद पहुँच गया, और 'मॉडर्न हेयर कटिंग सलून' के मालिक पी. सीताराम जी की दुकान में काम करने लगा। यह दुकान सुलतान बाजार में खादी भण्डार से सटे हुए चौक से पहले पड़ती थी। हमारी दुकान से सटक रही डॉ. वामनराव जी येळ्नूरकर (आर्यमुनि वानप्रस्थी) का आयुर्वेदिक दवाखाना था। पालम कुला गाँव के सामाजिक सत्संगों और सह भोजों में शामिल होने के कारण हैदराबाद के अनेक कार्यकर्त्ताओं से मैं बहुत पहले से सुपरिचित था। इन सहभोजों में दलित भाई भी प्रसन्नता के साथ शामिल होते थे। समय-समय पर इनमें स्वामी नारायण रेड्डी, रामकृष्ण राव, विनायक राव और मुद्लियार जी ने भी हाजिरी लगाई थी। इन सहभोजों में केवल मेल-मिलाप ही नहीं, अपितु विचारों का भी आदान -प्रदान होता था।

हैदराबाद का वातावरण आपको कैसा लगा?-उन दिनों हैदराबाद की बहुसंख्य हिन्दू जनता पर निजाम मीर उस्मान अली खान के शासन का आतंक छाया हुआ था। हिन्दू-प्रजा के अधिकांश मौलिक-धार्मिक सामाजिक, एवं नागरिक अधिकार छीन लिये गए थे। एक तरफ बहादुयार जंग के नेतृत्त्व में 'मजलिस इत्तेहादुल मुसलमीन के अनुयायी धर्मांतरण के द्वारा हिन्दुओं को मुसलमान बना रहे थे, तो दूसरी तरफ कासिम रजवी के रजाकार हिन्दुओं पर बराबर जुल्म ढा रहे थे। ऐसे काल में हैदराबाद का आर्यसमाज आशा की किरण बना। उसने जन-मानस में स्फूर्ति का संचार किया, अन्याय का प्रतिकार कर उनमें जागृति एवं साहस का मन्त्र फूँका। नवयुवक हृदय सम्राट् पं. नरेन्द्र जी हम जैसे युवको के प्रेरणा-केन्द्र बने, जो आततायी निजाम और उसके निरंकुश शासन का अंत देखना चाहते थे। पंडित जी के मार्गदर्शन में जो युवक अपने प्राण हथेली पर रखकर क्रान्तिकारी कार्य करना चाहते थे, जाने-अनजाने मैं भी उसमें शामिल हो गया था। पं. नरेन्द्र जी के अतिरिक्त सर्वश्री स्वामी रामानन्द तीर्थ रामनायडू, वकील कोंडा लक्ष्मण बापू, महादेव सिंह, एन.एस. जायसवाल साहब,

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

रामाचारी, डॉ. मेलकोटे साहब, भाई काशीनाथ राव, रामकिशन राव आदि से मेरा सम्पर्क हुआ। श्री व्यंकटेश्वर राव जी तथा ये सब चर्चित नेता गण हमारी दुकान पर आते थे। हश्मतगंज चौराहे पर इन सब लोगों की मीटिंग भी बड़ी जबरदस्त होती थी। सभाओं में पं. नरेन्द्र जी का नाम सुनते ही हजारों लोग जम जाते थे।

आपने शस्त्रास्त्र चलाने का प्रशिक्षण कहाँ और किससे पाया?-सबसे पहले मैंने अपने ही पालम कुला गाँव में शस्त्रास्त्र चलाने का प्रशिक्षण प्राप्त किया। पं. नरेन्द्र जी के खास चेले पालम कुला के ही श्री निवासराव जी पटवारी नांदेड़ के मुबारक नामक मुस्लिम उस्ताद को दो साल के लिए हमें प्रशिक्षित करने के लिये ले आये थे यह बात हिन्दुओं पर मुस्लिमों का जुल्म शुरु होने से पहले की है। उस्ताद अच्छे-पहलवान थे। उनका रंग काला था। हमारे गाँव के खयाब नामक इंसान के जरिये श्री पटवारी जी उन्हें ले आये थे। उस्ताद ने हमें दो साल तक तमंचा-तलवार, चमड़े की बंदिश, दांड-पट्टा, कुश्ती के दाव-पेंच आदि का प्रशिक्षण दिया था।

बम बनाने, फेंकने और विस्फोट करने के सबक कहाँ पढ़े?-हमारा बम बनाने जितना दिमाग नहीं था, पर हमने बमों को बनते देखा, बम बनाने वाले व्यक्तियों के साथ रहकर उन्हें उनकी बताई गई सूचनाओं के अनुसार मदद करते रहे। व्यंकटराव के जरिये सुलतान बाजार के मोहनलाल जी बलदवा का परिचय पहले से था ही, बस, उनके मकान के परिसर में बम बनते थे। कासादाटा और कसरहट्टा में भी बम बनाये जाते थे। उन दिनों सुलतान बाजार में हमें काम करने के लिये और कुछ था नहीं। कहीं मीटिंग में हाजिर होते थे, तो कहीं झगड़ों से निपटते थे। कहीं रियाया पर हल्ला होता, तो पं. नरेन्द्र जी हमें उधर भेज देते थे। उन दिनों कोंठा लक्ष्मण बापू जी अंडरग्राउंड' थे। उस वक्त वे हम लोगों को भी मोहनलाल जी के यहाँ बुलाते थे, फिर टाइमिंग बम कैसे बनाना हम कुछ-कुछ उनके पास सीखे और देखे।

बहरहाल बम बनाने में मदद करते थे। बेगम बाजार के गोवर्धन शर्मा नामक आर्यसमाजी आयुर्वेद के डॉक्टर थे, विशेष रूप से उनसे और व्यंकटराव जी आदि से हमें और हमारे साथियों को बम बनाने और चलाने का बहुत कुछ प्रशिक्षण मिला। बम को यथास्थान रखना और फिर बत्ती से जलाना आदि। हमारे बीच में बम का गुप्त नाम कोड वर्ड 'लड्डू' था। हैदराबाद के गुरुकुल घटकेश्वर के संस्थापक पं. बंसीलाल जी व्यास जी की भी इन कार्यों में विशेष उपस्थिति रहती थी। 'लड्डूओं (बमों) को सुरक्षित और निर्दिष्ट स्थान पर प्राय: वे ही रखते थे। इस संदर्भ में श्री व्यंकटेश्वर राव बन्सीलाल व्यास जी की बहुत तारीफ करते थे।

पं. बन्सीलाल जी हमें नांदेड़ भी ले गये थे। हम उन्हें वहाँ 'पिता जी' के नाम से सम्बोधित करते थे। नांदेड़ में गुरुकुल घटकेश्वर की शाखा थी। आज जहाँ हिंगोली गेट के पास खादी भण्डार है, उसी स्थान पर गुरुकुल था। खादी भण्डार और उससे सटकर जो खुली जगह है, वह गुरुकुल घटकेश्वर की जगह है। यह स्थान वर्तमान में खालसा हाई स्कूल से संलग्न है। इस नांदेड़ गुरुकुल में पिता जी और अभयानन्द जी ने बम बनाये थे। कोई डॉक्टर थे, जो किसी गाँव में ले जाकर उन बमों को टैस्ट करते थे। अब उनका नाम मुझे याद नहीं आ रहा है। शायद वे डॉ. बन्सीलाल हों। नांदेड़ के आस-पास उन दिनों बहुत 'एक्शन हुए। नांदेड़ के डेप्युटी चीफ के साथ उस वक्त कुछ हंगामा भी हुआ था। वहाँ एक बार बम की आवाज होते ही आर्मी के लोगों ने बड़ों से बच्चों तक को पीटना शुरु किया था। उन्हीं दिनों नांदेड़ में १५ अगस्त १९४७ की आजादी का ऐलान सुना था। हम उन दिनों दस-पंद्रह दिन नांदेड़ में रहे। विशेषकर मराठवाड़ा के अड्डों पर और आर्यसमाजियों को बम 'सप्लाय' करने का काम 'पिता जी' ही करते थे। सन् ४५ के आगे १९४८ तक जितने भी बम ब्लास्ट के 'एक्टिविटीज' या 'एक्शन' हुए, वे मराठावाड़ा में या निजाम रियासत की सीमा से लगे सोलापुर एरिया में। बहुत से 'एक्शनस्' 'उमरखेड़' आदि स्टेट कांग्रेस के कैम्पों में भी हुए। बन्सीलाल जी व्यास उमरखेड़' कैंप के प्रारम्भिक संस्थाओं में से एक थे। चाहे आर्यसमाज का कैंप हो या स्टेट कांग्रेस का, दोनों ही कैंपों से बन्सीलाल जी व्यास बहुत गहराई से जुड़े हुए थे। इस बात की पूरी संभावना है कि व्यास जी ने उमरखेड़ कैंप में भी बम पहुँचाये होंगे। हाँ, एक बम परीक्षण की घटना याद आ रही है। बेगम बाजार हैदराबाद के डॉ. गोवर्धन शर्मा जी की कार से बन्सीलाल जी व्यास, अभयानन्द जी और मैं बम टेस्ट करने के लिए 'निगमपल्ली' (या-लिंगमपल्ली) गाँव के जंगल में गये थे। बहुत बड़ा आवाज हुआ था, जिससे हम सब लोग बहुत खुश हुए थे। बेगम बाजार-हैदराबाद के लक्ष्मण राव कलचरकर गोला-बारूद आदि धमाके का सामान मंगाते थे। सामान लाने के लिए मोहनलाल जी बलद्रवा पैसे देते थे। जीने के पास चौक में यह सामान बेचा जाता था। उस वक्त फलाना-फलाना व्यक्ति बारूद-बम बनाने का काम करते थे, अब उनके नाम याद नहीं आ रहे हैं। हमारे लक्ष्मणराव जी कलचरकर थे जोखिम भरा सामान हमें लाकर देते थे।

सबसे पहले बम का इस्तेमाल आपने कहाँ पर किया?-लगभग दस-बारह सितम्बर १९४७ की बात है। हैदराबाद के मापोगंडा एरिये में जहाँ लाल दरवाजा, शालीबंड़ा, माकलबंड़ा का जन्ना बावडी आदि का क्षेत्र है, कत्ले आम का ऐलान हुआ। यह ऐलान रजाकारों द्वारा खुले आम किया गया था। रजाकार लाल दरवाजे से कत्ले-आम करते आ रहे थे। काजन्ना बावड़ी की ओर से चंद लोग पं. नरेन्द्र जी के पास आये

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

और उनके सामने सिर पर आये संकट का बयान किया। पंडित जी के निर्देशानुसार श्री विश्वनाथ आर्य उसी रात बम के छोटे-छोटे तोहफे लाये। 'एक्शन' करने के लिए नरेन्द्र जी ने मुझे और व्यंकटराव को घटना स्थल पर भेजा। लाल दरवाजा, काजन्ना बावड़ी की ओर से रजाकारों का हुजूम आ रहा था। बस, हम दोनों ने उस दिशा में बम फेंक दिये। धमाके के साथ रजाकारों में भगदड़ मच गई। लम्बी-लम्बी ड्रेसें पहनें, हिन्दुओं को गाली-धमकी देने वाले रजाकार तितर-बितर हो गये। सुबह आकलगंडा पुलिस स्टेशन में पाञ्च-छः रजाकारों की लाशें दिखाई दीं। सियासत के पेपर में खबर छपी कि 'हिन्दुओं को खत्म किया गया, और हमारा कलई घर का एक बूढ़ा मर गया।' हालांकि रजाकार मारे गये थे। हम दोनों तो उसी रात चमत्कार पूर्ण ढंग से बाल-बाल बचके, खुदा परवरदिगार की रहम से सही-सलामत लौट आये थे। इस प्रकार सबसे पहले हमने बम का इस्तेमाल लाल दरवाजे की ओर से आती रजाकारों की भीड़ पर किया था।

और किन-किन क्रान्तिकारी 'एक्शनों में आपने भाग लिया?-जून १९४७ की बात है। भारत के कई प्रान्तों से महाजरीन (मुस्लिम-शरणार्थियों) से भरी हुई अनेक ट्रेनें नागपुर, बल्लारशाह के मार्ग से हैदराबाद आ रहीं थी। रियासत में आने वाले महाजरीन वास्तव में पीड़ित शरणार्थी निर्वासित हैं या अन्य किसी उद्देश्य से इधर आ रहें हैं, इसकी वास्तविक जानकारी हमारे क्रान्तिदल ने गुप्त रूप से प्राप्त की। पता चला कि रियासत में आने वाले महाजरीनों के सूबों में कोई गड़बड़ नहीं, अपितु पूरी तरह शान्ति है। हैदराबाद के इत्तेहादुल मुसलमीन के कार्यकर्त्ताओं ने हैदराबाद को पूरी तरह इस्लामिया सल्तनत बनाने के लिये इन्हें दावत दी है। कहा जाता था कि बारह लाख से भी अधिक मुस्लिम महाजरीन निजाम के प्रोत्साहन से हैदराबाद में आकर बस रहे हैं। उनके आमद (आगमन) को रोकने के लिए हमारे क्रान्तिकारी दल ने रेलगाड़ी गिराने का निर्णय लिया। जी. नारायण स्वामी लाला गुडा रेल्वे लोको ऑफिस में काम पर थे। उनसे गाड़ियों के आने-जाने के समय के साथ-साथ रेल्वे के फिश प्लेट निकालने के उपकरण भी प्राप्त हुए। बल्लाहारशाह से महाजरीन की स्पेशल ट्रेन निकलने का जब समाचार मिला, तो निर्धारित समय पर सर्वश्री नारायण पवार, जी. नारायण स्वामी, पं. विश्वनाथ और उनके दो चेलों के साथ मैं भी घटकेश्वर और मौलाली रेल्वे स्टेशन के बीच रेल्वे के बोल्ट निकालने चला गया। एक ओर पं. विश्वनाथ और दूसरी ओर जी. नारायण स्वामी आने-जाने वालों पर नजर रख रहे थे। सुबह नौ और दस के बीच फिश प्लेट निकालने का काम पूरा करके हम सब वहाँ से एक ओर चल पड़े। अभी कुछ दूरी पर गये ही थे कि रेल्वे लाइन चैक करने वाला गैंगमैन आता दिखाई दिया, और फिश प्लेट निकली देख वह परेशान हो गया। हैदराबाद की दिशा में उसने पहले लाल रंग का बैनर लगाया और फिर घटकेश्वर स्टेशन की ओर जाकर गाड़ी को स्टेशन पर ही रुकवा दिया। हमारा उद्देश्य और प्रयास निरर्थक हो जाने से हमें बेहद दुःख हुआ।

इसी प्रकार हमने एक बार निजाम के अस्तबल (अश्वशाला) को टाईम बम से जलाने का सफल प्रयास किया था। घटना जुलाई १९४७ की है। पेटला बुर्ज के पास मूसा नदी के किनारे निजाम रिजर्व पुलिस की अश्वशाला थी। जिसकी छत लकड़ी और घास-फूस की बनी हुई थी। घोड़े चालीस से भी ज्यादा थे। हमारे क्रान्ति-दल के एक प्रेरणा स्तम्भ श्री बाल कृष्ण थे। नारायण जी पवार से मेरा सबसे पहले परिचय बालकृष्ण जी के घर पर ही हुआ था। उन्होंने ही अश्वशाला जलाने की जिम्मेदारी मुझे और पवार जी को सौंपी थी। हम दोनों को अरब चाउसों की ड्रेस पहनने के लिये दी गई थी। वेश बदलकर अंधेरी रात में हम दोनों अश्वशाला की छत पर टाइम बम रख आये थे। एक घण्टे के निर्धारित समय के बाद जब बम फूटा, तो छत आग से झुलस गई और घोड़ों का भी आग से नुकसान हुआ। अग्निशामक दल आग बुझाने आया। अगले दिन अश्वशाला के चारों ओर पुलिस का पहरा बैठा नजर आया।

निजाम बम काण्ड से सम्बन्धित निजी संस्मरणों को थोड़ा विस्तार से प्रस्तुत कीजिए-हमारे क्रान्तिकारी दल के नौ सदस्य निजाम बम काण्ड से सम्बन्धित थे। सर्वश्री बालकृष्ण, नारायण पवार, जगदीश आर्य, कोंडा लक्ष्मण बापू जी वकील, नारायण स्वामी, विश्वनाथ (भालैया), रेड्डी पोचाथम्, भीष्मदेव और स्वयं मैं। इनमें मुझे तथा पवार जी को छोड़कर शेष सात लोगों को निजाम पुलिस आखिर तक गिरफ्तार करने में असमर्थ रही। निजाम पर बम फेंकने की साक्षात्-प्रत्यक्ष कार्यवाही करने के लिए जिन तीन व्यक्तियों का चयन किया गया था, उसमें मेरे और पवार जी के अतिरिक्त जगदीश आर्य का समावेश था। श्री नारायण पवार इस काण्ड के प्रमुख गायक थे। इस काण्ड के प्रमुख प्रेरक श्री बालकृष्ण जी थे। इन्होंने ही सबसे पहले क्रान्ति दल के सामने निजाम की हत्या करने का विचार रखा था और इस कार्य हेतु आवश्यक हथियार खरीदने के लिए अपनी पत्नी के जेवरात भी पवार जी के हवाले सुपुर्द कर दिये थे।

क्रान्तिकारी दल की आखिरी बैठक चार दिसम्बर उन्नीस सौ सैंतालीस को राम मन्दिर के समीप हैदराबाद के शंकरराव कुलकर्णी के निवास स्थान पर हुई। एक प्रतिज्ञा पत्र तैयार किया गया, जिसमें यह स्पष्ट किया गया कि निजाम को खत्म करने का निर्णय क्यों लिया गया है? इस प्रतिज्ञा-पत्र पर क्रमशः नारायण पवार, जगदीश आर्य और मैंने अपनी-अपनी बायें हाथ की पहली उंगली को खुद काटकर खून से हस्ताक्षर किये। इसके पश्चात् एक बम, एक रिवाल्वर और एक विष की शीशी हमें मिली। समय पड़ने पर जहर से आत्माहुति करने का निर्णय लेना था। तत्पश्चात् सुलतान बाजार स्थित वैदिक चित्रशाला में

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

जाकर हमने अपना ग्रुप फोटो खिंचवाया।

निजाम प्रतिदिन शाम किंग कोठी से निकलकर पुराने हैदराबाद में स्थित अपनी माता जी की मजार तक जाकर वापिस लौटता था। उसी किंग-कोठी रोड़ पर निजाम को खत्म करने की दृष्टि से नारायण पवार आलसेंट्स स्ट्रीट मोड़ पर, जगदीश आर्य बोगुलकुंटा रोड़ पर (वर्तमान भ्रामर स्कूल के मुख्य फाटक पर), तथा मैं ताजमहल होटल के सामने मेथोडिस्ट स्कूल गेट पर तैयार खड़े थे। किंगकोठी से करीब पांच बजे के लगभग निजाम निकले। ज्यों ही वे आलसेंट्स गली की मोड़ पर आये तो श्री नारायण पवार ने निजाम की कार पर बम फेंका, पर बम कार के दरवाजे से लगकर नीचे सड़क पर आ गिरा। धमाके की आवाज सुनाई दी। बम का प्रयोग असफल होते ही निजाम की कार वहीं से वापिस लौट गई। यदि वह आगे आती तो हम दोनों में से किसी एक के निशाने का वह निश्चित ही शिकार हुई होती। धमाके के बाद कुछ समय तक हमने निजाम के कार की प्रतीक्षा की। अन्त में निजाम की जीवन-लीला का पटाक्षेप हुआ समझकर हम वहाँ से फरार हो गये। उस समय हम यह सोच ही नहीं पाये कि पवार जी का बम विफल हो गया है, अन्यथा हम घटनास्थल पर जरूर गये होते। खैर, मैं मैथोडिस्ट स्कूल गेट से काचीगुड़ा रेल्वे स्टेशन पहुँच गया, और वहाँ से अपने जन्म गाँव पालमकुला आ पहुँचा।

निजाम को खत्म करने के इरादे से जिस साइकिल पर मैं वर्तमान ताजमहल होटल के सामने पहुँचा था, वह साइकिल मेरी गिरफ्तारी का कारण बनी। इस साइकिल के हैंडल पर 'एस.के. २०' खुदा हुआ था। मैं हरिशचन्द्र हेड़ा के छोटे भाई श्री किशन हेड़ा की दुकान से यह साइकिल लाया था। समय के अभाव के कारण साइकिल के हैंडल पर खुदे हुए अक्षर सोंद से घिसकर मिटा नहीं पाया। साइकिल के चर्चित नम्बर से पुलिस ने मेरे गाँव का पता लगा लिया, और उसी चार दिसम्बर की रात बारह बजे के लगभग पुलिस ने मुझे गिरफ्तार कर लिया। कुछ समय के बाद नारायण पवार जी से २५ कदम की दूरी पर मैं भी पुलिस लॉकअप में बन्द हो गया। अब हम दोनों पुलिस कमिश्नर के कार्यालयीन परिसर में थे, पर सात दिसम्बर तक एक-दूसरे को दिखाई नहीं दिये, क्योंकि दोनों के बीच में लॉकअप के ऊपर एक कम्बल ढका हुआ था, वह सात दिसम्बर को अचानक नीचे गिर पड़ा। मजिस्ट्रेट के सामने जब हमें पेश किया गया तो हम दोनों ने इल्जाम कबूल कर लिया। साथ में यह भी स्वीकार किया कि देश की दुर्दशा को देखकर बम की कार्यवाही करना हमें जरूरी प्रतीत हुआ। सेशन कोर्ट जस्टिस मुर्तजा अली खाँ के इजलास पर पैरवी करने के लिए सरकार की तरफ से बैरिस्टर रामलाल किशन को नियुक्त किया गया था। कोर्ट ने पवार जी को फाँसी और मुझे आजीवन कैद की सजा सुनायी। हम दोनों की तरफ से निजाम के हाईकोर्ट तथा जुडिशियल कमेटी में श्री बी.एन.चौबे वकील ने बहस की। इन दोनों अदालतों ने भी सेशन कोर्ट के फैसले को ही बरकरार रखा।

हैदराबाद मुक्ति संग्राम के बाद बैरिस्टर विनायकराव विद्यालङ्कार तथा पं. नरेन्द्र जी के प्रयत्नों से हमारे क्रान्तिदल के सभी सदस्यों पर जो वारंट जारी किये गये थे, वह रद्द कर दिये गये। निजाम रियासत के समाप्त होने के छः मास बाद भी हम दोनों को डबल गंजियों में रखा गया था। शरीर पर काली लकीरों वाली ड्रेस और पैरों में खड़े डंडे लगे हुए थे। हमने जेल अधीक्षक को लिखा कि हमें राजनीतिक कैदियों की सुविधाएँ दी जाएँ, पर हमारी बात अनसुनी कर दी गई। अपनी बातें मनवाने के लिए जेल में तीन बार हमने भूख हड़ताल की। अंतिम बार में लकोटे जी के आश्वासन पर उन्नीस दिन होने के बाद भूख हड़ताल समाप्त की। जी. नारायण स्वामी ने प्रमुख व्यक्तियों और पत्रकारों का हमारी जेल यातनाओं और ढलते स्वास्थ्य की ओर ध्यान आकृष्ट कराया। स्वामी जी ने डॉ. मेलकोटे, स्वामी रामानन्द जी तीर्थ, विनायक राव विद्यालङ्कार और पं. नरेन्द्र जी से बार-बार मिलकर हमारी रिहाई के प्रयत्न किये। हमें जेल से रिहा करने के लिए हमारी ही सरकार ने हम दोनों से क्लेमेंसी (गेर्सी) पिटीशन अर्थात् माफीनामा लिखने के लिए पत्र द्वारा संदेश भेजा, जिसे हम दोनों ने अस्वीकार कर दिया। अन्त में सरदार पटेल के हैदराबाद आने पर डॉ. मेलकोटे जी के घर पर काँग्रेस कार्यकर्त्ताओं की बैठक आयोजित की गई थी। इस बैठक में शामिल होने के लिए नारायण स्वामी जी ने अपने और पवार जी के पिता जी के लिए दो पास स्वामी रामानन्द जी तीर्थ से प्राप्त किये। बैठक में अनुकूल समय मिलने पर पवार जी के पिता श्री पंढरीनाथ जी ने सरदार पटेल जी से कहा 'अब आप स्वाधीन होकर अपनी सरकार चला रहे हैं, फिर भी स्वाधीनता संग्राम में सिर हथेली पर लेकर चलने वाले मेरे दो बेटे आपकी जेलों में क्यों बंद हैं? हम दोनों स्वाधीनता सैनिकों की रिहाई की समस्या सरदार पटेल जी के ध्यान में आ गई। तत्पश्चात् १० अगस्त १९४७ को हैदराबाद की चंचलगुड़ा सैंट्रल जेल से किसी भी प्रकार की शर्त हमारे सामने न रखते हुए हमें रिहा कर दिया गया। आश्चर्य है कि 'पुलिस एक्शन' के लगभग ग्यारह महीने बाद और वह भी सरदार पटेल के हस्तक्षेप के पश्चात् हमें जेल से रिहा किया गया। खैर, फिर भी हमें इस बात की खुशी है कि भेड़-बकरियों की तरह गुलामी का जीवन जीने की अपेक्षा हम धैर्य और साहस के साथ अपने प्राणों की परवाह न करते हुए स्वाधीनता का श्रेयस्कर जीवन जी सके। मैं अपनी जीवन संगिनी और अपने तीन महीने के मासूम बच्चे की चिंता छोड़कर निजाम बम काण्ड में शामिल हुआ था।

क्या आपके जीवन-परिचय से सम्बन्धित कुछ लेख आदि प्रकाशित हुए हैं?-हाँ, आर्यसमाजी खंडेराव जी कुलकर्णी,

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

सोशलिस्ट पार्टी के लीडर महादेव सिंह जी और कम्युनिस्ट पार्टी के उचमपल्ली सुंदरैया जी ने हमारी जीवनी पर कलम चलायी है। कुलकर्णी जी ने हिन्दी में और सुंदरैया जी ने तेलुगु में हमारी जीवनी पर लेख लिखे हैं।

सम्पर्क-ऋषि उद्यान-संग्रहालय एवम् अनुसन्धान भवन, पुष्कर मार्ग, अजमेर (राजस्थान) पिन-३०५००१

कृपया ''परोपकारी'' पाक्षिक शुल्क, अन्य दान व वैदिक-पुस्तकालय के भुगतान इलेक्ट्रोनिक मनीऑर्डर से ना भेजें

निवेदन है कि ई.एम.ओ. द्वारा ''परोपकारी'' शुल्क, अन्य दान व वैदिक पुस्तकालय के पुस्तकों के भुगतान भेजने का कष्ट न करें, क्योंकि इस फार्म में न तो ग्राहक संख्या का उल्लेख होता है और न ही पैसे भेजने के उद्देश्य का। सभा कर्मचारी उचित खाता शीर्ष में राशि नहीं जमा कर पाते हैं क्योंकि पैसे भिजवाने का उद्देश्य ज्ञात नहीं हो पाता है। इस मनीऑर्डर फार्म में संदेश का स्थान रिक्त रहता है। कृपया साधारण एम.ओ. द्वारा ही राशि भिजवाने का कष्ट करें तथा फार्म में संलग्न समाचार वाली स्लिप पर ग्राहक संख्या, दान सम्बन्धी सूचना व पुस्तकों के विवरण का अवश्य उल्लेख करें। **यदि ई.एम.ओ. से भेजना है तो संपूर्ण स्पष्ट विवरण लिखा पत्र भी अलग से अवश्य प्रेषित करें।** **-व्यवस्थापक**

ई-मेल द्वारा परोपकारी निःशुल्क

परोपकारी के पाठकों को प्रसन्नता होगी कि अब परोपकारी ई-मेल द्वारा भी भेजी जा रही है। परोपकारिणी सभा की वेब-साइट पर तो परोपकारी पहले से ही निःशुल्क उपलब्ध है। विश्व में कहीं भी कोई भी इसे वेब-साइट पर पढ़ सकता है। इसके साथ ही अब यह सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है कि परोपकारी आपके पास ई-मेल द्वारा पहुँच जाये। इससे यह पत्रिका शीघ्र व अधिक सुन्दर रूप में आप तक पहुँच सकेगी। आप जहां भी रहें, कभी भी पढ़ना चाहें, यह आपके पास रहेगी। डाक की अव्यवस्था से छुटकारा मिल सकेगा। यह आपको नियमित मिलती रहेगी। इससे रासायनिक रंगों व कागज का उपयोग भी कम होगा, खर्च भी घटेगा। अत: पाठकों से अनुरोध है कि **कृपया अपना ई-मेल पता सभा को ई-मेल से भिजवा देवें।** आप जिन इष्ट-मित्रों, परिजनों व संस्थाओं को परोपकारी भिजवाना चाहते हैं, उनके ई-मेल पते भी भिजवा देवें, उन्हें भी यह निःशुल्क भेज दी जायेगी। ई-मेल-psabhaa@gmail.com

व्यवस्थापक

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

प्रेम-एक अनुपम अनुभूति

-सुकामा आर्या

संभल के चल कुचल जाए न चींटी पाँव में,
आदमी को बेजुबानों से भी उल्फ़त चाहिए।

प्रेम एक अनुपम अनुभूति है जिसे शब्दों में नहीं बयान किया जा सकता। चाहे कोई बच्चा हो, युवा हो, बूढ़ा हो, गृहस्थी हो, वानप्रस्थी हो, हर स्थिति में, हर अवस्था में मनुष्य को प्रेम की आवश्यकता है। हाँ इस आवश्यकता की मात्रा में कमी या बढ़ोतरी अवश्य हो सकती है। पर कोई भी शख्स इसकी मूलभूत आवश्यकता को नकार नहीं सकता। गुरु को शिष्यों से, माँ-बाप को बच्चों से, पति को पत्नी से, मालिक को नौकर से सबको एक दूसरे से स्नेह की, प्रेम की अपेक्षा रहती है। विचित्र बात यह है कि हम इसे लेने की अपेक्षा तो रखते हैं पर देने में बड़े कंजूस सिद्ध होते हैं। प्रेम का एक नियम है-The More you give the more you get.

प्रेम को वासनात्मक सम्बन्धों की संकीर्णता में जकड़ कर मत देखें। यह तो एक अत्यन्त विशाल, विस्तृत परिधि वाला है। योगी के लिए सारा संसार प्रेममय हो जाता है, जब वो सारे विश्व में अपने को समाहित हुआ देखता है तो अपने पराये का भेद मिट जाता है। सभी को अथाह प्रेम देने का भाव उसमें समाहित हो जाता है।

'जिसका जितना हो दामन यहाँ पर, उसको सौगात उतनी मिले' पात्रता अपनी-अपनी होती है। ज्यादा प्रेम को ग्रहण करने के लिए हमें पात्र को भी बड़ा करना होता है। प्रेममय स्वभाव तब बनता है जब हम अपना गुरूर छोड़ देते हैं, दम्भ छोड़ देते हैं। दम्भ के कई कारण हो सकते हैं-विद्या, सम्पत्ति, आस्था, अवस्था, पद-प्रतिष्ठा। इन सब वैभवों को ईश्वर समर्पण कर देने से साधक निश्छल प्रेम से भर जाता है। उसके हृदय में प्रेम की हिलोरें ठाठें मारने लगती हैं-वो जान लेता है कि-**''जिंदगानी है चंद रोज़ा, चलो न इतना भी सर उठा के, कि उस खुदा ने हज़ारों चेहरे बिगाड़ डाले बना-बना के।''**

जब इस संसार की नश्वरता को, क्षण भंगुरता को मनुष्य समझ लेता है तो स्वतः ही द्वेष, अप्रियता, अप्रीति के भाव उसको छोड़कर कोसों दूर चले जाते हैं। उसका स्वरूप ही प्रेममय हो जाता है-जो एक अनुभूति से कहीं विशाल होता है। तब यह दुनिया उसके लिए स्वर्ग बन जाती है। हरेक ज़र्रे-ज़र्रे से उसकी मुहब्बत, उल्फ़त उसे साधना के शिखर पर ले जाती है। एक अत्यन्त समीपता, सहजता, आत्मीयता का भाव हृदय में उत्पन्न होता है। जो अत्यन्त सुख का एहसास करवाता है। ऐसी स्थिति में कुछ भी अप्राप्य नहीं रह जाता है, कुछ भी असाध्य नहीं रह जाता है। जब सब तरफ हम एकत्व को महसूस करते हैं तो आजकल की व्याधियाँ जैसे सूनापन, विषाद, अवसाद हमें छूकर भी नहीं जा सकते। इसलिए इस प्रेम को खुले हृदय से दूसरों को दें इस बात से अनभिज्ञ रह कर कि वो आपके प्रेम को स्वीकार करेंगे या नहीं। दूसरों को प्रेम देना हमारे स्वास्थ्य के लिए, हमारी मानसिक शान्ति व उच्च साधन स्तर के लिए आवश्यक है यह बात अवश्य मन में रहनी चाहिए। पहले-पहले इसे प्रयास पूर्वक करें, फिर धीरे-धीरे स्वतः ही यह स्वभाव का अंग बन जाता है।

हमें प्रेम को प्रदर्शित करना भी आना चाहिए। बहुत से व्यक्ति देखे जाते हैं जो यूँ तो प्रेम से भरपूर होते हैं परन्तु प्रदर्शन के समय भाव शून्य हो जाते हैं। सो दूसरे को अपने प्रेम की अभिव्यक्ति करवा सकना भी एक कौशल है। जो लोग अधिक समाज में, व्यवस्था में विचरण नहीं करते, उनका यह व्यवहारिक पक्ष कमजोर होता है। पर चूंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है सो प्रेम के व्यवहारिक पक्ष को सीखने, समझने व जीवन में उतारने का प्रयास करना चाहिए। दूसरा व्यक्ति आपके हृदय के भावों को जान पाने में असमर्थ होता है परन्तु आपके व्यवहार से, शब्दों से, वाणी से आपके स्नेह को, प्रेम का अनुभव करता है। सो मुख्यतः वाणी तो प्रेम से ओत-प्रोत होनी ही चाहिए-

ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोए,
औरन को शीतल करे, आपहिं शीतल होये।

जैसे एक व्यक्ति पानी में डुबकी लगाकर बाहर आता है तो जल से ओत-प्रोत होता है उसी तरह हर क्षण अनुभव करें कि आप भी प्रेम से, आनन्द से ओत-प्रोत हैं। ऐसे प्रयास से आपकी वाणी, व्यवहार, आपकी अभिव्यक्ति प्रेममय हो जाएगी। थोड़ा सा प्रयास अवश्यम्भावी है।

ध्यान में प्रेम की अनुभूति स्पष्ट होती है। उस ईश्वर के प्रति असीम प्रेम व स्वयं के प्रति भी यह एहसास स्पष्ट होता है। ध्यान से देखें, तो कोई दूसरा कितना ही प्रेम क्यों न दें-स्वयं को आत्म संतुष्टि स्वयं के प्रेम से ही होती है। उस समय स्वयं की विशेषताओं को, गुणों को सामने लाएँ ताकि स्वयं के प्रति हम अथाह प्रेम जागृत कर सकें। जब हम दूसरों से प्रेम की मांग करते हैं-तो हम इसे खत्म कर रहे होते हैं। हम अलग-अलग लोगों से अलग-अलग तरीकों से प्रेम करते हैं-पत्नी को, पति को, भाई को, गुरु को, माँ को, पिता को, मित्र को अलग-अलग तरह से प्रेम अभिव्यक्त करते हैं। परिभाषा ये कहती है कि दूसरे जैसे हैं उन्हें वैसे ही प्रेम करें। यह दैवीय प्रेम है। जो बिना किसी शर्त के होता है। मैं तुम्हें प्रेम करूँगा, अगर तुम मेरी बात सुनोगे तो, या तुम ये करोगे तो-यह तो शर्तें हो गईं Love is uncoditional.

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

प्रकृति भी आपको प्रेम करती है, हर तरह आपका भरण-पोषण कर रही है। ईश्वर भी आपको असीम प्रेम करता है। बचपन से लेकर आज तक सारी व्यवस्थाएँ देकर, सगे सम्बन्धी देकर, साधन देकर वह अपने प्रेम को प्रदर्शित ही तो कर रहा है। जरूरत है उसके प्रेम को समझने की एवं स्वीकार करने की।

वो ही प्रेम का अंश जब हम विश्व में देते हैं, तो हम प्रेम का स्रोत्र बन जाते हैं-हम विश्व में शान्ति, खुशहाली लाने में सहयोगी की भूमिका निभाते हैं, प्रेम शून्य जीवन को हम प्रेम से परिपूर्ण कर पाते हैं। आइये संकल्प लें कि आज से हम यथासम्भव प्रयास करें कि जो भी जीव, प्राणी हमारे सम्पर्क में आए हमारे प्रेम की सुगन्धि से उसका जीवन भी महक जाए।

-ऋषि उद्यान, अजमेर।

न्याय-दर्शन का अध्यापन

महर्षि गौतम प्रणीत **न्याय-दर्शन** और उस पर लिखा **वात्स्यायन-भाष्य** प्रमाण व अर्थतत्त्व को समझने की प्रक्रियाओं का सर्वाङ्गपूर्ण विवरण प्रस्तुत करता है। सभी वैदिक-अवैदिक दर्शनों को अपने मान्य सिद्धान्त प्रस्तुत करते समय इस पद्धति का प्रयोग करना अपेक्षित होता है। न्याय-दर्शन का मुख्य प्रतिपाद्य विषय 'प्रमाण' है। 'प्रमाण' को ठीक प्रकार जानने से ही तत्त्वनिश्चय ठीक हो पाता है, तभी मुक्ति का मार्ग भी प्रशस्त हो पाता है। प्रमाण ज्ञान से चिंतन-विचार की प्रक्रिया ठीक हो पाती है, नहीं तो अनजाने में मिथ्या सिद्धान्त गले पड़ जाते हैं। न्याय-दर्शन के अध्ययन से किसी भी बात की परीक्षा-समीक्षा की सामर्थ्य बढ़ती है और उचित-अनुचित का निर्णय सरलता-शीघ्रता-शुद्धता से हो पाता है। इस प्रकार यह शुद्ध ज्ञान की प्राप्ति में अत्यन्त सहायक होता है।

वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़, गुजरात में **आचार्य सत्यजित् जी** (ऋषि उद्यान, अजमेर) द्वारा कृष्ण जन्माष्टमी (भाद्रपद कृष्णपक्ष अष्टमी २०७०, २८ अगस्त २०१३) से इसका विधिवत् नियमित संपूर्ण अध्यापन कराया जायेगा। यह दर्शन १०-११ महीनों में जून-जुलाई २०१४ तक पूर्ण होगा। इस बीच प्रत्येक अध्याय की लिखित परीक्षा भी ली जायेगी। कुल ५ परीक्षाएँ होंगी। इनमें ७५ प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वालों को '**न्यायाचार्य**', ६१ से ७५ प्रतिशत तक अङ्क वालों को '**न्याय-विशारद**' व ५१ से ६० प्रतिशत तक अङ्क वालों को '**न्याय-प्राज्ञ**' की उपाधि दी जायेगी। इस कक्षा में संस्कृत से परिचित साधक प्रकृति के ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थी, संन्यासी पुरुष व महिलाएँ भाग ले सकते हैं। इसमें बुद्धिमान्, स्वस्थ, अपने कार्यों को स्वयं करने में समर्थ, सेवाभावी, अनुशासन में रह सकने वाले अधिकतम २० पूर्णकालिक व्यक्तियों का स्थान है।

इस काल में समय-समय पर स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक का उपदेश-आशीर्वाद व सान्निध्य भी प्राप्त होता रहेगा। बीच-बीच में विभिन्न विद्वानों द्वारा अन्य विविध विषयों पर भी कक्षा एवं उपदेश होते रहेंगे। ब्रह्मचारियों संन्यासियों व अन्य असमर्थों हेतु निवास व भोजन व्यवस्था नि:शुल्क है। समर्थ प्रतिभागी इच्छानुसार सहयोग कर सकते हैं। माताओं-बहनों के लिए निवास की पृथक् व्यवस्था रहेगी। **सम्पर्क**-९४१४००६९६१ (आचार्य सत्यजित्) **रात्रि ८.०० से ८.३०**। **पता**-वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़, पत्रालय-सागपुर, जिला-साबरकांठा, गुजरात-३८३३०७, ईमेल-vaanaprastharojad@gmail.com, styajita@yahoo.com

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

शतहस्त समाहर सहस्रहस्त सं किर

(अथर्ववेद ३.२४.५)

(सौ हाथों से कमाओ, हजार हाथों से दान करो।)

पीड़ितों की सहायता के लिए अपने हाथ बढ़ाइये

आप सबको विदित है कि देश के अनेक भागों में बाढ़ का प्रकोप चल रहा है, विशेष रूप से उत्तराखण्ड में बाढ़ का भीषण प्रकोप हुआ है। नदियों के किनारे के अनेक नगरों के भवन गिर गए हैं। पहाड़ों में जल के प्रवाह में अनेक गाँव के गाँव बह गये हैं। यातायात व संचार व्यवस्था टूट गई। जिन लोगों के घर बह गये हैं, जिनके परिजन बिछड़ गये हैं, जो आज जीवन-यापन के साधनों का अभाव झेल रहे हैं, उन्हें आवास, भोजन, चिकित्सा के साधनों की अत्यन्त आवश्यकता है।

गरीब असहाय लोगों तक पहुँच कर उनकी सहायता, सहयोग करना, सभी देशवासियों का कर्त्तव्य है। इस कार्य के लिए परोपकारिणी सभा का सेवादल उत्तराखण्ड के इन बीहड़ क्षेत्रों में पहुँच गया और युवा लोग सेवा कार्य में जुट गये हैं।

हम सब मिलकर इस कार्य को आगे बढ़ायें। अतः हमारा सबका कर्त्तव्य है तन-मन-धन से इस कार्य में सभा की सहायता करें। आप जितनी शीघ्रता से अपना सहयोग प्रदान करेंगे हम उतनी शीघ्रता से उसे पीड़ितों तक पहुँचा सकेंगे।

आप अपना धन-बाढ़ पीड़ित सहायता कोष में भेजें। धन भेजने का पता निम्न प्रकार है-

१. बैंक खाता संख्या - 091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक खाता संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

जो कार्यालय में आकर देना चाहे वे कार्यालय समय में १०.३० से ५.३० बजे तक कार्यालय परोपकारिणी सभा, दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर, राज. पर देवें। अन्य समय में ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर सम्पर्क कर अपना सहयोग जमा करा सकते हैं।

जो बैंक में राशि जमा कराना चाहें वे उपरोक्त पते पर जमा करा सकते हैं।

दिल्ली व आसपास के लोग अपनी सहायता निम्न पते पर दे सकते हैं-

श्री सत्यानन्द आर्य,
रोड़ सं. ४६-ए, आर्यसमाज मन्दिर,
पंजाबी बाग पश्चिम,
दिल्ली।

एवं सहयोग जमा कराकर रसीद प्राप्त कर सकते हैं।

आपके सहयोग की प्रतीक्षा में **परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

सम्पर्क : दूरभाष-०१४५-२४६०१६४, ईमेल-psabhaa@gmail.com

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

पं. आत्माराम विश्वनाथः मॉरिशसीय हिन्दी आन्दोलन के सैनानी

-प्रहलाद रामशरण

''फ्रेंचों ने मॉरिशस को आबाद किया था इस कारण वे इस पर अपना हक जमाते हैं और इसी प्रकार की दलील हमेशा पेश करते हैं। यह बात असत्य भी नहीं है। अंग्रेजों ने भारतीय सैनिकों तथा द्रव्य की सहायता से इस टापू पर अधिकार किया था, इसलिए हिन्दू प्रजा का इस पर कोई दावा है या नहीं इस प्रश्न का उत्तर हमारे विचार से अस्तिपक्ष में ही देना होगा। इसके सिवा मॉरिशस में आज जो सोना-चांदी का धुँआ निकल रहा है वह भी भारतीय जनता के परिश्रम का ही फल है। यह भी नहीं भूलना चाहिए।''

उपर्युक्त उद्धरण पं. आत्माराम विश्वनाथ द्वारा लिखित ''मॉरिशस का इतिहास'' की भूमिका से लिया गया है। यह विचार १९२१ में व्यक्त किया गया था। इतिहास की इस अवधारण का विश्लेषण किया जाए तब पं. आत्माराम के ऐतिहासिक पकड़ की सराहना करनी ही होगी। वास्तव में इस अवधारणा से बढ़कर आजतक हमने कुछ नहीं लिखा। तब क्या इतिहास के छिछलेपन में ही अब तक तैर कर हमने अपने को धन्य माना है?

पं. आत्माराम विश्वनाथ कौन थे? इसका उत्तर जानने के लिए हमें उनकी पुस्तकों का अवलोकन करना होगा, क्योंकि मॉरिशस के हिन्दी आन्दोन के इस सैनानी पर बहुत कंजूसी से कलम चलाई गई है। मणिलाल डॉक्टर के निर्देश पर ''हिन्दुस्तानी'' के सम्पादन के लिए सन् १९१२ ईसवी में पं. आत्माराम मॉरिशस पधारे थे। यहाँ उन्होंने कालक्रम से पांच पत्रिकाओं का सम्पादन किया। हिन्दु लौकिक विवाह की मान्यता के लिए संघर्ष किया। प्रथम विश्व युद्ध के समय देश में ''वन्दे मातरम्'' भारतीय राष्ट्रगीत के जरिए हिन्दुओं में नवजीवन का संचार किया। संक्रान्ति, दिवाली आदि महोत्सवों को सामूहिक रूप से मनाने का सिलसिला चलाया। सन् बीस से पहले आत्मराम ने मॉरिशस के हिन्दू-मुस्लिम भाइयों की विभिन्न मांग सम्बन्धी अर्जियों को लिखकर सरकार तक पहुँचाया था। वे प्रवासी भारतीयों के शुभचिंतक थे और १९१२ से १९५५ तक उन्होंने तन-मन-धन से उनकी सेवा की थी।

पं. आत्माराम एक सुयोग्य लेखक, सशक्त पत्रकार, सुलझे हुए इतिहासकार, सुरुचिपूर्ण निबन्धकार, कट्टर समाज सुधारक, जाति-पाति, बाल-विवाह और दहेज-प्रथा के उन्मूलक, स्त्री-शिक्षा के पक्षपाती, असत्य और आडम्बर के आलोचक, हिन्दी-आंदोलन के सहज प्रहरी अैर हिन्दुत्व के पक्षपाती थे। पं. आत्माराम का व्यक्तित्व उत्तम था। वे स्पष्टवादी, सच्चरित्र, सहृदय, स्वतन्त्रप्रिय और हमेशा सफेद पोशाक में दिखाई देते थे। उनका जीवन सादापन का नमूना था। वे शाकाहारी, कर्मशील और अपने उज्ज्वल और प्रेरणादायक विचार और सुलझे सिद्धान्त के पक्के थें वे अविवाहित थे। इस देश के भारतीयों को धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रगति के लिए वे हमेशा अपना सुझाव दिया करते थे।

जन्म और शिक्षा-पं. आत्माराम का जन्म सन् १८८१ ईसवी में महाराष्ट्र के पूना शहर में हुआ था। मास और तिथि का कहीं उल्लेख नहीं मिलता। उनकी शिक्षा वहीं हुई थी और बचपन से ही वे अंग्रेजी, हिन्दी और मराठी का ज्ञान रखते थे। मॉरिशस में आकर उन्होंने फ्रेंच का ज्ञान हासिल किया था। उनका एक भाई भी था जो इंग्लैण्ड में एक समाचार पत्र का सम्पादन करता था। अपने भ्राता के समान पं. विश्वनाथ जी भी पत्रकारिता में दक्ष थे। इसी योग्यता के कारण मणिलाल डॉक्टर ने उनको मॉरिशस आने को प्रेरित किया था।

पं. आत्माराम का मॉरिशस आगमन-पं. आत्माराम किस तिथि को मॉरिशस पधारे इसका प्रमाण कहीं उपलब्ध नहीं है, किन्तु उन्होंने अपने संस्मरण में लिखा है-''१९१२ में ''हिन्दुस्तानी'' पत्र का सम्पादक, में नियुक्त हुआ। उस समय पं. रामलाल जी ''ओरियण्टल गजेट'' पत्र चलाते थे।'' इसी सिलसिले में ''मॉरिशस का इतिहास'' में उन्होंने लिखा है-''१९१२ के दिसम्बर मास में एक विराट सभा शहर (पोर्ठलुई) की नाटकशाला में लगी थी। सेठ आजम गुलाम हुसैन सभापति थे। १५००/-रुपयों की राशि, कैलाशवासी गोपाल कृष्ण गोखले की सेवा में अफ्रीका के सत्याग्रही (आंदोलनकारियों) के लिए, भेजी गई थी। देवियों ने भी छोटी सी रकम १५०/- इकट्ठा करके भेजी थी। टापू की भारतीय प्रजा के इतिहास में यह पहली सभा थी, जिसे देखकर लेखक को हर्ष हुआ था।''

प्रथम विश्वयुद्ध के तकाजों से ''हिन्दुस्तानी'', ''ओरियण्टल गजेट'' और ''मॉरिशस आर्य पत्रिका'' क्रमशः बन्द हो गये। तब पं. आत्माराम ने भले ही किसी पत्र का सम्पादन नहीं किया, फिर भी उन्होंने अपनी कलम को सोने नहीं दिया। १९१५ से १९२१ के बीच उन्होंने ''मॉरिशस का इतिहास'' जैसा ग्रन्थ लिखा। इसी अवधि में उन्होंने ''वन्दे मातरम्'' गीत के जरिए भारतीयों में नवजीवन का संचार किया। इसी अवधि में पं. आत्माराम ने ''यंग मैन हिन्दू एसोसिएशन'' और ''हिन्दू विमन सोसायटी'' के तत्त्वावधान में संक्रान्ति और दीपावली आदि महोत्सवों को सुचारु रूप से मनाने का सिलसिला चालू किया। इस अवधि में उनका द्वारा किये गये विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक तथा साहित्यिक कार्यों के अनेक

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

प्रमाण तत्कालीन गैर भारतीय समाचार-पत्रों में उपलब्ध होते हैं।

१९१९ में पं. आत्माराम को गवर्नर हेसकेथ बैन के सचिव मिडलटन ने इसलिए डांट-फटकार सुनाया था और उन्हें यहाँ से निर्वासित करने की धमकी दी थी क्योंकि पण्डित जी इंग्लैण्ड के युवराज की जन्मतिथि पर लगभग एक हजार भारतीयों को चावल और अनाज आदि न मिलने की शिकायत लेकर रेज्वी स्थित लाट साहब के गृह पर प्रदर्शन करने गये थे। बाद में उन पर इस प्रकार की कई आपत्तियाँ आयीं, किन्तु बाद में उन्होंने सब को दृढ़ता और साहस के साथ मुकाबला किया था।

मॉरिशस का इतिहास और प्रतिक्रियाएँ-पं. आत्माराम के ग्रन्थ ''मॉरिशस का इतिहास'' का प्रकाशन उनके भ्राता द्वारा १९२३ में हुआ था। ग्रन्थ सजिल्द, चित्रित और उसकी पृष्ठ संख्या लगभग ३७० है। उसकी प्रकाशन तिथि १९२३ है। यह पुस्तक ''श्रीमान् दु:खी गंगा महोदय'' को समर्पित है। इसका प्रकाशन दत्तात्रेय विश्वनाथ ताह्वनकर के द्वारा हुआ था। उन्होंने आत्म निवेदन के अन्तर्गत लिखा है-''मॉरिशस का इतिहास'' ग्रन्थ के प्रकाशन के लिए मॉरिशस के भाई दो वर्ष से आशा विह्वल हो रहे हैं उसे आज प्रकाशित करने का सौभाग्य मुझे ईश्वर की कृपा से मिला है।''

७ अगस्त १९२३ के स्थानीय दैनिक हिन्दी पत्र ''मॉरिशस इन्डियन टाइम्स'' में ''मॉरिशस का इतिहास'' शीर्षक से आलोचनात्मक लेख छपा है। ८ अगस्त को इतिहासकार से शिकायत की गई है-''पं. आत्माराम को, मॉरिशस के प्रसिद्ध पुरुष सर्वश्री बाबू तिलक सिंह, देवीदीन महतों, धनपत लाला और बाबू गणेश सिंह आदि सज्जनों के उदार-चरित्र के विषय में ज्ञान नहीं। अत: सम्भव है कि ''मॉरिशस के प्रसिद्ध पुत्र'' नामक ग्रन्थ भविष्य में छपने वाला है जिसमें देश के कतिपय पुरुषों की सच्ची जीवनी होगी।'' इस ग्रन्थ के लिए एक सज्जन ने पं. आत्माराम पर हाथ उठाकर अपनी सज्जनता का परिचय दिया था। परन्तु इन सब संकटों से पं. आत्माराम घबराये नहीं। उन्होंने अपनी कलम को कभी विश्राम नहीं दिया, बल्कि प्रतिक्रिया स्वरूप मॉरिशस के हिन्दी साहित्य को सर्जनाशक्ति मिली।

मॉरिशस में ईश्वर-पं. आत्माराम की द्वितीय कृति ''मॉरिशस में ईश्वर'' का प्रकाशन १९२५ ईसवी में हुआ है। वह माडन प्रिंटिंग, २१ वूर्लो स्ट्रीट पोर्ट लुई मॉरिशस में छपी थी। इसमें पं. आत्माराम ने अपने सुधारवादी होने का उज्ज्वल परिचय दिया है। उन्होंने इसकी भूमिका में लिखा है-''अस्पृश्यता को हटा देना, अन्तर्जातीय विवाह करना, सहभोजन करना, एक भाषा का प्रचार करना, सबको समान धार्मिक अधिकार देना, परधर्मियों को स्वधर्म में लेना आदि साधनों से वह (हिन्दू समाज) उस कार्य (हिन्दू संगठन) को साध्य कर सकता है।''

इस पुस्तक के छपते ही सनातन धर्म के समर्थकों में खलबली मच गई। इसी समय आर्यसमाज आन्दोलन जोर पकड़ रहा था, जिसके फलस्वरूप सनातन धर्मावलम्बी अपनी कुंभकर्णी नींद से तत्कालीन आर्यसमाजी विद्वानों को उत्तर दिया था। इसी तरह से सनातनी पण्डित (१९२६) ''सत्यनारायण की जय'' नाम की पुस्तिका छपवायी थी। इसकी भूमिका में उन्होंने लिखा था-''आज से करीब डेढ़ वर्ष हुए, एक छोटी सी पुस्तक ''मॉरिशस में ईश्वर'' या ''सत्यनारायण कैसा है'' प्रकाशित हुई थी इसके लेखक हमारे साहित्य प्रेमी पं. आत्माराम हैं। उक्त पुस्तक में अनेक ऐसी बातें पायी जाती हैं, जो सनातन धर्मावलम्बियों के लिए सिर पर पहाड़ जैसी हैं। हंसी इस बात पर आती है कि किसी धर्म धुरन्धर ने आज तक उसका प्रत्युत्तर नहीं दिया। यहाँ तक कि सनातन धर्म प्रचारिणी सभा द्वारा पं. रामशरण शर्मा एवं पं. बंशीराम शर्मा इस टापू में आये। उन्होंने भी प्रत्युत्तर देने का साहस नहीं किया। पं. बंशीराम शर्मा ने अपने व्याख्यान में कहा था कि उक्त पुस्तक नास्तिकता से भरी हुई है, अत: मैं इसका प्रतित्युत्तर दूँगा परन्तु वह भी नहीं हुआ..........मैं उक्त पुस्तक का उत्तर देने योग्य अपने को नहीं समझता हूँ परन्तु ''नहीं के बदले कुछ कहावत के तौर पर दो-चार शब्द लिख देना उत्तम समझता हूँ।''

दु:खी गंगा हिन्दी पाठमाला की चौथी पुस्तक-किन्तु पं. आत्माराम उपर्युक्त कटु आलोचनाओं से घबराये नही। सन् १९२५ में ही उन्होंने ''दु:खी गंगा हिन्दी पुस्तक माला'' के अन्तर्गत ''हिन्दी की चौथी पुस्तक लिख डाली। इसकी समालोचना ''मॉरिशस आर्य पत्रिका'' के २२ मई, १९२५ अंक में छपी थी। पं. आत्माराम की यह तीसरी पुस्तक थी। भारतीय पाठ्य पुस्तकों की त्रुटियों को विचार करके मॉरिशस की परिस्थिति के अनुकूल इसकी रचना हुई है। इसमें ऐतिहासिक पाठ देकर हिन्दू विद्यार्थियों को भारत के प्राचीन तथा अर्वाचीन समय का गौरवयुक्त सम्यक् ज्ञान कराते हुए बच्चों में वीरभाव का संचार कराया गया है। पं. आत्माराम के उद्योग का हम मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हैं। इसको आद्योपान्त पढ़ने के लिए हम पाठकों से आग्रह और निवेदन करते हैं।''

इसके बाद उन्होंने ''कुमार स्वामी पाठमाला'' के अन्तर्गत दूसरी और तीसरी भाग आदि पुस्तकें हिन्दी में लिखीं। इन दोनों पुस्तकों का भी पाठकों ने काफी प्रशंसा की थी। सन् १९२७ ईसवी में भारत में छत्रपति शिवाजी की द्विशताब्दी महोत्सव मनाया जा रहा था। इस अवसर पर पं. आत्माराम ने छत्रपति शिवाजी और रानी लक्ष्मीबाई की जीवनियाँ लिखीं। इन पुस्तकों के दो-दो संस्करण, हिन्दी और मराठी में उपलब्ध होते हैं। इसी प्रकार से उन्होंने हिन्दी और मराठी में वैदिक सन्ध्या पुस्तिका लिखकर आर्यसमाज आन्दोलन को गति दी थी।

''हिन्दू मॉरिशस'' की उद्भावना-बीसवीं शदी के प्रारम्भ से आर्यसमाज आन्दोलन के जरिए, मॉरिशस के भारतीयों में

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

जिस नव चेतना का अविर्भाव हुआ था, सन् १९२५ में महर्षि दयानन्द की जन्म शताब्दी और १९३३ में महर्षि के निर्वाण की अर्द्धशताब्दी उसकी परिणति समझी जाती है। इन्हीं दो महोत्सवों के बाद १९३५ में ''भारतीय आप्रवासन शताब्दी समारोह'' मनाया गया था किसी भी आप्रवासी जाति के इतिहास में एक शती का समय महत्व रखता है। यह महोत्सव पोर्ट लुई स्थित दयानन्द धर्मशाला में मनाया गया था। वहीं पर एक शिला स्तम्भ की स्थापना हुई थी। इस ऐतिहासिक मौके पर तीन मॉरिशस वासियों ने तीन ग्रन्थ लिखे थे। श्री अनन्त विजाधर ने फ्रेंच में ''भारतीयों का इतिहास'' लिखा। पं. लक्ष्मीनारायण चौबे ने हिन्दी में 'सत्त सरोज'' काण्यमय भाषा में लिखा, जबकि पं. आत्माराम ने ''हिन्दू-मॉरिशस'' नामक स्यालकाय ग्रन्थ लिखा था।

''**हिन्दू-मॉरिशस**'' सजिल्द, चित्रित और लगभग साढ़े चार सौ पृष्ठों की पुस्तक है। इसमें तीन भाग हैं। प्रस्तावना, निचोड़, मन्दिरों का इतिहास और संस्थाओं का इतिहास। इसका प्रकाशन वर्ष १९३६ है और एम.आई. रावत प्रिंटर, १० रेमीआंलिए स्ट्रीट, पोर्ट लुई मॉरिशस द्वारा मुद्रित है। यह पुस्तक स्व. पुलिस इन्सपैक्टर शिवशंकर धूरनसिंह, एम.बी.आई. को समर्पित है।

इस ग्रन्थ की समालोचना १८ जून, १९३६ को ''मॉरिशस आर्य पत्रिका'' में छपी थी। समालोचक थे प्लेनमायाँ निवासी शिवनारायण लाल जी। उन्होंने इसकी प्रशंसा करते हुए लिखा था ''हमें भूलना नहीं चाहिए कि इस द्वीप में पण्डित, विद्वान्, चतुर्वेदी, त्रिवेदी, द्विवेदी, एकवेदी, भगवती आदि उपाधि धारी हुए हैं, परन्तु किसी को साहस नहीं हुआ है कि इस तरह की पुस्तक लिखकर, जनता के सामने रख दे। परन्तु पं. आत्माराम ने मॉरिशस में पहली बाजी मार ली है। ''शाबास'' रुपये शब्दों को कह देता है कि ''मॉरिशस का इतिहास'' और ''हिन्दू मॉरिशस'' ये दो पुस्तकें पण्डित जी के स्मारक रूप में चिरकाल तक रह जायेंगी।

हिन्दू आर्क बिशप ऑफ मॉरिशस-इस ग्रन्थ के प्रकाशित होते ही पं. आत्माराम को बधाइयाँ और उपाधियाँ मिलने लगीं। २७ अगस्त १९३६ को ''मॉरिशस आर्य पत्रिका'' में एक सूचनात्मक लेख छपा जिसमें पं. आत्माराम को हिन्दुओं द्वारा महा-पुरोहित की उपाधि समर्पित की गई। ''हिन्दू आर्क बिशप ऑफ मॉरिशस' यह एक भारी उपाधि पलाक निवासी दानवीर श्री हनुमान जी ने ''आर्यवीर'' में पं. आत्माराम को प्रदान किया है। उनके इस मान के लिए हम पण्डित आत्माराम को बधाई देते हैं। शर्मा, वर्मा की उपाधियाँ आजकल घर-घर में हो गई हैं।'' महामहोपाध्याय'' जैसी नई पदवियाँ भारत से अभी नहीं आई हैं और यूरोपियन सभ्यता की आजकल चलती हैं। इसलिए वैसी उपाधि से पण्डित जी को विभूषित किया गया है। यह उचित भी है। पं. आत्माराम सुधारवादी और नई सभ्यता के पोषक हैं और उनके अनुकूल ही रहती है। अतः दाता और ग्रहणकर्ता दोनों के औचित्य की हम प्रशंसा करते हैं।

तदुपरान्त विदेशी विद्वानों और लेखकों के प्रशंसा-पत्र मिलने लगे। हिन्दी प्रचारिणी सभा के मन्त्री एस.एम. भगत जी ने ''हिन्दू मॉरिशस'' की अनेक प्रतियाँ खरीद कर भारतीय विद्वानों को भेंट कीं। उन्हें अमरीका के डॉ. सुरेन्द्रनाथ बोस तथा भारत के घनश्याम बिड़ला के प्रशंसा पत्र मिले। स्वामी भवानी दयाल संन्यासी ने लिखा-''आपकी ८ तारीख की चिट्ठी मिली और ''हिन्दू मॉरिशस'' की एक प्रति भी। एतदर्थ आपको धन्यवाद। मैंने सरसरी दृष्टि से पुस्तक देख ली है और मैं विश्वास से कहता हूँ कि प्रवासी साहित्य में यह अमूल्य अभिवृद्धि है। मैं आपके द्वारा लेखक की प्रशंसा/प्रमाभिनन्दन करता हूँ। आपका ही, भवानी दयाल संन्यासी।''

इसी प्रकार से ''सरस्वती'' और ''सुधा'' के सम्पादकों ने भी ''हिन्दू-मॉरिशस'' की प्रति-प्राप्ति को स्वीकारते हुए पुस्तक की ओर एक-एक प्रति की माँग की थी। जिससे वे उसकी आलोचना कर सकते। एस.एम. भगत ने पत्रिका के दूसरे अंक में ''हिन्दू मॉरिशस'' पर ''प्रताप'' द्वारा की गई विस्तृत समालोचना प्रकाशित करवाने का उल्लेख किया था।

अन्तिम सत्य और मॉरिशस की खोज-पंडित आत्माराम ने ''मॉरिशस का इतिहास'' ग्रन्थ में १९वीं शती के उत्तरार्द्ध में महान् देप्लेवित्स महोदय द्वारा जिसे शाही जांच आयोग की रिपोर्ट छपी थी, उनके सुझावों को हिन्दी में अनुवाद करके, प्रथम बार, मॉरिशस और भारतीय हिन्दी पाठकों को उपलब्ध करवाया था। उक्त पुस्तक में डच-फ्रेंच और अंग्रेजी शासन काल का क्रमिक इतिहास दिया गया है। अतः इसमें मॉरिशस का १७१५ से १९१९ तक का इतिहास है।

इसके बाद के वर्षों में पं. आत्माराम, परोपकारिणी सभा के अन्तर्गत प्रचारक का कार्य भी करते रहे। सन् चालीस में उनके दो ग्रन्थ छपे, एक अंग्रेजी और दूसरे फ्रेंच में, जिनके नाम क्रमशः, ''त्रुस्ट एट लास्ट'' और 'देकुवेर्त अॅव मॉरिशस'', जिनके हिन्दी नाम होंगे ''अन्तिम सत्य'' और ''मॉरिशस की खोज''। इन दोनों ग्रन्थों में इतिहासकार महोदय ने अपने प्रखर दृष्टि से मॉरिशस के भारतीयों की सही स्थिति का विश्लेषण और मूल्यांकन किया है। उन्होंने भारतीयों की जनसंख्या की तुलनात्मक अध्ययन पेश किया है और इस बात का उद्घाटन किया है कि अगर इस देश के भारतीय सजग नहीं होंगे तो भविष्य में उनके अस्तित्व को बाधा पहुँचने की सम्भावना हो सकती है। उन्होंने जनसंख्या के आंकड़ों का जो नक्शा पेश किया है उसे तत्कालीन भारतीय संदेह की नजर से देखते थे, किन्तु उनकी भविष्यवाणी का प्रमाण है १९८३ की मर्दुमशमारी की रिपोर्ट, जिसके अवलोकन से भारतीयों के रोंगटे खड़े हो

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

जाते हैं। इस रिपोर्ट के अध्ययन करने पर पता चलता है कि पं. आत्माराम कितने दूरदर्शी थे। वर्तमान सरकार ने उक्त मर्दुमशुमारी-रिपोर्ट को उपेक्षित करने के उद्देश्य से ही अवधि से दो-तीन वर्ष पूर्व पुन: मर्दुमशुमारी करवा रही है।

१४ पुस्तकों के लेखक-पं. आत्माराम की प्रथम पुस्तक १९२३ में छपी थी और अन्तिम कृति १९५२ में निकली थी। अपने तीस वर्ष के लेखन अवधि में उन्होंने १० पुस्तकों की रचना की, उनके नाम हैं-

१. मॉरिशस का इतिहास, **२.** मॉरिशस में ईश्वर, **३.** हिन्दू की चौथी पुस्तक, **४.** हिन्दी की तीसरी पुस्तक, **५.** व **६.** हिन्दी और मराठी में छत्रपति शिवाजी, **७.** व **८.** हिन्दी और मराठी में रानी लक्ष्मीबाई, **९.** व **१०.** हिन्दी और मराठी में वैदिक सन्ध्या, **११.** हिन्दी की दूसरी पुस्तक, **१२.** हिन्दू मॉरिशस, **१३.** त्रुस एट लास्ट, **१४.** देकुवेर्त ॲव मॉरिशस।

पं. आत्माराम की तीन बाल-पुस्तकें "हिन्दुत्व शिक्षण" अप्रकाशित हैं। इनकी रचना उन्होंने शिक्षा विभाग के निर्देश पर की थी।

पत्र सम्पादन के अनुभव-पं. आत्माराम ने अपने ४३ वर्ष के मॉरिशस प्रवास में कालक्रम से पांच पत्रिकाओं का सम्पादन किया। मृत्यु से चार वर्ष पूर्व उन्होंने पत्रकारिता के अपने अनुभव को लिखते हुए कहा है-

"जब १९१२ में मैं हिन्दुस्तानी का सम्पादक बना तब स्व. पं. रामलाल का "ओरियण्टल गजेट" चलता था। वे कट्टर सनातनी थे। श्रियोले के किसी पांडे के सम्बन्ध में स्व. पं. रामअवध का लेखन "हिन्दुस्तानी" में छपा, पं. रामलाल ने उस पर मानहानि का मामला चलाया, और "हिन्दुस्तानी" को हर्जाना चुकाना पड़ा। किन्तु आर्यसमाज के संस्थापक स्व. बहादुर रामजीलाल ने उस मामले के समस्त जिम्मेवारी अपने ऊपर लेकर पांडे महोदय से पिण्ड छुड़वाया था। इस खट-पट में "हिन्दुस्तानी प्रेस" का मालिक मैं बना था और "ओरियण्टल" के साथ हमारा कलह-युद्ध चलता रहा।

१९३७-३८ में, मैं "मॉरिशस आर्य पत्रिका" का सम्पादक बना। मुझे स्मरण है कि स्व. भगवानदास काला और स्व. प्रधान मनसासिंह आकर एक लेख छापने को मुझे मना किया था। वह लेख श्री निरंजन के स्वागत में दिया गया। प्रीतिभोज के सम्बन्ध में था जिसमें हिन्दू और गैर हिन्दुओं ने छुरी-काँटे से टेबल पर एक साथ बैठकर भोजन खाया था। बस इतनी सी बात उसमें थी। (इसी तरह से) "मॉरिशस का इतिहास" के बारे में सनातनी पं. बन्सीराम और रामशरण दास के साथ, और ऐसे ही एक बात पर स्वामी विज्ञानानन्द के साथ मेरी बातचीत हुई थी।

१९३९ में "परोपकारिणी सभा में द्वन्द्व चला। "मित्र मण्डल" बना। मेरे विरुद्ध पाम्प्लेट प्रकाशित हुआ.... इस तरह "आर्य पत्रिका" से मेरा सम्बन्ध टूटा लेकिन तुरन्त स्व. पं. काशीनाथ के साथ मेरा सम्बन्ध स्थापित हुआ। मैं "आर्यवीर" का सम्पादक बना। १९४० से १९४४ तक मेरा खूब बोलबाला था। मुझे रोजाना आठ या बारह आना मिलता था। यद्यपि मैं अकेला ही लिखता था। सम्पादक की पदवी में, और समाज के विभूति वे, और परोपकारिणी और प्रतिनिधि सभाओं का विलयीकरण करने की बातचीत चल पड़ी। सबसे पहला कदम "आर्यवीर-जागृति" का संयुक्त प्रकाश होने लगा। अब मुझे रोजाना एक रुपया मिलने लगा। किन्तु पं. विष्णुदयाल के कार्य की समालोचना से एक पक्ष के संचालक नाराज हुए और मुझे डिसमिस किया गया, ...उस समय में "त्रुस एट लास्ट" अंग्रेजी में लिख रहा था। करीब डेढ़ साल बाद, "आर्यवीर-जागृति" के गले मैं पुन: मढ़ा गया।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी मेरे लेखों की कद्र करते थे, यद्यपि मुझे कतिपय संचालक नहीं चाहते थे। मेरे लेख "देसाई का बीस हजार" पर ३० साल के पुराने मित्र गुस्से में आ गये और गाली-धमकी से मेरी पूजा कर डाली। बाद में जब उन्हें अपनी भूल का पता चला तब उन्होंने शुद्ध हृदय से माफी मांगी थी। इसी तरह पिछले साल, "जनता" के सम्पादक श्री राय ने लिखा था कि पुलिस ने पकड़कर मुझे कौंसिल से बाहर निकाल दिया था। फिर जनता ने कैसी माफी मांगी, यह इतिहास अभी ताजा है।

छह मास से पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के आदेशानुसार उपर्युक्त दोनों पत्रों का नामकरण "आर्योदय" हुआ। उसके सम्पादन भी मेरे ही गले पड़ी है। आज तक मैं उसके गले में पड़ा हूँ। ..... मैं अपने पाठकों को विश्वास दिलाता हूँ कि मेरी किसी से कोई व्यक्तिगत राग-द्वेष नहीं है। पत्र-सम्पादन के लिए मैं उपयुक्त व्यक्ति हूँ। ३९ साल के सम्पादकीय जीवन में कभी किसी ने मुझ पर मानहानि नहीं की है। न मैंने सिद्धान्त का उल्लंघन ही किया है। मैं शुद्धभाव से पूर्ववत आपकी सेवा करता रहूँगा। मुझे आपके सहयोग की अति आवश्यकता है। परम पिता परमेश्वर का हिन्दू जाति पर वरदहस्त रहे।"

पं. आत्माराम के कार्यों का मूल्यांकन-हिन्दी के इस महान् तपस्वी का निधन २२ अगस्त, १९५५ ईसवी को श्री दीपनारायण पदारथ जी के गृह पर हुआ। अगले दिन भारी जन समूह के बीच उनकी लाश, वाले दे प्रेत के शमशान भूमि में अग्नि देवता को अर्पित की गई। उनकी मृत्यु पर श्री सुखराम प्रसाद ने कहा....."पं. आत्माराम की मृत्यु से दो दिन पूर्व, मैं उनसे मिलने आया। उन्होंने कहा कि मुझे बहुत कुछ कहना है किन्तु कह नहीं सकता हूँ। "आर्योदय" के मामले से मैं दु:खी हूँ क्योंकि अब जाने की तैयारी में हूँ। इतना कहकर पण्डित जी चुप हो गये और उनके दोनों नेत्रों में आँसू भर गये थे।"

सुखूराम प्रसाद ने अपनी श्रद्धांजलि लेख में बताया था कि "हिन्दू मॉरिशस" पुस्तक पर भारत के एक नरेश से पं.

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

आत्माराम को एक पारितोषिक प्राप्त हुआ था। जब कभी पण्डित जी सुनते थे किसी हिन्दुस्तानी विद्यार्थी को छात्रवृत्ति मिली या किसी हिन्दू को सरकार में ऊँची पदवी मिली तो वे आनन्द से मग्न हो जाते थे। इस देश में हिन्दुओं के उत्थान के लिए पं. आत्माराम का उपदेश सदैव हुआ करता था। पं. आत्माराम का सम्बन्ध भी सैल्मा आर्यसमाज के साथ विशेष था। २४ नवम्बर, १९४४ को उन्हीं के करकमलों द्वारा उस मन्दिर का शिलान्यास किया गया और एक साल बाद उसका उद्घाटन भी पण्डित जी ने ही किया था।

मुनिखरलाल चिन्तामणि के अनुसार पं. आत्माराम भारतीय कृषक सभा के निर्माण के पक्ष में दलील देते थे। उनका कहना था कि भारतीय कृषकों को गन्ने का उचित दाम मिलना चाहिए। वे भारतीयों के लौकिक विवाह के समर्थक थे और उन्होंने स्त्री-शिक्षा पर हमेशा बल दिया था। उन्होंने हिन्दी आन्दोलन को गति देने के उद्देश्य से देश के धनवानों से आग्रह किया था जिससे वे गाँव-गाँव में हिन्दी पाठशाला का निर्माण करें। इसके अतिरिक्त गरीब भारतीय विद्यार्थियों को भारत में विश्वविद्यालीय शिक्षा दिलाने के उद्देश्य से उन्होंने ''भारतीय शिक्षा फण्ड'' स्थापित करने का सुझाव दिया था।

पं. आत्माराम के सद्प्रयासों से ही दक्षिण के दुखी गंगा, पोर्ट-लुई के कुमार स्वामी और प्लेन विलियेम्स के परवार प्रभृतियों ने अनेक हिन्दी और मराठी पाठशालाएँ खुलवायी थीं। पं. आत्माराम ने सम्पन्न भारतीयों को प्रेरणा दी थी जिससे वे हिन्दी की पुस्तकों के प्रकाशन के लिए हृदय खोल कर दान दें। उनके इसी प्रयास से ''मॉरिशस का इतिहास'', ''हिन्दू मॉरिशस'' और ''छत्रपति शिवाजी'' जैसे ग्रन्थों का प्रकाशन सम्भव हो पाया था। ये ग्रन्थ स्थानीय हिन्दी साहित्य के आदि धरोहर माने जाते हैं। - **३०, स्वामी दयानन्द स्ट्रीट, बो बासें, मॉरिशस।**

ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर

२४ नवम्बर से १ दिसम्बर, २०१३, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर। अधिकतम संख्या-५०। मात्र पूर्व पञ्जीकृत प्रतिभागियों के लिए। इसमें विद्वद् गोष्ठी द्वारा निर्धारित आर्यसमाज की ध्यान पद्धति का प्रशिक्षण दिया जायेगा व ध्यान करवाने का अभ्यास भी करवाया जायेगा। लिखित एवं प्रायोगिक परीक्षा के बाद योग्य व्यक्तियों को परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षक-प्रमाण पत्र भी दिये जायेंगे। शिविर शुल्क १००० रु. है। २४ नवम्बर सायं ४ बजे तक पहुँचना अनिवार्य है। विलम्ब से आने वालों की शिविर में सहभागिता नहीं हो पायेगी। शिविर का समापन १ दिसम्बर को सायं ५ बजे तक हो जायेगा। इच्छुक व्यक्ति, कृपया सम्पर्क करें-९४१४००३७५६, समय-मध्याह्न १.३० से २.३०।

पता-संयोजक, ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर, परोपकारिणी सभा, दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर, राज. ३०५००१। ईमेल-psabhaa@gmail.com

सूचना

परोपकारी पत्रिका अपने लेख, कविताओं, प्रतिक्रियाओं, पाठकों के विचार, विज्ञप्ति के लिए आप लेखक-महानुभावों से अनुग्रहित होती रही है। आप सभी लेखक-महानुभावों से निवेदन है कि अपने लेख, प्रतिक्रिया, विचार, सुझाव, सूचना इत्यादि कुछ भी सामग्री, जो प्रकाशनार्थ भेजी जा रही है उसे मुद्रित कराकर, उसका प्रूफ-संशोधन कर ही भेजने की कृपा करें। जो महानुभाव अपनी प्रतिक्रिया पोस्टकार्ड में भेजना चाहते हैं, वे स्पष्ट, सुपाठ्य लिपि में लिखकर अथवा लिखवाकर ही भेजें। **-सम्पादक**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

संस्कृतम्

-ब्र. कश्यप कुमार

भारतस्य प्राचीनान् संस्कृतपाण्डुलिपिग्रन्थान् पश्यामश्चेत् ज्ञायते यत्-आङ्लानामागमनात्पूर्वं संस्कृतेन प्रणीतानां ग्रन्थानां काव्यनाटकादीनाञ्च व्याख्यानानि संस्कृतेनैव भवन्ति स्म न तु लोकभाषाभि इति। ब्रिटिशशासनकाले आङ्लानामैरोपीयाणाञ्च अवगमनायाङ्लजर्मन्प्रभृतिभिः भाषाभि अनुवादकार्यमारब्धम्। आङ्लशिक्षणव्यवस्थायां यथा आङ्ग्लभाषां पाठनमनुवादविधिना भवति स्म, तथा संस्कृतभाषां शिक्षणमप्यनुवादविधिनारब्धम्। शिक्षणविधेः कारणतः, किञ्च आङ्लेयानामङ्ग्लशिक्षणं प्राप्तवतां भारतीयानां चावश्यकताकारणतः च संस्कृतेनोपनिबद्धानां काव्यनाटकादीनां शास्त्रग्रन्थानाञ्चाङ्लभाषयाऽनुवाद अप्यारब्धः। एतेन संस्कृतवाङ्मयस्य महत्त्वं जनैः स्वल्पमात्रेणावगतम्। संस्कृतविषये आदर भावः उत्पन्नः च। परन्तु काश्चनः हानय अप्यभवन्।

द्विशतं वर्षाणि यावत् संस्कृतशैक्षिकजगत अवधानकेन्द्रम् आसीत् 'इतरभाषाभिःअनुवाद इति। संस्कृतस्य प्रकाशनोद्यमः नामानुवादसहितानां, केवलानुवादानां वा प्रकाशनम् इत्यासीत्, अस्ति च। तेन च इतरभाषाभिः अनुवादस्य तज्ज्ञता संस्कृतज्ञानमभवत्। संस्कृतेन कृतिनिर्माणं, संस्कृतेन लेखनं संस्कृतेन परिचर्चा च नाभवत्। संस्कृतेन व्यवहारः न्यून अभवत्। संस्कृतविषये इतरभाषासु चर्चाऽधिकाऽभवत्। अतस्संस्कृतभाषा नैव विकसिता, अपि तु दिने-दिने ह्रासं गता। संस्कृताध्यापकानां छात्राणां च संस्कृतेन अभिव्यक्तसामर्थ्यं नैवावर्धत्। किं च, संस्कृतस्थाः विषयाः इतरभाषावाङ्मयं अपोषयन्? किन्तु इतरभाषाणां आधुनिकाः विषयाः-संस्कृतवाङ्मये न आगताः संस्कृतेन प्रदानं केवलं कृतम् आदानं नैव कृतम्। उद्देशानुगुणं कार्ययोजना भवति। आङ्लेयानामुद्देश्यं आसीत्-संस्कृतसाहित्यस्यावगमनमिति। अतः ते अनुवादं कारयितवन्तः अनुवादकरणमेव पाठितवन्तः च। अस्माकं इदानीम् उद्देश्यमस्ति संस्कृतभाषायाः सर्वतोमुखः विकासः भाषायाः साहित्यस्य शास्त्राणां च उज्जीवनं चेति।

तदर्थम् संस्कृतेन पठनं भवेत्, न तु इतरभाषाभिः अनूदितानां ग्रन्थानां पठनम्, अर्थात् इतरभाषाभिः पठनम्।

संस्कृतछात्राणां, संस्कृतशिक्षकाणां च संस्कृतभाषाप्रयोगसामर्थ्यं संस्कृतभाषासौष्ठवं च नास्ति इत्यत्र किं कारणम् इति पृष्टे सत्युत्तरद्वयं भवति संस्कृतभाषायाः १. पठनं न भवति २. लेखनञ्च न भवति इति। इतरभाषाभिः तु वयं प्रतिदिनं वृत्तपत्राणि, कथापुस्तकानि बहुविधमनोरञ्जनसाहित्यं च पठामः। तथा अस्माकं पठनाय संस्कृतेन रचितं ललितमाधुनिकं समकालिकं साहित्यन्नास्ति संस्कृतशिक्षणे माध्यमिकशिक्षात आरभ्य स्नातकोत्तरशिक्षापर्यन्तं सस्कृतेन लेखनम् इत्येतत् नैव भवति। पारम्परिकपाठशालासु-तावत् वर्षान्तं परीक्षासमये छात्राः लेखनीपाणयः भवन्ति अन्यथाऽवर्षं कक्षासु तेषां श्रवणमात्रं कार्यम्।

कस्याश्चिदपि भाषायाः विकासाय पञ्चावश्यकताः-भवन्ति इति श्रूयते।

१. तया भाषया भाषणकर्तारः बहवः जनाः।

२. शिक्षण-प्रशासन-वाणिज्यसूचनादीनां माध्यमरूपेण तस्याः भाषायाः प्रयोगः।

३. समकालिकसाहित्यम्।

४. नवशब्दनिर्माणसातत्यम्।

५. तन्त्रज्ञानस्य स्वीकारः। इति

अत्र समकालिकं साहित्यमिति विषय अस्माभि अवधेय अस्ति गते शतके भारतीयासु भाषासु यदाऽधुनिकं साहित्यन्निर्मितमभवत् तदा तत् कार्यं त्रिषु सोपानेष्वभवत्।

तत्र तावत् प्रथमः-आङ्ग्लभाषया प्रणीतस्य साहित्यस्य भारतीयभाषयानुवादः कृतः। २. पश्चात् आङ्ग्लकृतीनामनुकरणं कृत्वा स्वतन्त्रतया कृतिरचना कृता। ३. अनुवादानुकरणाभ्यां कृतलेखनाभ्यासाः लेखकाः अनुवादानुकरणयोः द्वारा निर्मितस्य साहित्यस्य पठनेन प्राप्तोत्साहाः लेखकाः च सर्जनात्मककृतीनां प्रणयनं कृतवन्तः।

एवं सर्वास्वपि भारतीयभाषासु प्रारम्भे महता प्रमाणे-नानुवादकार्यमभवत्। तेन तासां भाषाणां शब्दभाण्डारमवर्धत, नवशैल्यःसमुत्पन्नाः च। अद्य संस्कृतक्षेत्रे अपि समयस्यावश्यकतास्ति। संस्कृतेनानुदितस्य साहित्यस्य निर्माणमिति। येषां संस्कृतज्ञानां संस्कृतेन निर्दुष्टतया लेखनस्य सामर्थ्यम् अस्ति ते सर्वेऽपि संस्कृतेनानुवादकार्यं स्वीकुर्युः। क्रेतॄणां पठितॄणां च निर्माणानन्तरमनुवादःप्रकाशनञ्चेति। चिन्तनन्त्वयुक्तम्। अनुवादप्रकाशनयो अनन्तरमेव क्रेतॄणां पठितॄणाञ्च निर्माणं भवति। क्रेतृपठितॄणां सङ्ख्यावर्धनेन अनुवादप्रकाशनञ्च समृद्धिं गच्छतः। अतः सर्वमपि परस्परं पूरकरः। पुस्तकानां लेखनं दानञ्च सदैव भवेत्।

अत्रान्या अपि काञ्चन महत्भूता अंशास्सन्ति। संस्कृतेनानुवादसमये सा संस्कृतभाषा सरला स्यात्, सरलतमा स्यात् यथा प्रकृतिसौन्दर्ये वा सप्तमायां, अष्मायां च कक्षायां भवति तादृशी भवेत् यदि भाषा क्लिष्टा भवेत्तर्हि न कश्चित्पठिष्यति यतः तादृशी कृतयः इदानीमेव सन्ति। सरलतायाः विषये अस्माकं यावत्यास्था स्यात् ततोऽप्यधिकाऽस्था भवेत् भाषाशुद्धतायाः विषये संस्कृतविषये च। पाणिनिसम्मता एव प्रयोगास्स्युः संस्कृतशैली एवादर्तव्या स्यात् एषानुवादप्रकाशनवाचनयोजना देशे सर्वेषां संस्कृतज्ञानां, संस्कृतछात्राणं च भाषाज्ञानस्तरं भाषाप्रयोगस्तरं च वर्धयेत् एते प्राचीनाः सुन्दराः संस्कृताः प्रयोगाः पुनः

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

व्यवहारपथमागच्छेयुः। सर्वभारतीयभाषासाहित्यकृतीनां संस्कृतानुवादेन तासाञ्च देशे सर्वैः पठनेन च राष्ट्रियभावैक्यं सुदृढतरं भवेत्। संस्कृतक्षेत्रे नवचैतन्यं समुत्पादयेत्। पुनरपि संस्कृतज्ञाः प्रज्ञालोके सारस्वलोके च विहरेयुः संस्कृतवाङ्मयस्य नवाध्यायस्य प्रारम्भः भवेत्। न केवलं संस्कृतस्य अपितु समाजशास्त्र-वाणिज्यशास्त्र-इतिहास-गणित-विज्ञानसङ्गणकादीनां सर्वेषां विषयाणां संस्कृतेन पाठनस्य कालः समागच्छेत्।

न हि-

यावत् संस्कृतवेत्तारो निष्क्रियाः संस्कृतोन्नतौ।
ईश्वरोऽपि क्षमो नास्ति संस्कृतनिधिरक्षणे॥ १॥

न जाने की दृशी तन्द्रा हीनग्रन्थिः मृतात्मना।
लभ्यते संस्कृतज्ञेषु नोद्यमो न च साहसम्॥ २॥

प्राचीना यावती भाषा तज्ज्ञास्ततः पुरातनाः।
सहस्त्रवर्षसंस्काराः संस्कृतज्ञेषु सञ्चिताः॥ ३॥

नोत्साहवर्धकं वृत्तं यूनां संस्कृतसेविनाम्।
अभिरुचिर्न शास्त्रेषु वैदुष्यन्न च रोचते॥ ४॥

उपायस्तादृशश्चिन्त्यो ज्ञानोत्साहसमन्वितः।
येन भोः संस्कृतं भूयो गौरवास्पदमाप्नुयात्॥ ५॥

मोदकानां हि नाम्नैव मुखं मिष्टं न जायते।
संस्कृतदेवभाषास्ति कथनेन किमुद्धरेत्॥ ६॥

अतः गृहे गृहे मातृवचो हि संस्कृतम् भवेच्च राष्ट्रस्य वचोऽपि संस्कृतम् ये जने येन रुचेर्विकासः कुले-कुले-सांस्कृतिकः प्रकाशः स्यात् तदर्थम्

आगम्यताम्

कालस्य स्पर्धाह्वानं स्वीक्रीयताम् अनुद्यताम्........ प्रकाश्यतां..........क्रीयताम् पठ्यताम्..........प्रचार्यताञ्चेति।

-ऋषि उद्यान, अजमेर।

मनुष्यों के द्वारा जो वेद की रीति और मन-वचन- कर्म से अनुष्ठान किया हुआ यज्ञ है वह आकाश में रहने वाले वायु आदि पदार्थों को शुद्ध करके सब को सुखी करता है।- **महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद भावार्थ-४.६।**

गोल्डन जुबली बनाम मॉर्डन वानप्रस्थ

-विशेष शर्मा

अपने बच्चों के बच्चे भी, देखें आज हमारी शादी।
रिश्ते में हम इन बच्चों के, नाना-नानी, दादा-दादी॥

कौन भला जंगल में जाए, वानप्रस्थ, संन्यास निभाए।
भिक्षा मांग के भोजन पाए, कंद-मूल या कच्चा खाए॥

मोह-माया के ताने-बाने, बुनते-बुनते हुए सियाने।
आखिर ऋषियों के अनुगामी, बन गये हैं जाने-अनजाने॥

काम-वासना मन में उठते-उठते ही अब मर जाती है।
छूने में रखा ही क्या है, देख तबीयत भर जाती है॥

अपने क्रोध को पी लेते हैं, होंठ अपने हम सी लेते हैं।
कहते-कहते, कहते हैं हम, भली बुरी भी सहते हैं हम॥

अपनों ने जब मिलके लूटा, लोभ से भी रिश्ता टूटा।
किस्मत के भी रोने रोए, अपने पर भी गुस्सा फूटा॥

अन्दर से आवाज यह आई, देख के भी अनदेखा करना।
घर में रह कर भी न रहना, सुन के भी तुम सुना न करना॥

जो भी था प्रारब्धजन्य था, वर्तमान में जीना सीखा।
ताने-बाने बुनना छोड़ा, प्रभु प्रेम रस पीना सीखा॥

आज पचासवीं वर्ष गांठ पर, किया है फिर सोलह श्रृंगार।
सगे-सम्बन्धी इष्ट मित्र, सब का भरपूर मिला है प्यार॥

घर में रहकर घर को त्यागो, मोह माया से कोसों भागो।
जिम्मेदारी और अधिकार, प्रेम बने सबका आधार॥

पल प्रति पल ईश्वर का चिन्तन, अन्तःकरण में ....
प्राणी मात्र का परोपकार, मोक्ष मार्ग का एक ही द्वार॥

सातों वचन निभाएँ मन से बाकी उम्र बची जो शेष।
इसी जन्म में सात पीढ़ियों का सुख पाते रहें विशेष॥

-७१/१, मोहाली ९८१५१७७०५९

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

योग-साधना शिविर (प्रा. स्तर), पृ. १३ का शेष........

हमें यहाँ सामाजिक रूप से भी शिक्षा दी गई तथा व्यवहारिक रूप से भी शिक्षा दी गई तथा व्यवहारिक, बौद्धिक, शारीरिक अर्थात् हमें अपने जिन्दगी को किस प्रकार सुधारना चाहिए यह अनुभव प्राप्त हुआ है। इतनी अच्छी जानकारी देने के लिए आप सभी को धन्यवाद।-**ललिता राठौर, ग्राम व मु.पो. झरना (बाराद्वार), जिला-जांजगीर-चॉम्पा, छत्तीसगढ़**

५. शिविरों का आयोजन पूर्व में अर्जित ज्ञान की पुनरावृत्ति व नये ज्ञान की प्राप्ति के उद्देश्य से किया जाता है। मैंने यहाँ आयोजित होने वाले शिविरों में तीसरी बार भाग लिया। इससे पूर्व सन्ध्या उपासना के मन्त्रों को पढ़कर, उसका स्थूल अर्थ समझकर ही सन्ध्या कर लिया करता था। प्रथम बार अक्टूबर २०११ में शिविर में भाग लिया तो स्वामी जी द्वारा बताये गये उपायों से मन को केन्द्रित करने में काफी सहायता मिली। पुन: जून २०१२ में आ. सत्यजित् जी द्वारा बताई गई ध्यान व जप विधि अत्यन्त लाभकारी रही। इस बार के शिविर का अनुभव कुछ अलग ढंग का रहा। जिस प्रकार सत्यार्थप्रकाश को जितनी बार पढ़ा जाये एक न एक नया अनुभव प्राप्त होता है। इसी भाँति ये शिविर भी अनुभव और ज्ञान में नवीनता भरते हैं। इस शिविर में ज्ञात हुआ कि मेरी आत्मा शरीर से अलग है। स्वामी जी ने जिस विधि से मन को शरीर के एक अंग में टिकाकर वहीं पर ईश्वर की सर्वव्यापकता, सर्वज्ञता, सर्वशक्तिमत्ता तथा न्यायकारिता का अनुभव कराया, वह मेरे लिये एक नया अनुभव था। आ. सोमदेव जी द्वारा योग दर्शन तथा आ. सत्येन्द्र जी द्वारा सांख्य दर्शन के सूत्रों की व्याख्या समयाभाव में भी सुरुचिपूर्ण ढंग से की गई।

स्वा. वेदपति जी ने मौन व आत्मनिरीक्षण में उत्सुकता उत्पन्न कर दी। प्रो. धर्मवीर जी ने बताया कि जब मनुष्य स्वयं को नहीं देख पाता तो ईश्वर को देखने की इच्छा क्यों करता है इसलिए पहले स्वयं को देखने की इच्छा करनी चाहिये। एक व्याख्यान में बताया कि ''मैं'' आया नहीं हूँ, किसी के द्वारा भेजा गया हूँ। इसी प्रकार अन्य नवीन जानकारियाँ सुनने को मिली।

ऋषि उद्यान के ब्रह्मचारियों का व्यवहार व आश्रम की व्यवस्था अत्यन्त सराहनीय रही। इस शिविर की उपयोगिता के बारे में तो इतना ही कहना है कि हर बार के शिविर में एक नया अनुभव व ज्ञान प्राप्त होता है। शिविर का नियमित आयोजन होते रहना चाहिये। **-डॉ. श्याम जी आर्य, आर्यसमाज कुण्डा, प्रतापगढ़, उत्तरप्रदेश**

६. स्वामी दयानन्द के नाम से विख्यात इस पवित्र भूमि पर सातवीं बार पैर रखने का सौभाग्य परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित योग-शिविर (प्राथमिक स्तर) के माध्यम से प्राप्त हुआ। जितनी बार यहाँ आता हूँ, मेरा इस भूमि के प्रति आकर्षण बढ़ता जाता है। हर बार आना यहाँ नया लगता है। प्राचीन ऋषियों की प्रणाली और परम्परा में शिक्षा ग्रहण करते ब्रह्मचारियों को देखकर मेरा मन भी पुकार-पुकार कर कह उठता है- ''फूले ऋषिवर की फुलवारी विद्या मधु का पान करूँ मैं''। ऋषि उद्यान में कदम-कदम पर शिक्षा भरी पड़ी है। यहाँ निवास करने वाले संन्यासी, आचार्य और ब्रह्मचारियों का कुछ भी कार्य करने की अपनी शैली है, जो आधार की शिक्षा से ओत-प्रोत है। यहाँ कार्य करने वाले कर्मचारी चाहे वे यज्ञशाला, कार्यालय, भोजनालय अथवा गोशाला आदि किसी से भी सम्बन्धित हों, लगता है सभी आचार का प्रशिक्षण लिए हुए हैं। यहाँ जिस भावना से आया था, जो लेने आया था, उससे कहीं अधिक ही मिला, मैं उसे संभाल पाऊँ, यही ईश्वर से प्रार्थना है। शिविरार्थी आशा से बहुत अधिक थे। व्यवस्था डेढ़ सौ के लिए की गई थी। शिविरार्थी आये २३०। आश्चर्य यह कि किसी सुविधा में लेशमात्र भी अन्तर न आया। आगे अवश्य ही ऐसी व्यवस्था अपनायी जानी चाहिए कि व्यवस्था से अधिक साधनार्थी एकत्र न हो सकें। इसके लिए शिविरों की संख्या माँग के अनुसार बढ़ाई जा सकती है। सबसे अधिक प्रसन्नता की बात यह देखने में आई कि एक ही परिवार की तीन-तीन पीढ़ियाँ भी शिविर में भाग ले रही थी। युवकों की संख्या भी हमें भविष्य की आशायें दिखा रही थीं। **-श्याम सिंह सहयोगी।**

७. सभी वैदिक धर्म प्रेमी सज्जनों! मेरा यह पहला शिविर था, जो मेरी आशा से कहीं ज्यादा उत्तम एवं व्यवस्थित था, यहाँ आकर ही मुझे पता चला कि नि:स्वार्थ परोपकार किसे कहते हैं। जितने भी शिविरार्थी आये उनके लिए सोने, रहने, खाने-पीने की उत्तम व्यवस्था थी। साथ-साथ शिविर की उत्तम दिनचर्या ने मन को छू लिया। मैं अब यही सोचता हूँ कि मैं पहले क्यूँ नहीं आर्यसमाज से जुड़ा? पहले मैं भी पौराणिक था लेकिन ईश्वर ने बुद्धि में आर्यसमाज के द्वारा प्रकाश किया और अब मैं वैदिक धर्म प्रेमी हूँ।

मैं इस शिविर में मुख्य रूप से वैदिक संध्या और यज्ञ सीखने के लिये आया था, जो मैंने विधिवत् सीखी। मेरा घर परोपकारिणी सभा, अजमेर से १११६ (ग्यारह सौ सोलह) किमी. दूर है, लेकिन यह वैदिक धर्म का ही प्रभाव था कि मैं यहाँ खिंचा चला आया। यहाँ पर, देश-धर्म दोनों के प्रति जो कर्त्तव्य हैं, उनसे हम परिचित होते हैं। आज यह बात बहुत अच्छी तरह समझ में आती है कि हमारे देश की इतनी दुर्गति क्यूँ है? क्योंकि हमने वैदिक शिक्षा से अपना मुख मोड़ लिया और यह शिविर हमें वैदिक धर्म के प्रति जागरुक करता है, आज मैं धर्म को लेकर अपने जीवन को सहज अनुभव कर रहा हूँ, यहाँ जानने को मिला कि हमारा वैदिक धर्म बहुत सरल है। यह शिविर छात्रों एवं अन्य सभी वर्गों को शारीरिक एवं

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

मानसिक उन्नति का मार्ग बताता है। धन्यवाद देता हूँ महर्षि दयानन्द को, जिन्होंने मानव उत्थान के लिए आर्यसमाज की स्थापना की। ईश्वर से प्रार्थना है कि अतिशीघ्र हम सब वैदिक धर्म में पुनः लोटें, हमारी जड़ बुद्धि का नाश हो और इस देश को एक बार पुनः आर्यवर्त बनायें-इन्हीं आकांक्षाओं के साथ विराम। **-महेन्द्र कुमार साहू, शाहजहाँपुर, अकबरपुरा, अम्बेडकर नगर, उत्तरप्रदेश, चलभाष-०८०५२८०१८८४**

८. श्री श्रद्धेय स्वामी जी! ऋषि उद्यान में आयोजित यह शिविर मेरे जीवन का दूसरा शिविर है। पहला शिविर मैंने पुणे के पास एक माथेरान करके स्थान है, वहाँ पर किया था, वह शिविर देखकर मैं बहुत खुश हुई थी, वहाँ का खुला वातावरण, चारों तरफ जंगल, मैं तो शिविर का मतलब भी नहीं समझती थी, उधर मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला, उस समय से मैंने सोच लिया था कि मैं आर्यसमाज के शिविर हमेशा अटेंड करूँगी। लेकिन मैंने सोचा भी नहीं था कि अजमेर का ऋषि उद्यान इतना प्राकृतिक सौन्दर्य से ओत-प्रोत है, यहाँ का सागर स्वच्छ साफ वातावरण और ठंडी-ठंडी हवा ने तो मन को मुग्ध कर दिया, ऐसा लगा कि स्वर्ग, इसी ऋषि उद्यान में जिसके बारे में पहले शास्त्रों में पढ़ा था कि जंगल में ऋषि-मुनि रहते हैं, मैंने आँखों से वह सीन देख लिया, मेरा मन यह स्वर्ग देखकर इतना भाव-विभोर हो रहा है कि मेरे पास शब्द ही नहीं है इसे व्यक्त करने के लिए, वह आनन्द तो अहसास ही कर सकती हूँ, स्वामी विष्वङ् जी ने कक्षाएँ ली, उससे बहुत कुछ सीखने को मिला, अपने जीवन में बहुत विद्वान् देखे हैं लेकिन आपकी वाणी में जो तेज है, वह कहीं देखने को नहीं मिला। आपने इतने अच्छे से समझाया, उदाहरण देकर बार-बार समझाया, आपके समझाने का तरीका बहुत ही सरस और सहज था। सभी स्वामी जी की कक्षायें ज्ञानवर्द्धक लगीं। योग, प्राणायाम और उपासना की जो कक्षायें लगीं उनसे बहुत कुछ सीखा, लेकिन जो आप लोगों ने दिया, हम उतना नहीं ले पाये, इसका हमें बहुत दुःख है। यह हमारे अज्ञानता का कारण हम पूरी तरह से मौन का पालन भी नहीं कर पाये, इसमें दूसरों का दोष भी नहीं बता सकते, क्योंकि हमारे अन्दर संकल्प शक्ति की कमी रही, लेकिन जो कमियाँ इस बार हुई हैं, यदि ईश्वर ने फिर कभी मौका दिया तो ये गलतियाँ न दोहराई जाएगीं। यह संकल्प लेकर जा रही हूँ।

यहाँ के ब्रह्मचारी बहुत मेहनती और सेवाभावी हैं, उनकी सेवा को देखकर बार-बार हृदय से उनको धन्यवाद देती हूँ। कहने को तो बहुत कुछ है, लेकिन पेज छोटे पड़ जायेंगे, जिन्हें मैं व्यक्त नहीं कर सकती। **-श्रीमती शीला भोंडेले, होशंगाबाद।**

९. शिविर अच्छा रहा, शिविर में मौन रहने का अभ्यास हुआ एवं मौन द्वारा क्या-क्या लाभ हैं, उनसे अवगत हुए। मैं घर जाकर भी मौन रहने का अभ्यास समय-समय पर करता रहूँगा। घर से दूर, घर जैसा वातावरण व स्नेह मिला मुझे आभास हुआ कि वास्तव में स्वर्ग है तो ऋषि उद्यान ही है। यहाँ पर सुबह जल्दी उठना और प्रत्येक कार्य दिनचर्या से करना, हमको अपने जीवन में भी इसी तरह कार्य करने की प्रेरणा मिली। इसी तरह से हमें आर्य विचारधारा को आगे से आगे बढ़ाने की प्रेरणा मिली व करनी चाहिए। **-नरपतसिंह आर्य, धोराढ़ल भीनमाल, जनपद जालौर।**

१०. सर्वप्रथम, सफलतम योग-साधना शिविर के लिए संयोजक, ऋषि उद्यान के समस्त प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोगी जनों का हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। पूर्व में २००६-०७ में किये गये योग-साधना शिविर के बाद, इस जून २०१३ के शिविर में अत्यधिक नवीनताएँ थीं। डॉ. धर्मवीर जी के अद्भुत् प्रवचन, स्वामी विष्वङ् जी महाराज का अद्भुत् नेतृत्व, आचार्य सोमदेव जी, आचार्य सत्येन्द्र जी की पाठ्यकला और अन्तःवासियों की अहर्निश सेवा-कार्य अद्भुत था, जो अवर्णनीय है। दिनांक १५.०६.२०१३ को ऊहापोह की स्थिति में साधना-शिविर के लिए प्रस्थान किया क्योंकि दो वर्ष पहले अचानक गम्भीर अस्वस्थ होने के कारण परिवारी जनों को अत्यधिक चिन्ता थी कि कहीं कोई परेशानी न हो।

मौन व आत्मनिरीक्षण में, मैं स्वामी वेदपति जी से इतना प्रभावित हुआ कि पूर्ण मौन का पालन कर सका और जिस तरह की स्मृति में नयापन आया, मैं भाव-विभोर हूँ। क्योंकि पूर्व की स्मृतियाँ धुँधली पड़ने लगी थीं। आचार्य सत्यजित् जी के प्रवचनों का अवश्य अभाव सा रहा। शेष आचार्यों के ज्ञान का भी लाभ न मिल सका, शायद, मेरा दुर्भाग्य ही रहा। शिविर आत्मिक ज्ञान को पूर्ण करने वाला रहा। ज्ञान-कर्म-उपासना का आनन्दपूर्वक रसपान हुआ। परमात्मा मुझपर सदा ऐसी कृपा बनाये रखे और मैं पुनः-पुनः सबके लिए कृतज्ञता ज्ञापित करता रहूँ। अन्त में यही कहूँगा कि प्रभु की कृपा और स्नेह सब पर बना रहे। **-नरेन्द्र 'मनहर', धर्मशास्त्राचार्य, आचार्य संस्कृत विद्यालय, नारनौल, हरियाणा, चलभाष-०९४६०१०३६१५**

११. इस शिविर में आने से मुझे अवर्णनीय लाभ प्राप्त हुआ। मौनव्रत धारण के कारण मैंने प्रतिदिन दृढ़-संकल्प किया कि मेरे द्वारा जो ४ दोष हैं, उनकी पुनरावृत्ति कभी भी नहीं होगी, प्रातःकाल अतिशीघ्र उठने का अभ्यास भी मैं निरन्तर जारी रखूँगा। और विशेष रूप से करूँगा और स्वाध्याय भी नियमित करूँगा। मेरा जीवन और अधिक पवित्र, सात्विक बनेगा और अपने दोषों के संस्कार ठीक करूँगा। २० वर्ष और साधना करूँगा और बहुत अच्छे संस्कार लेकर पुनः मानव-जीवन में आऊँगा और अगले जन्म में मोक्ष प्राप्त करूँगा। हर योग-शिविर में आने का पूरा प्रयास करूँगा।

-शिवकुमार चौधरी, 'वेद श्रुति', ८० ए मनीषपुरी, इन्दौर

शेष अगले अंक में ....

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

पुस्तक-परिचय

नाम-ब्रह्मचर्य दु:ख निवारक दिव्यमणि, **लेखक**-स्वामी रामस्वरूप योगाचार्य, **मूल्य**-१०० रुपये, **पृष्ठ**-१७३, **प्रकाशक**-वेद मंदिर प्रकाशन टीका लेहसर, पोल बाजार, पोल कैम्प, जिला-कांगड़ा १७६०५२, (हि.प्र.)

वेद ने ईश्वर उपसना में मुख्य उपदेश ब्रह्मचर्य धारण करना ही कहा है। प्राचीनकाल में बालक-बालिकाएँ उपनयन संस्कार एवं वेदारम्भ संस्कार के लिए गुरु के पास जाते थे तब आचार्य अथर्ववेद मन्त्र १/३५/१ के अनुसार सर्वप्रथम ब्रह्मचर्य धारण करने की शिक्षा देते थे इस कारण बालक-बालिका हृष्टपुष्ट शक्तिशाली, मेधावी होते थे। आज के भौतिकवाद के युग में सिनेमा, टी.वी., फैशन, भौंडा पहनावा, अश्लील संगीत, सहशिक्षा के कारण मानसिकता का रूप आये दिन अखबारों के मुखपृष्ठ पर उनके कार्यकलाप अंकित होते हैं। शिक्षाविद् भी सैक्स की शिक्षा विद्यालयों में देना चाहते हैं। बालक-बालिकाओं का भविष्य किस ओर इंगित होगा? समय ही बता पायेगा।

इस युग में बालक-बालिका के लिए स्वामी जी द्वारा लिखित पुस्तक अत्यन्त उपयोगी होगी। स्वामी जी ने वेदमन्त्रों, उपनिषद्, महाभारत वनपर्व, मनुस्मृति आदि से ब्रह्मचर्य के गुणों व लाभों से अवगत कराया है। आपने पुस्तिका में २२ विषयों को स्थान दिया है। उनमें शिक्षक ब्रह्मचारी हों, ब्रह्मचर्य, कुसङ्ग से बचें, ब्रह्मचर्य रूपी मणि, ब्रह्मचर्य तप एवं ब्रह्म जिज्ञासा, ब्रह्मचर्य के लाभ और राम, कृष्ण, हनुमान, भीष्म के ब्रह्मचर्य पर उल्लेख किया है।

सबके लिए ब्रह्मचर्य धारण करने की ही आवश्यकता है। यजु. १/१८/ 'तपसां तप्पध्वम्' यजु. १८/३०/योगशास्त्र में पांच यमों में ब्रह्मचर्य भी एक है। ऋग्वेद मन्त्र ३/१७/३ एवं ३/३२/५ में मनुष्य के जीवन में नियमित एवं सात्विक भोजन अत्यधिक महत्व रखता है। ब्रह्मचर्य-पालन और धर्माचरण करने वाला ३०० वर्ष से भी अधिक निरोगी रह सकता है।

स्वामी जी का अथक प्रयास है कि युवा वर्ग अपने कर्त्तव्य पथ की ओर जागृत हो एवं जीवन को पथ भ्रष्ट नहीं करें और न ही आलोचना का बिन्दु बनें। आर्यावर्त की मर्यादा को रखते हुए कार्य करें। कठोर ब्रह्मचर्य व्रत धारण करके ही सम्पूर्ण विद्याओं का ज्ञान प्राप्त होता है।

पुस्तक माता-पिता, बालक-बालिका हर वर्ग की आयु के लिए उपयोगी है। ज्ञान की अजस्रधारा में डुबकी लगाने से ज्ञान चक्षु ज्योतिर्मय होते हैं। जीवन को उत्तम बनाने के लिए प्रेरणादायी है। ब्रह्मचर्य दु:ख निवारक दिव्यमणि को अवश्य अङ्गीकार करें। पुस्तक की सामग्री आकर्षणीय है। भाषा सरस है। आशा है सभी इसे आत्मसात करेंगे। स्वामी जी की उत्कृष्ट भावनाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा, साधुवाद।

-देवमुनि, ऋषि उद्यान, अजमेर।

कम सोवें-दीर्घायू होवें

कई अध्ययनों से पता चला है कि रात में ६ से ७ घण्टे सोने वाले लोग दीर्घायू होते हैं पर हाल ही में विशेषज्ञ डैनियल ब्राउन ने बताया कि जो लोग रात में नींद की अवधि ८ घंटे से घटाकर ७ घण्टे कर देते हैं वे ना केवल ज्यादा सक्रिय रहते हैं और ज्यादा सजग रहते हैं वरन् उन्हें प्रति सप्ताह ७ घण्टे अतिरिक्त मिलते हैं जिसमें वे अपना शौक पूरा कर खुद को खुश रख सकते हैं। डैनियल ने इसी विषय पर ''एनर्जी इक्वेशन'' नाम की किताब भी लिखी है। वे लोगों को अपने व्यस्त कामकाज के बीच नाते रिश्तेदारों से मिलने का समय निकालना सिखाते हैं। वे लोगों को दिमाग को शांत रखना और खुशहाली बढ़ाने के तरीके भी सिखाते हैं तथा जिंदगी का लुत्फ उठाने के लिए समय निकालना बताते हैं। **सौजन्य-राष्ट्रदूत, दिनाँक : २०.०१.२०१३**

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१. २० से २७ अक्टूबर-**योग-साधना शिविर प्राथमिक स्तर**, सम्पर्क : ०१४५-२४६०१६४

२. २४ नवम्बर से १ दिसम्बर तक **ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर,** सम्पर्क : ०९४१४००३७५६, समय : मध्याह्न १.३० से २.३० बजे।

३. ऋषि मेला ८, ९, १० नवम्बर, २०१३।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

संस्था-समाचार

-१६ से ३० जून २०१३

१. योग-साधना शिविर (प्राथमिक स्तर)-दिनाङ्क १६ से २३ जून २०१३ तक पूर्णकालिक मौन आवासीय शिविर का आयोजन सफलता पूर्वक हुआ, जिसमें पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, महाराष्ट्र और राजस्थान इत्यादि विभिन्न प्रान्तों से शिविरार्थियों ने सुयोग्य आचार्यों द्वारा प्रस्तुत किए विषयों को समझने का प्रयत्न किया और लिखित परीक्षाएँ भी दीं। परीक्षा में ८० प्रतिशत से अधिक अङ्क प्राप्त ३ शिविरार्थियों का उच्च प्रथम श्रेणी व ६० से ८० प्रतिशत अङ्क प्राप्त १५ शिविरार्थियों को प्रथम श्रेणी और अन्यों को शिविर में भाग लेने के प्रमाण पत्र दिए गए। शिविरार्थियों ने शिविर की सुन्दर व्यवस्था के लिए परोपकारिणी सभा के अधिकारियों, आचार्यों, ब्रह्मचारियों और कर्मचारियों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। आगामी योग-साधना शिविर (प्राथमिक स्तर) दिनाङ्क २० से २७ अक्टूबर को आयोजित किया जावेगा।

२. उत्तराखण्ड बाढ़ पीड़ितों को सहायता-महर्षि द्वारा परोपकारिणी सभा को स्थापित करने के तीसरे लक्ष्य अर्थात् ''आर्यावर्तीय और दीन मनुष्यों को संरक्षण और पोषण'' को ध्यान में रखते हुए उत्तराखण्ड में बाढ़ से हुई त्रासदी से पीड़ित लोगों की सहायतार्थ परोपकारिणी सभा के माध्यम से आचार्य कर्मवीर जी के नेतृत्व में ऋषि उद्यान, गुरुकुल के स्नातकों का दल दिनाङ्क २५ जून को खाद्य सामग्री के साथ बस द्वारा ऋषिकेश के लिए रवाना हुआ। पीड़ितों को सहायता देते हुए दल वहाँ से, बाढ़ से ग्रस्त रुद्रप्रयाग के मंदाकिनी नदी के किनारे बसे रामपुर गाँव में पहुँचे। वहाँ गाँव से सरपंच से सम्पर्क कर सरकारी सहायता से शून्य, पास के आठ गाँवों के १०० परिवारों की सूची बनाकर, उनको खाद्य सामग्री की व्यवस्था कराई। प्रत्येक परिवार के लिए १० किलो आटा, ५ किलो चावल, १ किलो दाल, १ किलो चीनी, नमक, चाय, बिस्कुट इत्यादि खाद्य पदार्थों द्वारा सहायता प्रदान की। अभी दल की गुप्त काशी में निरीक्षण कर सहायता प्रदान करके केदारनाथ की तरफ बढ़ने की योजना है।

३. डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम-

(क) सम्पन्न कार्यक्रम-**१.** १६ को आर्यप्रतिनिधि सभा, राजस्थान की बैठक में भाग लिया, **२.** १६-२३ जून योग-साधना शिविर, ऋषि उद्यान में प्रवचन **३.** २३ को ब्रह्मप्रकाश जी बंसल, लुधियाना के जन्म-दिवस पर प्रवचन, **४.** २७ से ३० जून आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, नर्मदापुरम्, होशंगाबाद, म.प्र., ''आर्यसमाज की यज्ञ-पद्धति'' विषयक गोष्ठी में भाग लिया।

(ख) आगामी कार्यक्रम-**१.** ६ जुलाई-डोंगरा आर्यसमाज, रेवाड़ी, हरियाणा के उत्सव में प्रवचन, **२.** ७ जुलाई को डॉ. रामनाथ जी वेदालङ्कार की पुण्य स्मृति में गीता आश्रम, वेद मन्दिर, हरिद्वार में भाग लेंगे। **३.** १२-१४ जुलाई-औरंगाबाद, महाराष्ट्र के आर्यसमाज में प्रवचन, **४.** २६-२८ जुलाई-बैंगलौर में प्रवचन के कार्यक्रम।

४. आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रम-**१.** १६ से २३ जून योग-साधना शिविर, ऋषि उद्यान में, **२.** २७ से ३० जून आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, नर्मदापुरम होशंगाबाद, म.प्र. में आयोजित ''आर्यसमाज की यज्ञ-पद्धति'' विषयक गोष्ठी में भाग लिया।

५. आचार्य सानन्द जी के जून मास का प्रचार कार्यक्रम-**१.** सुभाष नगर आर्यसमाज, देहरादून में शोकसभा में व्याख्यान, **२.** द्रोण स्थली-कन्या गुरुकुल, देहरादून के वार्षिकोत्सव में व्याख्यान, **३.** ६ से १२ जून गाँव कादेड़ा में मदन जी आर्य के माध्यम से नित्य प्रात: ध्यान, प्रवचन, यज्ञोपरान्त प्रवचन और रात्रिकालीन ग्राम सभा में विविध विषयों पर प्रवचन, **४.** १३ से १५ जून-बेनाड़, जयपुर में प्रात:, सायं, रात्रि तीन सत्रों में व्याख्यान, **५.** २३ से ३० जून-अजमेर रोड़ स्थित बगरु में सप्त दिवसीय पूर्ण आवासीय योग-शिविर में मुख्य ध्यान-योग शिक्षक के रूप में आपने संचालन किया।

६. यज्ञ एवं प्रवचन-जैसा कि विदित है ऋषि उद्यान आर्यजगत् के उन स्थानों में से है जहाँ पूरे वर्ष दोनों समय अपरिहार्य रूप से यज्ञ प्रवचन का कार्यक्रम होता है। प्रात:काल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा पूर्व निर्धारित मन्त्र का महर्षि दयानन्द कृत भाष्य का स्वाध्याय किया जाता है।

प्रात: प्रवचन क्रम में स्वामी विष्वङ् जी ने बताया कि जब तक व्यक्ति पूर्ण विवेक-वैराग्य की स्थिति में नहीं पहुँच जाता, तब तक उसे ध्यान-उपासना, स्वाध्याय, विद्वानों का संग और शुभ विचार इत्यादि क्रियाकलापों द्वारा सतत् अपने को ऊर्जावान् बनाते रहना चाहिये। कर्मफल व्यवस्था पर व्याख्यान देते हुए आपने बताया कि जीवन में भोगे जा रहे सारे सुख-दु:ख केवल अपने ही कर्मों के फल न होकर दूसरों के द्वारा अन्याय से भी दिए जाते हैं। ऋग्वेद के ''यो जागार: तमृच: कामयन्ते'' मन्त्र की व्याख्या में बताया कि ऋचाऐं जो-जो कहती हैं, जागरुक व्यक्ति को वह सब प्राप्त होता है। और जागरुक रहने के लिए लक्ष्य को सामने रखने का अभ्यास करना होता है।

रविवासरीय प्रवचन में ''याद्दाश्त् को स्थिर कैसे किया जा सकता है'' इस विषय पर स्वामी विष्वङ् जी ने बताया कि उम्र के बढ़ने पर याद्दाश्त् का घटना भ्रामक विचार है बल्कि

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

आयु के साथ याद्दाश्त् बढ़ती है लेकिन कार्यक्षेत्र अधिक हो जाने, कार्य के प्रति रुचि, श्रद्धा, लगाव के कम होने और उपयोगिता को न समझने से व्यक्ति भूलता है। माननीय डॉ. धर्मवीर जी ने बताया कि किसी कार्य के बदले में कुछ माँगना सौदा होता है, व्यापार होता है, सेवा नहीं किन्तु जैसे मैं विवश हूँ अपने दु:ख दूर करने को वैसे ही समाज के दु:ख दूर करने को जब मैं विवश होता हूँ, तब यह सेवा बन जाती है और यह सेवा रूपी धर्म वैकल्पिक या एच्छिक व्यवस्था का नाम नहीं किन्तु यह अनिवार्य व्यवस्था है।

मुमुक्षु मुनि जी ने ''कोई मुनाफा कर न पाए सांसों के व्यापार से'' नामक कविता के माध्यम से अपने प्रवचन को समेटते हुए बताया कि ईश्वर द्वारा प्रदत्त मनुष्य जीवन, आयु और भोगों को परमेश्वर प्राप्ति रूपी लक्ष्य को समर्पित करना चाहिये।

बलेश्वर मुनि जी ने बताया कि कोई उपलब्धि होने पर अधिकारी व्यक्ति को ''मैंने ऐसा किया'' कहने की बजाए ''मेरे लोगों ने ऐसा किया'' या ''हमनें ऐसा किया'' इत्यादि वाक्यों का प्रयोग, संगठन की भावना को बनाए रखता है।

सायंकालीन ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के ''नौविमानादि-विद्याविषय'' में आचार्य श्री सोमदेव जी ने बताया कि एक समय ऐसा आया जब धर्म के ठेकेदारों ने समुद्र पार कर व्यापारादि व्यवहारों को धर्मभ्रष्ट होना बताया लेकिन आपने ऋग्वेद के मन्त्र के माध्यम से खण्डन करते हुए प्रस्तुत किया कि सभी राजपुरुष और व्यापारी लोग सब व्यवहारों की सिद्धि हेतु बड़ी, लम्बी-चौड़ी, दृढ़, नौकाओं से समुद्र पार गमनागमन करके सब एश्वर्यों की यथावत् सिद्धि करें।

जयपुर में आचार्य सनत् कुमार जी से ऐतरेय ब्राह्मण का अध्ययन कर चुके भ्राता श्री देवप्रकाश जी के ऋषि-उद्यान आगमन पर, आपने ''यथा ब्रह्माण्डे तथा पिण्डे'' की व्याख्या में बताया कि जिस प्रकार हम शरीर को विकृती से बचाने के लिए भोजन रूपी आहुति देते हैं, इसी प्रकार पृथिवी, जलादि देवताओं को अग्निहोत्र द्वारा आहुति देके ही विकृति से बचाया जा सकता है।

वरिष्ठ ब्रह्मचारी श्री वामदेव जी और श्री कश्यप जी के देववाणी संस्कृत भाषा में प्रवचन हुए। भ्राता वामदेव जी ने न्याय दर्शन के आधार पर शरीर, मन और वाणी से किए जाने वाले १० प्रकार के शुभ-अशुभ कर्मों की चर्चा की और भ्राता कश्यप जी ने व्याकरण की उपयोगिता को रखते हुए संस्कृत में गीतिका प्रस्तुत की। भ्राता सत्यव्रत जी ने स्वास्थ्य के विषय में प्रवचन देते हुए, बुद्धि को बढ़ाने के उपायों यथा प्रात: जागरण, ईश्वरोपासना, आसन, प्राणायाम इत्यादि बताए।

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक खाता संख्या - 091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक खाता संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

कैसे बचें-लगातार बैठे रहने की समस्या से

ऑफिसों में काम करने वाले जो लोग कुर्सी से चिपक जाते हैं उन्हें कई बार अपनी टांगे स्ट्रैच करनी चाहिए। शोधकर्ताओं ने ऐसे लोगों को स्ट्रैचिंग की याद दिलाने के लिए एक खास सिटिंग पैड बनाया है और अगर व्यक्ति लम्बे समय तक सीट से नहीं हिलता है तो पैड से बीप की आवाज आने लगती है और अगर आवाज बंद करने के लिए खड़े होकर व्यक्ति दोबारा बैठ जाए तो बीप की आवाज दोबारा आने लगती है। इस प्रकार व्यक्ति को उठकर थोड़ी देर तक चलना ही पड़ता है। क्वीन्सलैण्ड युनिवर्सिटी की टीम ने कहा कि यह उपकरण लोगों को गंभीर बीमार पड़ने से बचाता है। पूर्व के कई अध्ययनों से पता चला है कि लम्बे समय तक बैठे रहने से कई समस्याएँ हो सकती हैं और आयू भी कम हो जाती है, इससे हृदय रोग व डायबिटीज़ की समस्या बढ़ जाती है।

-सौजन्य : समाचार-पत्र से साभार, दिनाँक-१३.१२.२०१२

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

आर्यजगत् के समाचार

१. योग-ध्यान-साधना शिविर सूचना-सुप्रसिद्ध आनन्द धाम आश्रम, गढ़ी, उधमपुर (जम्मू काश्मीर) का शरद्-कालीन योग-ध्यान-साधना शिविर २२ से २९ सितम्बर-२०१३ तक आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निर्देशक, पूज्यपाद महात्मा चैतन्यमुनि जी के सान्निध्य में आयोजित किया जाएगा, शिविर में सामवेद पारायण-यज्ञ के अतिरिक्त दर्शन-ग्रन्थों के पठन-पाठन एवं शंका-समाधान और भजनों, प्रवचनों आदि का कार्यक्रम भी रहेगा, शिविर पूर्णत: नि:शुल्क होगा इसलिए अपना स्थान यथा समय आरक्षित करने के लिए कृपया शीघ्र सम्पर्क करें। **-भारतभूषण आनन्द आश्रम, प्रधान, चलभाष-०९४१९१०७७८८**

२. चैरिटेबल ट्रस्ट मोगा में चरित्र-निर्माण शिविर सम्पन्न-९ से १६ जून तक पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी एवं यतिमां सत्यप्रियाजी मोगा (पंजाब) में पी मार्का सरसों के तेल के सुप्रसिद्ध उद्योग द्वारा संस्थापित श्री देवीदास केवल कृष्ण चैरिटेबल ट्रस्ट में अपनी ज्ञानगंगा प्रवाहित करते रहे। इस बार उपरोक्त तिथियों में १५० कन्याओं का चरित्र-निर्माण शिविर बहुत ही सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। कन्याओं को मुख्य चिकित्सा अधिकारी, सहायक जिलाधीश, सीनियर पुलिस सुपरिंटैण्ड, पण्डित सुनील शास्त्री, बहिन इन्दुपुरी, श्री सत्यप्रकाश उप्पल, डॉ. कोछड़ आदि अनेक महानुभावों ने भी सम्बोधित किया। इस अवसर पर 'विजय-याग' भी किया गया।

३. तम्बाकू-सेवन निषेध दिवस पर संकल्प पत्र भरे-जयपुर: ३१.०५.२०१३। सीनियर सिटीजन फोरम मानसरोवर के प्रांगण में मासान्त होने वाले वैदिक विधि यज्ञ के पश्चात् उपस्थित समुदाय ने तम्बाकू-सेवन निषेध संकल्प पत्र में प्रतिबद्धता दर्शाई।

४. अनिष्ट की आशंकाएँ निर्मूल करते हैं वैदिक-यज्ञ-८ जून को शनि-अमावस्या पर्व पर धर्मानुरागी जनता में जहाँ दानपुण्य की होड़ थी, तो प्रबुद्ध लोगों में वैदिक विधि से यज्ञायोजनों में रुचि। ऐसा ही यज्ञ सीनियर सिटीजन फोरम के अध्यक्ष के.एम. रामनानी ने मानसरोवर के डे केयर सेन्टर भवन में रचाया। यज्ञ के मुख्य यजमान लोटस डेयरी ग्रुप के चेयरमैन डी.डी. वर्मा रहे। बड़ी संख्या में महिला-पुरुषों ने उपस्थित होकर आहुतियाँ अर्पित कीं।

५. प्रोफेसर डॉ. (श्रीमती) शशिप्रभा कुमार-संक्षिप्त कार्यवृत्त-प्रोफेसर डॉ. शशिप्रभा कुमार सम्प्रति विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में अध्यक्षा एवं दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली की उपाध्यक्षा हैं। गत चार दशकों से संस्कृत एवं भारतीय दर्शन के क्षेत्र में अध्यापनरत डॉ. शशिप्रभा सौ से अधिक शोधपत्रों एवं बाईस से अधिक ग्रन्थों की लेखिका-सम्पादिका हैं। वैशेषिक दर्शन डॉ. शशिप्रभा की मुख्य कृति व विशिष्ट रूचि का क्षेत्र है-आपने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की प्रमुख शोध परियोजना के अन्तर्गत बृहत् वैशेषिक कोश तैयार किया है जो शीघ्र प्रकाश्य है। वैशैषिक दर्शन पर आङ्ग्ल भाषा में आपकी एक कृति Classical Vaisesika: On knowing and what is to be know. इसी वर्ष के आरम्भ में ब्रिटेन के प्रतिष्ठित प्रकाशन से प्रकाशित हुई है। आप भारतीय परम्परा में निष्णात, विख्यात वैदिक विदुषी हैं।

श्री रामकृष्ण संस्कृत सम्मान (वर्ल्ड एजूकेशन फाउण्डेशन, कनाडा), शंकर पुरस्कार (के.के. बिरला फाउण्डेशन, नई दिल्ली) संस्कृत साहित्य सेवा सम्मान (दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली) के अतिरिक्त अन्य अनेक पुरस्कारों से सम्मानित।

इसके अतिरिक्त आप अनेक अन्य संस्थाओं एवं विविध गतिविधियों के माध्यम से संस्कृत एवं भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में संलग्न रहतीं हैं। **सम्पर्क-'अभ्युदय', २९५/१५-अ, नोएड़ा, उ.प्र., चलभाष-९८११११९२५६१**

६. संभागीय संस्कृत एवं शिविर का समापन-आर्यसमाज मन्दसौर में दिनांक १० से १६ जून २०१३ तक संस्कृत एवं संस्कार प्रशिक्षण शिविर डॉ. सोमदेव शास्त्री के आचार्यत्व में रखा गया। शिविर में मन्दसौर, पीपल्या, नीमच, इन्दौर तथा कई आर्यसमाजों से ५५ सदस्यों ने प्रशिक्षण लिया। शिविर में प्रतिदिन प्रात: ५ से ७ बजे तक योग आसन, ८ से ९ तक ब्रह्म एवं देवयज्ञ पश्चात् १० से ०५ बजे तक बौद्धिक ज्ञान में संस्कृत भाषा, संस्कार, वेद, उपनिषद तथा महर्षि दयानन्द के जीवन का डॉ. सोमदेव शास्त्री ने अध्यापन कराया।

७. आर्यसमाज रामां मण्डी, जिला बठिण्डा, पंजाब-एस.एस.एन. आर्य हाई स्कूल रामा व आदर्श कन्या आर्य स्कूल रामां के संस्थापक व संचालक सम्माननीय महाशय निहालचन्द जी आर्य की बरसी प्रात: हवन यज्ञ द्वारा श्रद्धापूर्वक मनाई गई। पुरोहित दीनानाथ जी ने यज्ञ वेदी पर विराजमान महाशय जी के सुपौत्र श्री विजय कुमार जी, श्री देवराज जी, श्री विश्वबन्धु जी आर्य को वैदिक मन्त्रों द्वारा आहुतियाँ डलवाईं।

८. जिला आर्य उप-प्रतिनिधि सभा, भरतपुर ने सत्तरहवाँ वार्षिक उत्सव विश्व शांति यज्ञ एवं वेद महोत्सव के रूप में दिनांक ५ से ८ जून २०१३ तक सामुदायिक भवन एस.टी.सी. हाउसिंग बोर्ड में हीरासिंह आर्य प्रधान एवं गिर्राज

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

प्रसाद शर्मा मन्त्री के दिशा निर्देशन में मनाया गया।

९. बाढ़ विभीषिका से त्रस्त जनों हेतु शान्ति यज्ञ-सहारनपुर। **आर्यसमाज सरदार पटेल मार्ग, उत्तराखण्ड** में उत्तराखण्ड तथा अन्य प्रदेशों में आयी बाढ़ आपदा में मारे गये लोगों की आत्मिक शान्ति हेतु वृहद् शान्ति-यज्ञ का आयोजन किया गया। पं. सोमदत्त आर्य एवं पुरोहित सुरेन्द्र चौहान ने सामूहिक प्रार्थना-उपासना के मन्त्रों का गान कराकर, स्वस्तिवाचन के मन्त्रों का पाठ किया। तत्पश्चात् विशेष यज्ञ किया गया जिसमें बाढ़-आपदा में मृत लोगों की आत्मिक शान्ति हेतु मन्त्र-शांतिकरणम् से आहुतियां दी गयीं।

१०. आर्यसमाज नोएड़ा-आर्यवीर क्रान्तिकारी पं. रामप्रसाद 'बिस्मिल' के जन्मदिवस के उपलक्ष में आर्यसमाज नोडड़ा के तत्त्वावधान में ११ जून २०१३ को सायं क्रान्तिकारी एवं राष्ट्रभक्ति भरे गीतों का कार्यक्रम 'बिस्मिल सभागार' में आयोजित किया गया। आर्यसमाज नोएड़ा कई वर्षों से 'बिस्मिल' के जन्मदिवस एवं शहीदी दिवस पर कार्यक्रम आयोजित कर शहीदों को नमन करता आ रहा है। कार्यक्रम का आरम्भ आचार्य डॉ. जयेन्द्र जी द्वारा संध्या वंदन एवं कैप्टन अशोक गुलाटी द्वारा 'बिस्मिल' की प्रसिद्ध रचना 'वह शक्ति हमें दो दयानिधे कर्त्तव्य मार्ग पर डट जाएं' का पाठ किया गया।

११. आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद द्वारा ११ जनवरी से १५ अप्रैल २०१३ तक की प्रचार यात्रा-गुरुकुल हरिपुर, ओड़िशा, आर्यसमाज कोरबा, ऋषि उद्यान, अजमेर, मुगलसराय, उ.प्र., ग्राम-लसाड़ी (बिहार), पोरबन्दर आर्यसमाज, जूनागढ़ (गुज.) आदि में वैदिक धर्म का प्रचार किया।

आवश्यकता

१२. आर्य शिशु मंदिर, चोपन-सोनभ, उ.प्र. (प्राथमिक पाठशाला) को कुशल वक्ता एवं बच्चों में वैदिक संस्कार डालने में निपुण, अनुभवी एवं सेवाभावी प्रधानाध्यापिका (महिला) की आवश्यकता है। कन्या गुरुकुल से स्नातक एवं बी.एड. को वरियता, सुविधायुक्त आवास एवं सामंजस्यानुसार वेतन। **संपर्क-शंभूप्रसाद आर्य, चलभाष-४१५८७४२५७ ईमेल-sparya.cpu@gmail.com**

१३. श्रीमद्दयानन्द आर्ष गुरुकुल खेड़ा-खुर्द दिल्ली-८२ में कक्षा ५वीं से लेकर १२वीं तक की कक्षाओं को गणित, विज्ञान और अंग्रेजी पढ़ाने हेतु योग्य एवं गुरुकुलीय वातावरण में रहने के इच्छुक अध्यापकों की आवश्यकता है। सुविधा-वेतन के साथ भोजन, दूध, वस्त्र आदि। इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क करें। **-आचार्य सुधांशु, ९३५०५३८९५२**

वैवाहिकी

१४. सुन्दर, सजीला, निर्व्यसनी, यूनिवर्सिटी लैक्चरर, अलीगढ़ में कार्यरत २९ वर्षीय ५'-१०'' वार्षिक आय-आठ लाख (समस्त स्रोतों से) आर्य (पंजाबी-खुखराइन) युवक हेतु, आर्य परिवार की सुशीला, सुसंस्कृत एवं संस्कारवती कन्या पक्ष के प्रस्ताव आमंत्रित हैं। **सम्पर्क-के.सी. संभरवाल, चलभाष-९४५६८०४६६६**

चुनाव-समाचार

१५. आर्यसमाज शिवाजी नगर, गुड़गाँव, हरियाणा के चुनावों में प्रभुदयाल चुटानी को सर्वसम्मति से प्रधान चुना गया एवं **संरक्षक**-कन्हैयालाल आर्य, **मन्त्री**-विरेन्द्र सेतिया, **कोषाध्यक्ष**-महेन्द्र प्रताप आर्य, **विद्यालय प्रबन्धक**-अंजनि कुमार असीजा को चुना गया।

१६. आर्यसमाज रामनगर, गुड़गाँव, हरियाणा के वार्षिक चुनाव में **प्रधान**-ओमप्रकाश चुटानी, **मन्त्री**-राधा कृष्ण सोलंकी, **कोषाध्यक्ष**-ईश्वर लाल कुमार को चुना गया।

१७. आर्यसमाज वेदमन्दिर, राजाजीपुरम्, लखनऊ, उत्तरप्रदेश में २०१३-१४ के लिए कार्यकारिणी के गठन में **प्रधान**-डॉ. आनन्द बरनवाल, **मन्त्री**-निरंजन सिंह व **कोषाध्यक्ष**-श्री राजीव बतरा, सर्वसम्मति से निर्विरोध निर्वाचित हुए।

१८. आर्यसमाज ग्रीन पार्क, नई दिल्ली के चुनाव मे **प्रधान**-स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती, **मन्त्री**-वीरेन्द्र अरोड़ा, **कोषाध्यक्ष**-प्रेमप्रकाश जी सब्बरवाल को सर्वसम्मति से चुना गया।

शोक-समाचार

१९. आर्यसमाज सिलीगुड़ी के संस्थापक सदस्य श्री रतिराम शर्मा जी की धर्मपत्नी **श्रीमती गिन्नी देवी शर्मा** का ८५ वर्ष की आयु में २८ जून २०१३ का सिलीगुड़ी में निधन हो गया। सिलीगुड़ी तथा इसके आसपास के क्षेत्र में आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में श्रीमती गिन्नी देवी शर्मा ने सर्वदा अपने पति का आगे बढ़कर साथ दिया। सिलीगुड़ी में महिला आर्यसमाज आरम्भ करने में उनका अविस्मरणीय योगदान रहा। उनमें संगठन की अपूर्व शक्ति थी।

श्री राजकुमार शर्मा, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, श्री विजय कुमार शर्मा एवं श्री अरुण कुमार शर्मा, उनके चार पुत्र और श्रीमती राजबाला, श्रीमती सत्यबाला, श्रीमती भाती एवं श्रीमती यशी, उनकी चार पुत्रियाँ-अपने-अपने स्थानों से सपरिवार माता जी से प्राप्त ज्ञान और संस्कारों को आगे बढ़ाने का कार्य कर रहे हैं।

परोपकारिणी सभा ईश्वर से प्रार्थना करती है कि श्रीमती गिन्नी देवी शर्मा के परिवार को धैर्य एवं सहनशीलता प्रदान करें।

मनुष्यों को योग्य है कि शरीर, मन, वाणी और धन से परमेश्वर की उपासना आदि लक्षणयुक्त यज्ञ का निरन्तर अनुष्ठान करके असंख्यात अतुल पुष्टि को प्राप्त करें।-**महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद भावार्थ-४.२६।**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

आर जे/ए जे/80/2013-2014 तक प्रेषण : १५ जुलाई, २०१३ RNI. NO. ३९५९/५९

परोपकारिणी सभा के कोषाध्यक्ष श्री सुभाष नवाल जी के पिता श्री मथुरा प्रसाद नवाल जी के ८४ वें जन्मदिवस पर परिवार सहित चित्र।

आवरण : MITTAL 9829797513

प्रेषकः
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
(राजस्थान) - ३०५००१